नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

वर्ष 03, अंक 264, नई दिल्ली, रविवार 30 नवम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

आज का सुविचार

ज़िंदगी में कभी भी अपने किसी भी हुनर पर घमंड मत करना, क्योंकि... पत्थर जब पानी में गिरता है तो, अपने ही वज़न से

02 आप भी अपने जीवन को खुशियों से भर सकते

06 खेलों में भारतीय बेटियों का खुशनुमा दौर: जब बेटियाँ बनीं देश का गौरव

08 बीबी कौलां जी चैरिटेबल अस्पताल का 21वां वार्षिक समारोह

सह-अस्तित्व पर हमला: पशु प्रेमियों ने सुप्रीम कोर्ट के पुनर्वास आदेश की निंदा की

नवदीप सिंह

आज दिल्ली - एनसीआर में डॉग लवर ने चीफ जस्टिस को सभी पोस्ट ऑफिसों से भारी संख्या में पत्र भेजें लगभग 2 लाख से ऊपर लोगों ने सुप्रीम कोर्ट को डॉग को लेकर जो फैसला दिया गया था उसे वापस लेने के लिए लिखा

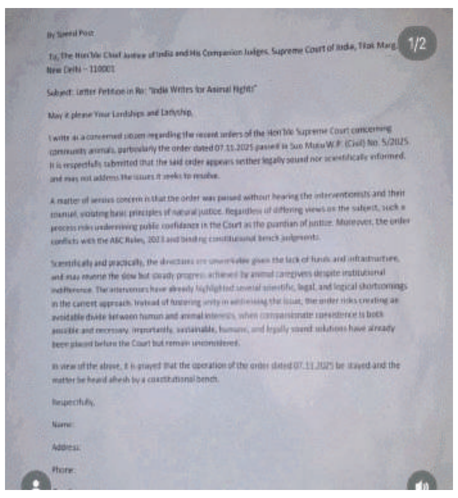
By Speed Post
To, The Hon'ble Chief Justice of India and His Companion Judges, Supreme Court of India, Tilak Marg, New Delhi – 110001
Subject: Letter Petition in Re: "India Writes for Animal Rights"
May it please Your Lordships and Ladyship,
Respectfully,
Name:
Address:
Phone:

नई दिल्ली, भारत - देश भर के पशु प्रेमी और कल्याण समर्थक, सार्वजनिक संपत्तियों से कुत्तों और अन्य आवारा जानवरों के पुनर्वास के संबंध में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के हालिया आदेश की कड़ी निंदा करते हुए एकजुटता से खड़े हैं। इस फैसले को ₹गलत, असंवैधानिक और पक्षपातपूर्ण₹ बताते हुए, कार्यकर्ता इस फैसले के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं, जिसे वे सह-अस्तित्व के सिद्धांत पर एक बुनियादी हमला मानते हैं - करुणा का एक मूल सिद्धांत जो एक मानवीय समाज की पहचान है।

इस आदेश में स्कूलों, अस्पतालों और परिवहन केंद्रों जैसे सार्वजनिक स्थानों से आवारा पशुओं को हटाने और नसबंदी के बाद उन्हें आश्रय स्थलों में बंद करने का निर्देश दिया गया है, जिस पर लोगों ने गहरा सदमा और आक्रोश व्यक्त किया है। हमारा मानना है कि यह निर्देश जीवित प्राणियों के प्रति करुणा के संवैधानिक आदेश और पशु जन्म नियंत्रण (एबीसी) नियमों के स्थापित, विज्ञान-समर्थित दृष्टिकोण की अवहेलना करता है। यह व्यवस्था की विफलता है, पशुओं की नहीं आंदोलन का मानना है कि मानव-पशु संघर्ष का मूल कारण पशु नहीं, बल्कि शासन और कार्यान्वयन की प्रणालीगत विफलता है।

सार्वजनिक धन का दुरुपयोग: पशु जन्म नियंत्रण (एबीसी) नियम, 2023, प्रभावी, दीर्घकालिक कुत्ता जनसंख्या प्रबंधन और रेबीज नियंत्रण के लिए 'पकड़ो-नसबंदी करो-टीका लगाओ-वापस करो' नीति को अनिवार्य बनाते हैं। हमारा तर्क है कि इन महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के लिए आवंटित धन का घोर दुरुपयोग किया गया है और भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गया है।

भ्रष्टाचार का घोर दुरुपयोग और दुरुपयोग हो रहा है। प्रभावी नसबंदी और टीकाकरण अभियानों का अभाव - नीति ही नहीं - इस समस्या को और गंभीर बना रहा है। सार्वजनिक स्वच्छता और कचरे का उचित प्रबंधन करने में सरकार की विफलता, जो आवारा पशुओं को आकर्षित करती है, भी एक महत्वपूर्ण कारक है जिसकी पूरी तरह से अनदेखी की गई है।

गढ़े हुए तथ्य और अनसुनी दलीलें: हम न्यायालय में प्रस्तुत तथ्यात्मक आधार का पुरज़ोर विरोध करते हैं और तर्क देते हैं कि प्रदान की गई जानकारी एक कठोर, अदूरदर्शी उपाय को उचित ठहराने के लिए गढ़ी गई थी। महत्वपूर्ण बात यह है कि न्यायाधीशों की पीठ, कुछ सुनवाइयों में, पशु कार्यकर्ताओं और कल्याण संगठनों द्वारा प्रस्तुत व्यापक दलीलों और वैज्ञानिक आंकड़ों पर पर्याप्त रूप से सुनवाई करने में विफल रही। उचित प्रक्रिया और ज़मीनी स्तर पर काम करने वालों के दृष्टिकोण पर विचार न करने की यह कमी एक गहरी लोकतांत्रिक कमी है।

"हम ऐसा देश नहीं चाहते जहाँ जानवर हमारे लिए रहें; हम ऐसा देश चाहते हैं जहाँ वे हमारे साथ रहें। यह आदेश क्रूरता की ओर एक कदम पीछे है, जो पशु जन्म नियंत्रण के सिद्ध, मानवीय सिद्धांतों पर अस्थायी मानवीय सुविधा को प्राथमिकता देता है।"

भू-राजनीतिक और विधायी दबाव की छाया? तात्कालिक संकट से परे, कार्यकर्ता परेशान करने वाले विधायी और भू-राजनीतिक संकेतकों की ओर इशारा करते हैं जो एक व्यापक और ज़्यादा भयावह एजेंडे की ओर इशारा करते हैं। इस आदेश का समय और स्वरूप जानवरों के वस्तुकरण की ओर संभावित बदलाव की चिंताएँ बढ़ाता है, और यह आशंका 2023 के पशुधन और पशुधन उत्पाद विधेयक के मसौदे से और भी बढ़ जाती है। हालाँकि जन आक्रोश के बाद इस विधेयक को वापस ले लिया गया था, लेकिन इसमें विवादास्पद रूप से कुत्तों और बिल्लियों को 'पशुधन' के रूप में वर्गीकृत किया गया था, जो आयात और निर्यात के लिए विनियमन के अधीन थे।

इसके अलावा, हम व्यापार और भू-राजनीतिक संबंधों पर बढ़ते ज़ोर को देख रहे हैं, खासकर चीन जैसे देशों के साथ, जिनके पशु कल्याण के प्रति सांस्कृतिक और कानूनी दृष्टिकोण बिल्कुल अलग हैं। हम आगाह करते हैं कि यह नई व्यवस्था एक ऐसी नीतिगत प्रवृत्ति का संकेत हो सकती है जो साथी और सामुदायिक पशुओं को संवेदनशील प्राणी नहीं, बल्कि केवल वस्तु या सार्वजनिक उपद्रव के रूप में देखती है।

मानवीय न्याय के लिए एक आह्वान हम, भारत के पशु प्रेमियों की सामूहिक आवाज़, इस अत्याचार की निंदा करते हैं और इसे अपने सबसे बेज़ुबान नागरिकों की रक्षा करने में लोकतंत्र की घोर विफलता मानते हैं। जबरन स्थानांतरण से समस्या का समाधान नहीं होगा; इससे केवल विस्थापन होगा, जिससे तनाव, क्षेत्रीय आक्रामकता और रेबीज़ के प्रकोप का खतरा बढ़ेगा, जैसा कि वैश्विक स्तर पर वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चला है।

हमारी मांग स्पष्ट है: हमें बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं और पशु जन्म नियंत्रण नियम, 2023 का सख्त, ईमानदार कार्यान्वयन चाहिए, साथ ही धन के दुरुपयोग के लिए कठोर दंड भी चाहिए।

हम पीछे हटने वाले नहीं हैं। माननीय सर्वोच्च न्यायालय को हज़ारों पत्र भेजे जा रहे हैं, जिनमें उनसे आग्रह किया गया है कि वे इस मामले की समीक्षा करें, जाँच करें और एक ऐसा मानवीय आदेश पारित करें जो हमारे संविधान में निहित सह-अस्तित्व और करुणा की भावना को बनाए रखे।

हम बेजुबानों की आवाज हैं और हमारी एकजुटता नहीं टूटेगी।

नए चीफ जस्टिस सूर्यकांत जी ने तो एसआईआर का विरोध करने वालों की धज्जियां उड़ा दी

परिवहन विशेष न्यूज

एसआईआर पर सवाल उठाने वालों पर सुप्रीम कोर्ट ने ही सवाल उठा दिए हैं. बिहार का जिक्र करते हुए सीजेआई ने कहा, बिहार में हमने अजीब बात देखी, लाखों लोगों के वोट कटने के दावे किए गए, लेकिन एक आदमी ने भी इसे चुनौती नहीं दी. यह नहीं कहा कि उसका वोट गलत तरीके से कट गया है।

एसआईआर देशभर में कराना सही या गलत, इस पर सुनवाई चल रही थी. विपक्ष की ओर से कपलि सिब्बल समेत कई सीनियर वकील दलीलें पेश कर रहे थे. दावे कर रहे थे क लािखों लोगों के नाम बाहर कएि जा रहे हैं. एक साजशि के तहत खास लोगों के नाम काटे जा रहे हैं. लेकिन तभी चीफ जस्टसि ऑफ इंडिया (सीजेआई) सूर्यकांत ने ऐसा सवाल पूछ दयिा कसिब्बिल को जवाब देते नहीं बना. सीजेआई ने कहा, बिहार में दावे कएि गए थे क लािखों लोगों के नाम काटे जा रहे हैं. हम भी डर गए थे क कहिीं सच में तो ऐसा नहीं हो रहा. इसलिए हमने पैरालीगल वॉलंटियर्स भेजे, लेकिन वहां तो एक भी आदमी नहीं आया. कसिी ने नहीं कहा क उिसका नाम गलती से काट दयिा गया है. मतलब जनि लोगों के नाम काटे गए, उनकी या तो मौत हो गई थी, या माइग्रेट करने चले गए थे या फरि डुप्लीकेट वोटर्स थे. इससे हमने अनुमान लगाया क बिहार में काम सही तरीके से कयिा गया।

विपक्ष के तमाम नेताओं और बेंच एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की ओर से सुप्रीम कोर्ट में एसआईआर के खलिाफ कपलि सिब्बल, प्रशांत भूषण समेत दर्जनों दिग्गज वकील लड़ रहे हैं

सुनवाई के दौरान सीजेआई ने पूछा, शुरू में बिहार के बारे में यह इंप्रेशन दिया गया कि लाखों लोगों के नाम हटाए जाने वाले हैं... हमें भी डर था...आखिरकार क्या हुआ?

जस्टिस बागची ने भी यही सवाल पूछा, तमाम दावों के बाद भी नाम हटाए गए, लेकिन हमें जमीनी स्तर पर इसका कोई असर नहीं मिला और किसी एक वोटर ने कोई चुनौती नहीं दी. रिपोर्टिंग से साफ लगा क दिूर दराज के लोगों को भी इसके बारे में पता था.

सुप्रीम कोर्ट ने ये भी कहा, आप तो कहते थे क लिोगों को इसके प्रॉसेस के बारे में पता ही नहीं है, लेकिन बड़े पैमाने पर मीडिया रिपोर्टिंग से पक्का हुआ क दिूर दराज के लोगों को भी इस प्रॉसेस के बारे में पूरी जानकारी थी. सीजेआई ने पूछा, क्या कोई उस प्रोसेस के बारे में कह सकता है कि मुझे पता नहीं था?

बहरहाल विपक्ष के बड़े बड़े वकील कोई ठोस तथ्य नहीं दे पा रहे हैं बस हवा हवाई कुतर्क कर रहे थे जिसे एससी ने उल्टा सवाल पूछकर ध्वस्त कर दिया है.

ज्ञात हो कि चीफ जस्टिस सूर्यकांत धारा 370, पेगासस जैसे मुख्य मुद्दे में निर्णय दे चुके हैं..अब सारा विपक्ष सीजेआई सूर्यकांत 'त्रिपाठी' के ऊपर ब्राह्मणवाद का आरोप लगाकर नई किरांति शुरू कर सकते हैं।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com

आज का सच जो आपको जानना और अपनाना चाहिए

पिंकी कुंडू महासचिव,

कोई आपकी अधिक प्रसंशा कर रहा है,तो प्रसन्न होने से अधिक सावधान रहिए ये पंक्ति मात्र एक चेतावनी नहीं,बल्कि आज के समाज की एक गहरी सत्यता को उजागर करती है.प्रसंशा,जो कभी सच्चे भावों की अभिव्यक्ति होती थी,आज के समय में प्रायः एक साधन बन गई है किसी स्वार्थ को पूरा करने का, या फिर भ्रम फैलाने का आज का संसार में जहाँ हर चीज़ उत्कृष्ट उत्पाद की भांति से जुड़ी है,वहाँ मानवीय भावनाएं भी अब उस व्यापार का अंग बन चुकी हैं!

किसी की प्रसंशा करना अब सत्यता का प्रतीक कम,और एक रणनीति अधिक बन गयी है.विशेषकर जब कोई व्यक्ति बिना कारण के आपकी अधिक से अधिक बखान कर रहा हो,तो यह समझना आवश्यक हो जाता है कि कहीं उसके पीछे कोई उद्देश्य तो नहीं छिपा.वर्तमान समय में प्रेम और संबंध भी उपभोक्ता के उत्पाद की तरह हो गए हैं.जहाँ पहले प्रेम आत्मिक जुड़ाव का प्रतीक था,आज वह भी दिखावे,लाभ और सुविधाओं से जुड़ गया है.प्रेमी-प्रेमिकाओं की पसंद अब चरित्र,सोच या आत्मा के मेल से नहीं,बल्कि "उपयोगिता मूल्य" देखकर तय होती है कौन क्या पहनता है!

कहाँ घूमता है,कितनी आर्थिक स्थिति है,सोशल मीडिया पर कितने फॉलोअर्स हैं आदि.ऐसे संबंधों में प्रेम कम और प्रदर्शन अधिक होता है.यही कारण है कि ये संबंध प्रायः अपरिचित,अवैध और अधूरे रह जाते हैं,, अपरिचित,क्योंकि दोनों व्यक्ति एक-दूसरे के वास्तविक स्वरूप से अनभिज्ञ रहते हैं.अवैध, क्योंकि चेष्टा और निष्ठा के स्थान पर स्वार्थ और छल ने ले ली होती है,अधूरे,क्योंकि इन संबंधों में आत्मिक गहराई के स्थान पर सतही आकर्षण होता है,जो समय के साथ मिट जाता है!

इसलिए आवश्यक है कि जब कोई व्यक्ति अत्यधिक प्रशंसा करे,तो हम अपने आत्म-मूल्य को लेकर सतर्क रहें.न मात्र बाहरी चमक-दमक से मोहित हों, बल्कि यह समझने का प्रयास करें कि सामने वाला व्यक्ति हमारे जीवन में क्या भूमिका निभा रहा है स्थायी साथी या मात्र एक भ्रम ?सच्चा प्रेम और निष्ठायुक्त संबंध कभी बाज़ार की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता.वह तो आत्मा की आँखों से पहचाना जाता है जहाँ दिखावा नहीं, बल्कि गहराई होती है; जहाँ शब्दों से अधिक मौन की समझ होती है,आज के परिवेश में,जहां हर चीज़ बिक रही है,वहाँ सच्चे प्रेम और सच्ची तारीफ़ की पहचान करना एक कला है.इसलिए,खुश होने से पहले सोचें,और जुड़ने से पहले परखें.रिश्तों में गहराई लानी है तो बाज़ार की चकाचौंध से ऊपर उठकर आत्मा से आत्मा का संवाद करना होगा!

पिंकी कुंडू
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ
भाजपा दिल्ली प्रदेश,
सदस्य उज्जवला योजना
भाजपा दिल्ली प्रदेश

स्त्रियों की हथेली में ये 5 निशान होते हैं शुभ

हस्तरेखा के अनुसार हर हथेली में रेखाओं के अलावा कुछ खास निशान भी होते हैं। जिन्हें देखकर भविष्य की अच्छी या बुरी बातों का पता चल जाता है। ये खास आकृति या चिन्ह स्त्रियों और पुरूषों के भविष्य के बारे में अलग-अलग संकेत देते हैं। हस्तरेखा के अनुसार स्त्रियों के हाथों में कुछ खास निशान होते हैं। जिनको देखकर धन लाभ, सुख-संपत्ति और पैसों के बारे में पता किया जा सकता है।

स्त्रियों की हथेली के निशान और उनका फल

1. किसी स्त्री की हथेली में कमल या मछली जैसी आकृति बन रही हो तो उसका जीवन सुख और सुविधाओं से भरा होता है।

2. किसी स्त्री के हाथ में रथ या ध्वजा का निशान बना होता है तो उसका जीवनसाथी बड़ा अधिकारी होता है।

3. जिस स्त्री की दाहिनी हथेली में तराजू और बांई हथेली में हाथी या बैल जैसा निशान बन रहा हो उसका जीवनसाथी बड़ा बिजनेस मेन होता है।

4. स्त्री की हथेली में शंख, चक्र या पद्म का चिन्ह होता है तो उसका पुत्र बड़ा आधिकारी या राजा समान जीवन जीने वाला होता है।

5. जिस स्त्री की हथेली गुलाबी या हल्की लालिमा लिए हो और हाथों में स्वस्तिक का निशान बनता हो तो ऐसी स्त्रियां जहां रहती हैं वहां पैसों की कमी नहीं होती।

6. जिस स्त्री की हथेली के बीच में स्पष्ट त्रिभुज या धनुष जैसा निशान होता है उसको हर तरह का सुख मिलता है और वो भाग्यशाली होती हैं।

साइबर फ्रॉड मुक्त भारत तभी संभव है जब हम सब ज़िम्मेदारी लें

भारत में साइबर धोखाधड़ी के मामले तेज़ी से बढ़ रहे हैं। इसके जवाब में भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (TRAI) ने ऐतिहासिक कदम उठाया है :

1.• 21 लाख+ संदिग्ध मोबाइल नंबरों को ब्लॉक किया

2.• लगभग 1 लाख धोखाधड़ी करने वाली संस्थाओं को ब्लैकलिस्ट किया (सिर्फ एक वर्ष में)

यह एक राष्ट्रीय स्तर की कार्रवाई है, लेकिन इसका असर विशेष रूप से ओडिशा में महत्वपूर्ण है, जहाँ पुलिस जांच में अक्सर सामने आता है:

1.• पहले से सक्रिय किए गए सिम कार्ड

2.• डुप्लीकेट पहचान दस्तावेज़

3.• धोखाधड़ी को बढ़ावा देने वाले म्यूल बैंक खाते

TRAI DND ऐप डाउनलोड करें – अपने और अपने परिवार के लिए

स्टेप बाय स्टेप प्रक्रिया (बेहतर कॉल हाइजीन):

1. गूगल प्ले स्टोर / एप्पल ऐप स्टोर पर जाएँ

2. "TRAI DND 3.0" सर्च करें

3. ऐप डाउनलोड और इंस्टॉल करें

4. अपने मोबाइल नंबर से रजिस्टर करें

5. स्पैम कॉल, एसएमएस और संदिग्ध गतिविधि तुरंत रिपोर्ट करें

6. शिकायत की स्थिति ट्रैक करें और सुनिश्चित करें कि कार्रवाई हो

यह आपका वन स्टॉप टूल है, नेटवर्क स्तर पर धोखाधड़ी से लड़ने के लिए।

नागरिकों के लिए स्पष्ट परामर्श:- प्राधिकरण हर नागरिक से इन सावधानियों का पालन करने का आग्रह करता है:

1.• संदिग्ध कॉल/नंबर रिपोर्ट करें – TRAI DND और संचार साथी पोर्टल पर

2.• याद रखें: फोन पर नंबर ब्लॉक करने से वह नेटवर्क स्तर पर बंद नहीं होता

3.• अपना सिम कार्ड कभी साझा न करें और न ही किसी को अपने नाम से रजिस्टर्ड नंबर इस्तेमाल करने दें

4.• बैंक खाते किराए पर न दें या न बेचें – इन्हें अक्सर धोखाधड़ी में इस्तेमाल किया जाता है

5.• ऐसी योजनाओं से बचें जो नए खाते खोलने पर पैसे देने का लालच देती हैं

एक कदम, सबके लिए सुरक्षा:- हर नागरिक की सतर्कता भारत की डिजिटल सुरक्षा को मज़बूत करती है।

1.• ओडिशा पुलिस और TRAI मिलकर धोखाधड़ी नेटवर्क को तोड़ रहे हैं।

2.• आपकी भागीदारी सुनिश्चित करती है कि धोखेबाज़ों की ज़मीन खिसक जाए।

साइबर फ्रॉड मुक्त भारत तभी संभव है जब हम सब ज़िम्मेदारी लें।

आज ही TRAI DND ऐप डाउनलोड करें और अपने परिवार को सुरक्षित बनाएँ।

मनुष्य के सुखद जीवन के लिए मस्तिष्क में सत्यता, चेहरे पर प्रसन्नता तथा हृदय में पवित्रता जरूरी हैं।

कष्ट और दुःख मनुष्य के जीवन में शिक्षा देने वाले दो सबसे श्रेष्ठ गुण होते हैं। किसी को बहस या बातों से जीतने के बजाय मौन रह कर ही पराजित किया जा सकता है। जैसे जैसे किसी व्यक्ति में समझदारी आने लगती है, वह दिखावा करना छोड़ता चला जाता है। जिस व्यक्ति का विश्वास ईश्वर पर हर परिस्थिति में बना रहता है, ईश्वर भी उस व्यक्ति का विश्वास किसी भी परिस्थिति में टूटने नहीं देता। समय के साथ-साथ स्वभाव में भी बदलाव करते रहना चाहिए तब जिंदगी आसानी से कट जाती है। कभी किसी से इतना भी मोह न करें कि उसकी समस्त बुराईयां छिप जाएं, और किसी से इतनी भी घृणा न करें कि उसकी कोई भी अच्छाई दिखाई न दें। ध्यान रहे कि जो लोग हमें पसंद नहीं आते अंततः वही लोग हमें बहुत गहरी/सही सीख देकर जाते हैं।

भारत के महान वैज्ञानिक और रेडियो विज्ञान के जनक डॉ. जगदीश चन्द्र बोस जी की जयंती पर कोटि-कोटि नमन।आपके अद्भुत शोधों ने भारत को वैश्विक विज्ञान जगत में नई पहचान दिलाई और वायरलेस संचार से लेकर वनस्पति विज्ञान तक नई दिशाएँ प्रदान कीं। आपकी वैज्ञानिक दृष्टि, समर्पण और ज्ञान आज भी नई पीढ़ियों को नवाचार और शोध के लिए प्रेरित करते हैं।

मोरबी, गुजरात का एक छोटा-सा शहर, भारत के भूभाग का 1% से भी कम है, लेकिन यह बनाता है

1. भारत के 90% से अधिक वॉल और फ्लोर टाइल्स
२. भारत की 80% घड़ियाँ।
३. देश में बिकने वाले 70% खिलौने और कैलकुलेटर।

एक छोटा भारतीय शहर वैश्विक दिग्गजों को मात दे रहा है और यह सब शुरू हुआ एक टूटी हुई पाइप से!

1. 1980 के दशक में, स्थानीय कुम्हारों ने बाथरूम फिटिंग जैसी सिरेमिक चीज़ें बनाना शुरू किया।
२. फिर आईं टाइल्स।
३. फिर घड़ियाँ।
4. २००5 तक, मोरबी चुपचाप भारत की सिरेमिक राजधानी बन चुका था।

1. न कोई सरकारी ग्रांट
२. न कोई विदेशी निवेशक३. सिर्फ़ गुजराती जुगाड़

बिज़नेस मॉडल ज़बरदस्त है

1. कोई तामझाम नहीं
२. स्थानीय पारिवारिक इकाइयाँ
३. न कोई MBA, सिर्फ़ मुनाफ़ा
4. डिज़ाइन २4 घंटे में कॉपी हो जाते हैं
5. फैक्ट्रियाँ २4x7, साल भर चलती हैं

मोरबी ब्रांडिंग की चिंता नहीं करता वो सिर्फ़ तेजी से बनाता है, सस्ता बेचता है और हर जगह भेजता है।

मोरबी की ताक़त देखिए:

1. भारत हर साल 15,000 करोड़ से अधिक की टाइल्स निर्यात करता है।
२. 1२5 से अधिक देश मोरबी से आयात करते हैं।।
३. यहाँ तक कि इटालियन और स्पेनिश ब्रांड्स भी अपनी टाइल्स मोरबी की फैक्ट्रियों से बनवाते हैं, हाँ, वो विश्वप्रसिद्ध इटालियन टाइल्स अक्सर गुजरात में बनती हैं और चौंकाने वाली बात ये है: मोरबी की टाइल फैक्ट्रियाँ इतनी घनी हैं कि आप ३0 मिनट में २00 फैक्ट्रियों से होकर निकल सकते हैं। ये किसी खुले औद्योगिक कॉम्प्लेक्स की तरह है, न कोई गेट, न सूट-बूट, सिर्फ़ धधकती भट्टियाँ और सिरेमिक की धूल।

राज़ क्या है? मोरबी ने तीन चीज़ों में महारत हासिल की:

1. क्लस्टर एडवांटेज– सभी सप्लायर, मज़दूर और ट्रांसपोर्ट २0 किमी के अंदर
२. स्पीड– डिज़ाइन से डिस्पैच तक, सिर्फ़ 7२ घंटे
३. कॉस्ट कंट्रोल– साझा इंफ्रास्ट्रक्चर, जिससे कीमतें चीन से भी कम

नतीजा?

1. शोर किए बिना वैश्विक प्रभुत्व।
२. खिलौनों की क्रांति भी एक संयोग से शुरू हुई।
३. छोटे पैमाने के निर्माता चीनी कैलकुलेटर और खिलौनों की नकल करने लगे।
4. जल्द ही वे सिर्फ़ नकल नहीं, बल्कि नवाचार करने लगे।
5. आज मोरबी 1,500 करोड़ मूल्य के खिलौने और लर्निंग डिवाइसेज़ हर साल निर्यात करता है।

लेकिन सब कुछ आसान नहीं है:

1. बिजली की किल्लत
२. प्रदूषण
३. नियमों का दबाव

फिर भी यहाँ के व्यापारी हर बार खुद को ढाल लेते हैं:

1. गैस आधारित भट्टियाँ
२. सोलर पैनल
३. ऑटोमेशन में निवेश

क्योंकि मोरबी का इंजन कभी नहीं रुकता।

सीख क्या है?:- आपको साम्राज्य बनाने के लिए सिलिकॉन वैली की ज़रूरत नहीं। आपको चाहिए:

1. एक स्थानीय क्लस्टर
२. पागलपन जैसी महत्त्वाकांक्षा
३. निर्दयी निष्पादन

मोरबी साबित करता है कि भारत के छोटे शहर भी चुपचाप वैश्विक व्यापार का चेहरा बदल सकते हैं।

1. अगर मोरबी एक लिस्टेड कंपनी होता, तो इसका वार्षिक उत्पादन मूल्य होता 50,000 करोड़ से अधिक।
२. यह भारत की अधिकांश मिड-कैप कंपनियों से अधिक है।और
३. भारत के अधिकांश लोग इसके बारे में जानते तक नहीं।

मोरबी सिर्फ़ एक शहर नहीं,
ये एक केस स्टडी है कि भारत के टियर-२ शहर क्या बन सकते हैं।

परिवहन विशेष
www.newsparivahan.com

आईए कुछ नई दवाओं के नाम याद रखते हैं

पिंकी कुंडू
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली प्रदेश
सदस्य उज्जवला योजना भाजपा दिल्ली प्रदेश

1. जल्दी सोना और जल्दी उठना दवा है।
2. ऊँ का जाप दवा है।
3. योग प्राणायाम ध्यान और व्यायाम दवा है।
4. सुबह-शाम टहलना भी दवा है।
5. उपवास सभी बीमारियों की दवा है।
6. सूर्य-प्रकाश भी दवा है।
7. मटके का पानी पीना भी दवा है।
8. ताली बजाना भी दवा है।
9. भोजन को खूब चबाना भी दवा है।
10. भोजन की तरह चबाकर पानी पीना और भोजन पानी की तरह ग्रहण करना भी दवा है।
11. भोजन ग्रहण करने के पश्चात वज्रासन में बैठना दवा है।
12. खुश रहने का निर्णय भी दवा है।
13. कभी-कभी मौन भी दवा है।
14. हंसी-मजाक दवा है।
15. संतोष भी दवा है।
16. मन की शांति व स्वस्थ शरीर भी दवा है।
17. ईमानदारी व सकारात्मकता दवा है।
18. निस्वार्थ प्रेम-भावना भी दवा है।
19. सबका भला (परोपकार) करना भी दवा है।
20. ऐसा कुछ करना जिससे किसी की दुआ मिले, वह दवा है।
21. सबके साथ मिलजुल कर रहना दवा है।
22. परिवार के साथ खाना-पीना और घुलना-मिलना भी दवा है।
23. आपका हर सच्चा और अच्छा मित्र भी बिना पैसे के पूरा मेडिकल स्टोर ही है।
24. मस्त रहें, व्यस्त रहें, स्वस्थ रहें और प्रसन्न चित्त रहें, यह भी दवा है।
25. हर नए दिन का भरपूर आनंद लेना भी दवा है।
26. और अन्त में... किसी को प्रसादी के रूप में यह संदेश भेजकर श्रेष्ठ कार्य करने का सुख भी दवा है।

प्रकृति की 'महानता' को समझना व उसके प्रति कृतज्ञता का भाव भी दवा है।

ये सभी औषधियां बिल्कुल निःशुल्क आपके पास है, आपको उपलब्ध हैं।

लौकी, तुलसी और पुदीना, हार्ट अटैक का घरेलू इलाज

पिंकी कुंडू
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली प्रदेश
सदस्य उज्जवला योजना भाजपा दिल्ली प्रदेश

भारत में 3000 साल पहले एक बहुत बड़े ऋषि हुये थे। नाम था महाऋषि वागवट जी उन्होंने एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम है, अष्टांग हृदयम Astang hrudayam इस पुस्तक में उन्होंने बीमारियों को ठीक करने के लिए 7000 सूत्र लिखें थे। यह उनमें से ही एक सूत्र है।

वागवट जी लिखते हैं कि कभी भी हृदय को घात हो रहा है मतलब दिल की नलियों मे blockage होना शुरू हो रहा है तो इसका मतलब है कि रक्त blood में acidity अम्लता बढ़ी हुई है अम्लता आप समझते हैं, जिसको अँग्रेजी में कहते हैं acidity।

अम्लता दो तरह की होती है एक होती है पेट की अम्लता और एक होती है रक्त blood की अम्लता

आपके पेट में अम्लता जब बढ़ती है तो आप कहेंगे पेट में जलन सी हो रही है, खट्टी खट्टी डकार आ रही हैं , मुंह से पानी निकल रहा है और अगर ये अम्लता acidity और बढ़ जाये तो hyperacidity होगी और यही पेट की अम्लता बढ़ते-बढ़ते जब रक्त में आती है तो रक्त अम्लता blood acidity होती है और जब blood में acidity बढ़ती है तो ये अम्लीय रक्त blood दिल की नलियों में से निकल नहीं पाती और नलियों में blockage कर देता है तभी heart attack होता है इसके बिना heart attack नहीं होता। यह आयुर्वेद का सबसे बढ़ा सच है जिसको कोई डाक्टर आपको बताता नहीं क्योंकि इसका इलाज सबसे सरल है !

इलाज क्या है ?:- वागवट जी लिखते हैं कि जब रक्त (blood) में अम्लता (acidity) बढ़ गई है तो आप ऐसी चीजों का उपयोग करो जो क्षारीय हैं आप जानते हैं दो तरह की चीजें होती हैं अम्लीय और क्षारीय ! acidic and alkaline अब अम्ल और क्षार को मिला दो तो क्या होता है ? acid and alkaline को मिला दो तो क्या होता है ? neutral होता है सब जानते हैं।

वागवट जी लिखते हैं कि रक्त की अम्लता बढ़ी हुई है तो क्षारीय (alkaline) चीजें खाओ ! तो रक्त की अम्लता (acidity) neutral हो जाएगी ! और रक्त में अम्लता neutral हो गई ! तो heart attack की जिंदगी मे कभी संभावना ही नहीं !

ये है सारी कहानी ! अब आप पूछेंगे कि ऐसी कौन सी चीजें हैं जो क्षारीय हैं और हम खायें ?:- आपके रसोई घर में ऐसी बहुत सी चीजें है जो क्षारीय हैं जिन्हें आप खायें तो कभी heart attack न आए और अगर आ गया है तो दुबारा न आए यह हम सब जानते हैं कि सबसे ज्यादा क्षारीय चीज क्या हैं और सब घर मे आसानी से उपलब्ध रहती हैं, तो वह है

लौकी जिसे दुधी भी कहते लौकी जिसे दुधी भी कहते हैं English में इसे कहते हैं bottle gourd जिसे आप सब्जी के रूप में खाते हैं ! इससे ज्यादा कोई क्षारीय चीज ही नहीं है ! तो आप रोज लौकी का रस निकाल-निकाल कर पियो या कच्ची लौकी खायो।

वागवट जी कहते हैं रक्त की अम्लता कम करने की सबसे ज्यादा ताकत लौकी में ही है तो आप लौकी के रस का सेवन करें,

कितना सेवन करें ?:- रोज 200 से 300 मिलीग्राम पियो

कब पिये ?:- सुबह खाली पेट (toilet जाने के बाद) पी सकते हैं या नाश्ते के आधे घंटे के बाद पी सकते हैं।

इस लौकी के रस को आप और ज्यादा क्षारीय बना सकते हैं इसमें 7 से 10 पत्ते तुलसी के डाल लो तुलसी बहुत क्षारीय है इसके साथ आप पुदीने के 7 से 10 पत्ते मिला सकते हैं पुदीना भी बहुत क्षारीय है इसके साथ आप काला नमक या सेंधा नमक जरूर डाले ये भी बहुत क्षारीय है लेकिन याद रखें नमक काला या सेंधा ही डाले वो दूसरा आयोडीन युक्त नमक कभी न डाले ये आओडीन युक्त नमक अम्लीय है तो आप इस लौकी के जूस का सेवन जरूर करें 2 से 3 महीने की अवधि में आपकी सारी heart की blockage को ठीक कर देगा 21 वें दिन ही आपको बहुत ज्यादा असर दिखना शुरू हो जाएगा कोई आपरेशन की आपको जरूरत नहीं पड़ेगी।

घर में ही हमारे भारत के आयुर्वेद से इसका इलाज हो जाएगा और आपका अनमोल शरीर और लाखों रुपए आपरेशन के बच जाएँगे।

आर्थराइटिस राहत के लिए सबसे महत्वपूर्ण विटामिन

विटामिन D — जोड़ों और हड्डियों के लिए सबसे ज़रूरी विटामिन माना जाता है।

विटामिन D क्यों ज़रूरी है

1. कैल्शियम अवशोषण बढ़ाता है → हड्डियाँ व कार्टिलेज मजबूत
2. इम्यून सिस्टम को नियंत्रित कर सूजन कम करता है
3. इसकी कमी से ओस्टियोआर्थराइटिस और रूमेटॉइड आर्थराइटिस का जोखिम बढ़ता है

सहायक विटामिन

1. विटामिन C कोलाजन बनाने के लिए आवश्यक — यही कार्टिलेज की मुख्य संरचना है। कार्टिलेज का टूटना कम करता है, जोड़ों की मरम्मत में मदद
2. विटामिन K2 कैल्शियम को सही जगह — हड्डियों में पहुँचाता है। कैल्शियम को धमनियों या जोड़ों में जमा होने से रोकता है। विटामिन D के साथ मिलकर हड्डियाँ मज़बूत बनाता है

ये तीनों कैसे साथ काम करते हैं

1. विटामिन D कैल्शियम को अवशोषित कराता है
2. विटामिन K2 कैल्शियम को हड्डियों तक पहुँचाता है
3. विटामिन C कार्टिलेज और संयोजी ऊतक बनाता है

इनका संयोजन हड्डियों को मजबूत, कार्टिलेज को सुरक्षित और सूजन को कम करता है।

कैसे लें

विटामिन D: किसी फैट वाली भोजन के साथ

विटामिन C: किसी भी समय

विटामिन K2: विटामिन D के साथ, फैट वाले भोजन में

संभावित लाभ

1. जकड़न कम
2. चलने-फिरने में आसानी
3. सूजन में राहत
4. हड्डियों और कार्टिलेज की मजबूती
5. मांसपेशी शक्ति और ऊर्जा में सुधार

लगातार 3–4 सप्ताह लेने से फर्क महसूस हो सकता है।

क्या है Cellulose?

Cellulose एक प्राकृतिक फाइबर है जो पौधों की कोशिका दीवारों में पाया जाता है। यह हमारे पाचन तंत्र के लिए बेहद फायदेमंद होता है क्योंकि यह डाइटरी फाइबर का मुख्य स्रोत है।

Cellulose के फायदे

1. पाचन बेहतर करता है — आंतों को साफ रखता है और कब्ज से राहत देता है।
2. वज़न घटाने में मदद — पेट भरा हुआ महसूस कराता है, जिससे ओवरईटिंग कम होती है।
3. ब्लड शुगर कंट्रोल — शुगर के अवशोषण को धीमा करता है।
4. कोलेस्ट्रॉल कम करने में सहायक — हृदय को हेल्दी रखता है।
5. गट हेल्थ सुधारता है — अच्छे बैक्टीरिया को बढ़ावा देता है।

Cellulose कहाँ मिलता है ?

1. सेब
2. ब्रोकली
3. गाजर
4. कॉर्न
5. हरी सब्जियाँ
6. अनाज

याद रखें:- Cellulose खाना जरूरी है, लेकिन यह पचता नहीं है—यही इसकी खासियत है ! यह शरीर को साफ रखकर हेल्थ को बेहतर बनाता है

केले के पत्ते खाने के फायदे

1. केले के पत्तों में मौजूद क्लोरोफिल त्वचा रोगों और आंतों के अल्सर को रोकता है।
2. खून साफ करता है.
3. भूख बढ़ाता है और भोजन के पाचन में मदद करता है।
4. त्वचा के लिए कई लाभ प्रदान करता है।
5. पेट की श्लेष्मा परत को आराम पहुंचाता है और अल्सर का इलाज करता है।
6. गुर्दे की पथरी और मूत्राशय से संबंधित अन्य बीमारियों का इलाज करता है।
7. प्रतिरक्षा प्रणाली में सुधार करता है.

हाथों से खाना:- पाँचों अंगुलियों के अग्रभाग जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि और जल तत्वों से युक्त हैं। जब आप खाने वाले भोजन का गोला उठाते हैं और उसे अपनी जीभ पर रखते हैं, तो यह जीभ की संवेदी कोशिकाओं को उत्तेजित करता है। पाँचों अंगुलियों द्वारा निगले जाने से पहले ही भोजन का रूपांतरण हो चुका होता है और परिणामस्वरूप जीभ की संवेदी कोशिकाएँ लार स्रावित करने के लिए उत्तेजित होती हैं। इससे अपेक्षा से बेहतर पाचन क्रिया शुरू हो गई, तथा आमाशय और अग्न्याशय अपने-अपने रसों का स्राव करने लगे।

रासायनिक मुक्त:- चूँकि प्लेटों को साबुन और पानी से धोया जाता है, इसलिए साबुन में मौजूद रसायनों के अंश प्लेटों पर रह सकते हैं, जिससे आपका खाना दूषित हो सकता है। केले के पत्तों को बस थोड़े से पानी से धोना होता है, उन्हें साबुन से धोने की ज़रूरत नहीं होती, इसलिए आपका खाना रासायनिक मुक्त हो जाएगा।

ठंडा चावल खतरनाक क्यों है ?

ठंडे चावल खतरनाक हो सकते हैं क्योंकि उनमें बैसिलस सेरियस नामक बैक्टीरिया पनप सकता है, जो फ़ूड पॉइज़निंग का कारण बन सकता है। पके हुए चावल को कमरे के तापमान पर छोड़ने पर, चावल में मौजूद बीजाणु अंकुरित होकर बढ़ सकते हैं और विषाक्त पदार्थ पैदा कर सकते हैं। चावल को दोबारा गर्म करने से ये विषाक्त पदार्थ नष्ट नहीं हो सकते, जिससे उल्टी, दस्त और पेट में ऐंठन जैसे लक्षण हो सकते हैं। जोखिम को कम करने के लिए, पके हुए चावल को तुरंत फ्रिज में रखना और एक दिन के भीतर खा लेना सबसे अच्छा है, या अगर इसे बहुत देर तक बाहर रखा गया हो तो फेंक दें।

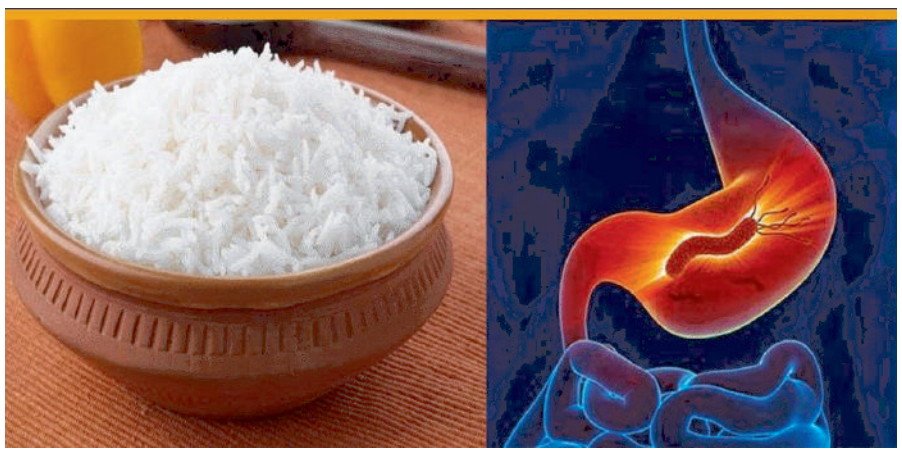

दोबारा गर्म करके चावल खाने के खतरे:- अगर चावल को ठीक से गर्म न किया जाए, तो उसे दोबारा गर्म करना खतरनाक हो सकता है। कच्चे चावल में बैसिलस सेरेस नामक बैक्टीरिया के बीजाणु हो सकते हैं, जो भोजन विषाक्तता का कारण बन सकता है। पके हुए चावल को कमरे के तापमान पर छोड़ने पर, ये बीजाणु अंकुरित होकर गुणा कर सकते हैं और विषाक्त पदार्थ उत्पन्न कर सकते हैं। चावल को दोबारा गर्म करने से ये विषाक्त पदार्थ नष्ट नहीं हो सकते, जिससे फ़ूड पॉइज़निंग हो सकती है। इसके लक्षणों में उल्टी, दस्त और पेट में ऐंठन शामिल हो सकते हैं। जोखिम को कम करने के लिए, यह सबसे अच्छा है:

1. पके हुए चावल को जल्दी से ठंडा करें और एक घंटे के भीतर फ्रिज में रख दें।
2. इसे फ्रिज में एक दिन से अधिक न रखें।
3. चावल को कम से कम 165°F (74°C) के तापमान पर गर्म करें।
4. एक या दो दिन बाद दोबारा गर्म किए गए चावल को फेंक दें।
5. चावल को ताज़ा पकाकर या ठंडा करके, बिना दोबारा गर्म किए खाना अक्सर अधिक सुरक्षित होता है।

चावल को दोबारा गर्म करने के लिए सुरक्षित तापमान:- चावल को सुरक्षित रूप से दोबारा गर्म करने के लिए, इसे कम से कम 165°F (74°C) के आंतरिक तापमान तक गर्म करना ज़रूरी है। यह तापमान सुनिश्चित करता है कि चावल में मौजूद सभी हानिकारक बैक्टीरिया नष्ट हो जाएँ, जिससे इसे खाना सुरक्षित हो जाता है। ध्यान रखने योग्य कुछ मुख्य दिशानिर्देश इस प्रकार हैं:

1. पुनः गर्म करने का तापमान: पके हुए चावल को पुनः गर्म करने के लिए 165°F (74°C) न्यूनतम सुरक्षित तापमान है।
2. दोबारा गर्म करने के तरीके: आप चावल को स्टोवटॉप पर या माइक्रोवेव में गर्म कर सकते हैं। स्टोवटॉप पर गर्म करने के लिए, चावल को लगभग 10-15 मिनट तक, बीच-बीच में चलाते हुए, गर्म करें। माइक्रोवेव में गर्म करने के लिए, सुनिश्चित करें कि चावल पूरी तरह से भापदार गर्म हो जाएँ।
3. खाद्य थर्मामीटर: दोबारा गर्म किए गए चावल के आंतरिक तापमान की जांच करने के लिए खाद्य थर्मामीटर का उपयोग करें।
4. भंडारण: पके हुए चावल को पकाने के दो घंटे के भीतर रेफ्रिजरेटर में रखें और इसकी गुणवत्ता और सुरक्षा बनाए रखने के लिए इसे केवल एक बार गर्म करें।
5. उपभोग: दोबारा गर्म किए गए चावल को पकाने के 3-4 दिनों के भीतर ही खा लें और सुनिश्चित करें कि इसे सुरक्षित तापमान पर गर्म किया गया हो।

इन दिशानिर्देशों का पालन करके, आप भोजनजनित बीमारी के जोखिम को कम करते हुए अपने गर्म किए हुए चावल का आनंद ले सकते हैं।

अखरोट पर वैज्ञानिक अध्ययन

अखरोट के अनेक स्वास्थ्य लाभों के लिए इसका व्यापक अध्ययन किया गया है, और यहां कुछ प्रमुख निष्कर्ष दिए गए हैं:

1. संज्ञानात्मक कार्य और मस्तिष्क स्वास्थ्य:- जर्नल ऑफ फूड एंड फंक्शन में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि नाश्ते में 50 ग्राम अखरोट खाने से स्वस्थ युवा वयस्कों में संज्ञानात्मक प्रदर्शन और मस्तिष्क की गतिविधि में सुधार हुआ, साथ ही प्रतिक्रिया समय और स्मृति स्मरण में भी लाभ देखा गया। अखरोट में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स और ओमेगा-3 फैटी एसिड की उच्च मात्रा मस्तिष्क में सूजन और ऑक्सीडेटिव तनाव को कम करने में मदद कर सकती है, जिससे अल्जाइमर जैसी अपक्षयी मस्तिष्क संबंधी बीमारियों को रोकने में मदद मिल सकती है।

2. हृदय स्वास्थ्य:- प्रतिदिन अखरोट खाने से एलडीएल (₹खराब₹) कोलेस्ट्रॉल कम हो सकता है, रक्तचाप कम हो सकता है, और संवहनी कार्य में सुधार हो सकता है, जिससे हृदय रोग का खतरा कम हो सकता है। पांच मानव नैदानिक परीक्षणों की समीक्षा में पाया गया कि अखरोट को भोजन के विकल्प के रूप में उपयोग करने पर वजन नहीं बढ़ता, जिससे यह हृदय के लिए स्वस्थ विकल्प बन जाता है।

3. कैंसर और सूजन:- अखरोट में पॉलीफेनॉल्स होते हैं, जिनमें सूजनरोधी गुण होते हैं और ये कुछ प्रकार के कैंसर से बचाने में मदद कर सकते हैं। अखरोट में पॉलीअनसेचुरेटेड एसिड का अनूठा संयोजन सूजन और ऑक्सीडेटिव तनाव को कम करने में भी मदद कर सकता है।

4. आंत स्वास्थ्य और वजन प्रबंधन:- जर्नल ऑफ न्यूट्रीशन में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि 2 सप्ताह तक प्रतिदिन 42 ग्राम अखरोट खाने से अच्छे आंत बैक्टीरिया में वृद्धि हुई, जो जठरांत्र स्वास्थ्य में उनकी भूमिका को उजागर करता है। कैलोरी और वसा में उच्च होने के बावजूद, अखरोट वजन घटाने के लिए एक महान उपकरण हो सकता है, क्योंकि वे तृप्ति प्रदान करते हैं और एलडीएल कोलेस्ट्रॉल और रक्तचाप को कम करने में मदद कर सकते हैं।

5. पोषण के लाभ:- अखरोट में मैंगनीज, तांबा, मैग्नीशियम और लोहा सहित आवश्यक विटामिन और खनिज प्रचुर मात्रा में होते हैं। एक औंस अखरोट (लगभग 14 टुकड़े) में 185 कैलोरी, 4.3 ग्राम प्रोटीन और लगभग 2 ग्राम आहारीय फाइबर होता है।

आप भी अपने जीवन को खुशियों से भर सकते हैं, इसे सदा आनन्दित रख सकते हैं। इसलिए आप सभी निम्नलिखित बातों का पालन अवश्य करें

पिंकी कुंडू
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली प्रदेश
सदस्य उज्जवला योजना भाजपा दिल्ली प्रदेश

आपका शरीर और आपका मुड आपके ही हाथों में है इसलिए अपने जीवन की रोजमर्रा की भाग दौड़ भरी जिंदगी से अपने लिए सुबह का केवल दो घंटा अवश्य निकालें और इसे अपने शरीर और स्वभाव को बेहतर बनाने मे लगाये ।

1. यदि आप उगते सूरज को 15 मिनट देखते हैं और ताजी हवा में टहलते है तो इससे आपके भीतर dopamine chemical release होता है जो आपके स्वभाव को बेहतर बनाता है, इसे प्रसन्नचित करता है।

2. जब आप कोई नया काम करते हैं या कोई टास्क पूरा करते हैं या कोई favorite song सुनते हैं, अपने प्रभु को याद करते हैं तो इससे आपके भीतर serotonin release होता है जिससे आपका मन आनंद से भर जाता है,

3. अगर आप daily exercise करते हैं टहलते है या dark chocolate खाते हैं तो इससे आपके भीतर indorfin chemical release होता है जो आपके शरीर के दर्द को कम करता है और तनाव दूर करता है।

4. जब आप अपने पति, पत्नी, बच्चे या पालतू जानवर को गले लगाते हैं तो इससे आपके भीतर oxytocin हार्मोन release होता है जिससे आपका मन प्रेममय हो जाता है, तनाव रहित हो जाता है इसलिए इसे प्रेम का हार्मोन भी कहा जाता है।

थोड़ा सा संयम और सावधानी से अपने जीवन को खुशियों से भर सकते हैं, इसे सदा आनन्दित रख सकते हैं। इसलिए आप सभी इसका पालन अवश्य करें।

1. मेलाटोनिन (नींद):- 10 बजे से पहले सोएँ, मोबाइल कम करें
2. कॉर्टिसोल (तनाव):- रोज़ 10-15 मिनट ध्यान करें
3. सेरोटोनिन (खुशी):- सुबह धूप लें, रोज़ टहलें
4. डोपामिन (प्रेरणा):- सोशल मीडिया कम, छोटे लक्ष्य पूरे करें
5. ऑक्सिटोसिन (करुणा):- परिवार से जुड़े रहें, सेवा करें
6. इंसुलिन (शुगर कंट्रोल):- मीठा कम, फास्टिंग अपनाएँ
7. थायरॉक्सिन (मेटाबोलिज्म):- योग करें, आयोडाइज्ड नमक
8. टेस्टोस्टेरोन / एस्ट्रोजन:- योग + संतुलित आहार + अच्छी नींद

मेथी दाना एक शक्तिशाली जड़ी बूटी

पिंकी कुंडू
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली प्रदेश
सदस्य उज्जवला योजना भाजपा दिल्ली

जो स्वास्थ्य के लिए अनेक लाभ प्रदान करती है। इसके साथ अन्य जड़ी-बूटियों को मिलाकर विभिन्न घरेलू नुस्खे बनाए जा सकते हैं, जो पाचन, मधुमेह, त्वचा, बालों और सामान्य स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हैं। नीचे कुछ विस्तृत नुस्खे दिए गए हैं, जिनमें मेथी दाने को अन्य जड़ी-बूटियों के साथ मिलाकर उपयोग किया गया है।

1. मधुमेह नियंत्रण के लिए मेथी और दालचीनी का नुस्खा

लाभ: मेथी ब्लड शुगर को नियंत्रित करती है और दालचीनी इंसुलिन संवेदनशीलता को बढ़ाती है।

सामग्री:
1. मेथी दाना: 1 चम्मच
2. दालचीनी पाउडर: चम्मच
3. पानी: 1 गिलास

बनाने की विधि:
1. 1 चम्मच मेथी दाने को रात भर 1 गिलास पानी में भिगो दें।
2. सुबह पानी को छान लें और उसमें चम्मच दालचीनी पाउडर मिलाएं।
3. इस मिश्रण को हल्का गर्म करें और खाली पेट पिएं।
4. मेथी के दानों को चबाकर खा सकते हैं या पानी के साथ निगल लें।

उपयोग: रोजाना सुबह खाली पेट 2-3 सप्ताह तक लें।

सावधानी: मधुमेह की दवाइयाँ ले रहे हैं तो डॉक्टर से सलाह लें।

2. पाचन और गैस के लिए मेथी, अजवाइन और सौंफ का नुस्खा

लाभ: यह मिश्रण पाचन को बेहतर करता है, गैस, अपच और सूजन को कम करता है।

सामग्री:
1. मेथी दाना: 1 चम्मच
2. अजवाइन: 1 चम्मच
3. सौंफ: 1 चम्मच
4. पानी: 2 गिलास

बनाने की विधि:
1. मेथी, अजवाइन और सौंफ को बराबर मात्रा में मिलाएं।
2. इस मिश्रण को 2 गिलास पानी में उबालें, जब तक पानी आधा न रह जाए।
3. मिश्रण को छानकर गुनगुना होने पर पिएं।

उपयोग: दिन में 1-2 बार, भोजन के बाद।

सावधानी: ज्यादा मात्रा में सेवन से पेट में जलन हो सकती है।

3. बालों के लिए मेथी, आंवला और शिकाकाई का नुस्खा

लाभ: बालों का झड़ना कम करता है, रूसी से छुटकारा दिलाता है और बालों को चमकदार बनाता है।

सामग्री:
1. मेथी दाना: 2 चम्मच
2. आंवला पाउडर: 1 चम्मच
3. शिकाकाई पाउडर: 1 चम्मच
4. पानी: आवश्यकतानुसार

बनाने की विधि:
1. मेथी दानों को रात भर पानी में भिगो दें, फिर सुबह पीसकर पेस्ट बना लें।
2. इस पेस्ट में आंवला और शिकाकाई पाउडर मिलाएं।
3. थोड़ा पानी डालकर गाढ़ा पेस्ट बनाएं।
4. इस मिश्रण को स्कैल्प और बालों पर लगाएं, 30-40 मिनट बाद गुनगुने पानी से धो लें।

उपयोग: सप्ताह में 2 बार।

4. त्वचा के लिए मेथी, हल्दी और मुल्तानी मिट्टी का फेस मास्क

लाभ: मुहांसे कम करता है, त्वचा को नमी देता है और दाग-धब्बों को हल्का करता है।

सामग्री:
1. मेथी दाना: 1 चम्मच (रात भर भिगोया हुआ)
2. हल्दी पाउडर: चम्मच
3. मुल्तानी मिट्टी: 1 चम्मच
4. गुलाब जल: आवश्यकतानुसार

बनाने की विधि:
1. भिगोए हुए मेथी दानों को पीसकर पेस्ट बना लें।
2. इसमें हल्दी और मुल्तानी मिट्टी मिलाएं।
3. गुलाब जल डालकर गाढ़ा पेस्ट बनाएं।
4. इस मास्क को चेहरे पर लगाएं, 15-20 मिनट बाद ठंडे पानी से धो लें।

उपयोग: सप्ताह में 1-2 बार।

5. वजन कम करने के लिए मेथी और जीरा ड्रिंक

लाभ: मेटाबॉलिज्म को बढ़ाता है और वजन घटाने में मदद करता है।

सामग्री:
1. मेथी दाना: 1 चम्मच
2. जीरा: 1 चम्मच
3. पानी: 1 गिलास

बनाने की विधि:
1. मेथी दाने और जीरा को रात भर पानी में भिगो दें।
2. सुबह पानी को हल्का गर्म करें और छानकर पिएं।
3. मेथी और जीरे को चबाकर खा सकते हैं।

उपयोग: रोज सुबह खाली पेट।

सावधानी: अधिक मात्रा में सेवन से पेट में गर्मी हो सकती है।

मेथी दाना के अन्य लाभ:

1. हृदय स्वास्थ्य के लिए कोलेस्ट्रॉल नियंत्रण: मेथी में मौजूद घुलनशील फाइबर (गैलाक्टोमैनन) खराब कोलेस्ट्रॉल (LDL) को कम करने में मदद करता है और अच्छे कोलेस्ट्रॉल (HDL) को बढ़ाता है। रक्तचाप: मेथी में पोटैशियम और एंटीऑक्सीडेंट्स रक्तचाप को नियंत्रित करने में सहायक हैं।
उपयोग: 1 चम्मच मेथी दाने को रात भर भिगोकर सुबह खाली पेट पानी के साथ लें।

2. स्तनपान में वृद्धि दूध उत्पादन: मेथी में डायसजेनिन जैसे यौगिक होते हैं, जो स्तनपान कराने वाली माताओं में दूध के उत्पादन को बढ़ाने में मदद करते हैं।
उपयोग: 1-2 चम्मच मेथी दाने को पानी में उबालकर चाय की तरह पिएं या भिगोए हुए दानों को खाएं।
सावधानी: अधिक मात्रा से शिशु में गैस की समस्या हो सकती है, इसलिए डॉक्टर से सलाह लें।

3. वजन घटाने में सहायक मेटाबॉलिज्म बढ़ाए: मेथी भूख को नियंत्रित करती है और फाइबर के कारण पेट भरा हुआ महसूस होता है, जिससे अधिक खाने की इच्छा कम होती है।
उपयोग: 1 चम्मच मेथी दाने रात भर भिगोकर सुबह खाली पेट पानी के साथ लें या मेथी की चाय बनाकर पिएं।

4. महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए मासिक धर्म की समस्याएं: मेथी मासिक धर्म के दर्द और ऐंठन को कम करने में मदद करती है। यह हार्मोनल संतुलन को भी बनाए रखती है। रजोनिवृत्ति (Menopause): मेथी में मौजूद फाइटोएस्ट्रोजेन्स रजोनिवृत्ति के लक्षण जैसे गर्मी के झटके (hot flashes) और मूड स्विंग्स को कम करते हैं।
उपयोग: मेथी के दानों को पीसकर 1 चम्मच पाउडर गुनगुने पानी के साथ लें।

5. जोड़ों के दर्द और सूजन एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण: मेथी में एंटी-इन्फ्लेमेटरी और एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं, जो गठिया और जोड़ों के दर्द में राहत देते हैं।
उपयोग: मेथी दानों को हल्का भूनकर पीस लें। 1 चम्मच पाउडर को गर्म पानी या दूध के साथ लें।

6. प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करना एंटीऑक्सीडेंट्स: मेथी में विटामिन C, A और अन्य एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं।
उपयोग: मेथी के दानों को सूप, दाल या सब्जी में डालकर नियमित रूप से खाएं।

7. पेट के अल्सर और एसिडिटी पेट की परत की सुरक्षा: मेथी में म्यूसिलेज (mucilage) होता है, जो पेट की परत को कोटिंग प्रदान करता है और अल्सर या एसिडिटी से राहत देता है।
उपयोग: 1 चम्मच मेथी दाने को रात भर भिगोकर सुबह पानी के साथ लें या मेथी की चाय बनाएं।

8. लीवर स्वास्थ्य डिटॉक्सिफिकेशन: मेथी लीवर को डिटॉक्स करने और फैट मेटाबॉलिज्म को बेहतर करने में मदद करती है।
उपयोग: मेथी के दानों को उबालकर बनाई गई चाय रोजाना पिएं।

9. श्वसन स्वास्थ्य खांसी और सर्दी: मेथी में म्यूसिलेज और एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण गले की खराश, खांसी और सर्दी में राहत देते हैं।
उपयोग: मेथी दानों को पानी में उबालकर, उसमें शहद मिलाकर पिएं।

10. किडनी स्वास्थ्य मूत्रवर्धक प्रभाव: मेथी शरीर से अतिरिक्त तरल पदार्थ और विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करती है, जिससे किडनी स्वस्थ रहती है।
उपयोग: मेथी की चाय या भिगोए हुए दाने नियमित रूप से लें।

11. कैंसर से बचाव मेथी में डायोसजेनिन और अन्य सैपोनिन्स होते हैं, जो कैंसर कोशिकाओं के विकास को रोकने में मदद कर सकते हैं, विशेष रूप से स्तन और कोलन कैंसर में। इसके एंटीऑक्सिडेंट गुण कोशिकाओं को नुकसान से बचाते हैं।
उपयोग विधि: नियमित रूप से मेथी को आहार में शामिल करें।

जब अगस्त्य मुनि ने समुंद्र का सारा जल पी लिया

पिंकी कुंडू
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली प्रदेश
सदस्य उज्जवला योजना भाजपा दिल्ली प्रदेश

एक समय था जब देवताओं के आग्रह पर अगस्त्य मुनि ने सभी समुंदरों का जल पी लिया था ताकि देवता राक्षसों का वध कर सके। आज हम आपको उसकी कथा बताएंगे।

राक्षस राज वृत्तासुर का वध-:- एक समय दैत्यों का राजा वृत्तासुर था जो देव राज इंद्र व उनकी सेना पर आक्रमण करता रहता था। सभी देवता उससे परेशान थे इसलिए इंद्र देव ने महर्षि दधीचि की स्तुति कर उनकी हड्डियों से शक्तिशाली वज्र का निर्माण किया व वृत्तासुर का वध कर डाला। वृत्तासुर का वध होते ही दैत्य सेना में हाहाकार मच गया व सभी अपने जीवन की रक्षा करने के लिए इधर-उधर भागने लगे।

सभी राक्षस समुंद्र में छुप गए:- वृत्तासुर के वध के पश्चात दैत्यों के पास कोई राजा नहीं था तब सभी धरती पर अपना जीवन बचाने के लिए छुपने लगे लेकिन देवता उनको ढूंढ-ढूंढ कर मार रहे थे। इसलिए सभी दैत्यों ने समुंद्र के नीचे छुपने का सोचा ताकि देवता उन्हें ढूंढ ना सके। यह सोचकर सभी दैत्य समुंद्र की गहराइयों में जाकर छिप गए।

देवता हुए परेशान-:- दैत्यों के समुंद्र में छिपे होने के कारण देवताओं को उन्हें ढूंढने में बहुत समस्या आ रही थी ।चूंकि समुंद्र अति विशाल होने के साथ-साथ बहुत गहरा भी था व साथ ही पानी के अंदर देखा नही जा सकता था ।इसलिए देवता दैत्यों का वध कर पाने में असमर्थ थे। साथ ही दैत्य रात्रि में समुंद्र से बाहर निकल कर ऋषि मुनियों पर आक्रमण कर उन्हें खा जाते थे जिस कारण देवताओं की शक्ति कम होती जा रही थी।

सभी देवता गए भगवान विष्णु के पास-:- दैत्यों के छल से परेशान होकर सभी देवता भगवान विष्णु के पास गए व उनसे सहायता मांगी ।भगवान विष्णु ने कहा कि दैत्यों को तभी मारा जा सकता हैं जब समुंद्र का जल सूख जाए। इसके लिए उन्होंने उपाय सुझाया कि पृथ्वी पर ही अगस्त्य मुनि नामक एक महान तपस्वी रहते हैं जो अपनी शक्ति से समुंद्र के जल को पीकर उसे सुखा सकते हैं।

देवताओं ने मांगी अगस्त्य मुनि से सहायता-:- भगवान विष्णु से आदेश पाकर सभी देवता अगस्त्य मुनि से सहायता मांगने गए। जब ऋषि अगस्त्य ने देवताओं की समस्या सुनी तब वे उनकी सहायता करने को तैयार हो गए। वे सभी देवताओं के साथ समुंद्र के तट पर गए व अपने हाथ से जल लेकर पीने लगे।

देखते ही देखते सारे समुंद्र का जल समाप्त हो गया व दैत्य उसमे साफ दिखने लगे। दैत्यों के बाहर आते ही सभी देवताओं ने उन पर भीषण आक्रमण कर दिया व सभी का वध कर दिया। कुछ दैत्य डर कर वहां से भागकर पुनः पाताल लोक चले गए।

इस प्रकार अगस्त्य मुनि ने समुंद्र का जल पीकर देवताओं व ऋषि मुनियों की सहायता की व दैत्यों का अंत करवाया ।जब देवताओं ने राक्षसों का वध करने के पश्चात अगस्त्य मुनि से समुंद्र का जल वापस लौटाने को बोला तो उन्होंने इसमें असमर्थता दिखाई व उन्हें बताया कि अब वह सारा जल पच चुका है।

देवता गए भगवान ब्रह्मा के पास -:- सभी देवता अगस्त्य मुनि के द्वारा समुंद्र का जल ना लौटा पाने के कारण भगवान ब्रह्मा से सहायता मांगने गए तब भगवान ब्रह्मा ने बताया कि कुछ समय के पश्चात भागीरथ (Bhagiratha) इस पृथ्वी पर आयेंगे व उनके तप से मां गंगा का इस पृथ्वी पर आगमन होगा ।उन्ही के जल से विश्व के सभी समुंद्र पुनः भर जाएंगे।

ज्येष्ठ माह:- ज्येष्ठ वर वधू और विवाह

पिंकी कुंडू
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली प्रदेश
सदस्य उज्जवला योजना भाजपा दिल्ली प्रदेश

लोकाचार और मुहूर्त शास्त्र में ज्येष्ठ मास में ज्येष्ठ संतान का विवाह करना शुभ नहीं माना जाता है। ज्येष्ठ पुत्र या पुत्री का विवाह ज्येष्ठ मास में करने से उनका मरण होता है।

अब प्रश्न उठता है कि ज्येष्ठ संतान का अर्थ क्या है। ग्रंथों में इसका अर्थ बताया गया है कि प्रथम प्रसूत संतान ज्येष्ठ होता है वह चाहे पुत्र या पुत्री हो।

इसका मतलब यह नहीं है कि सबसे बड़ा पुत्र या पुत्री। लेकिन यदि प्रथम गर्भ से उत्पन्न संतान जीवित न हो अथवा प्रथम गर्भ के समय गर्भपात हो गया हो और उसके बाद अन्य संताने जीवित हो तो वे ज्येष्ठ संतान नहीं हो सकती है।

मुहूर्त शास्त्र में ज्येष्ठ मास में ज्येष्ठ संतान का विवाह अलावे विद्यारंभ, मुंडन, व्रतबंध, कर्णवेध, संस्कार भी ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

परिहार मुहूर्त शास्त्र में कुछ ऐसे अपवाद भी बताए गए हैं जिसके अनुसार ज्येष्ठ मास में ज्येष्ठ संतान का विवाह आदि अन्य मंगल कार्य किया जा सकता है।

ऋषि भारद्वाज के अनुसार ज्येष्ठ मास में कृतिका नक्षत्र में सूर्य की स्थिति के दस दिन बाद से ही ज्येष्ठ संतान का विवाह आदि अन्य मंगल कार्य किया जा सकता है। इस तरह जब विवाह आदि अन्य मंगल कार्य करना पड़े तो सूर्य की कृतिका से रोहिणी नक्षत्र में गोचर के समय ज्येष्ठ मास में ज्येष्ठ संतान का विवाह आदि मंगल कार्य शुभ फलदाई होंगे।

"यूपी रत्न" डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने किया "मंद-मंद मुस्काते भोले" कविता संग्रह का आनलाइन लोकार्पण

पं. मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी, श्री कार्तिकेय त्रिपाठी, डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, श्री गोपाल माहेश्वरी, श्री मुकेश इन्दौरी

लोक कल्याणकारी कविता संग्रह है 'मंद-मंद मुस्काते भोले' : डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी

वृन्दावन/इंदौर। प्रख्यात साहित्यिक व सामाजिक संस्था 'अखंड संडे' के तत्वावधान में प्रख्यात साहित्यकार व शिक्षाविद् कार्तिकेय त्रिपाठी ₹राम₹ द्वारा रचित 'मंद-मंद मुस्काते भोले' कविता संग्रह का 116वां आनलाइन लोकार्पण समारोह के मुख्य अतिथि ब्रज साहित्य सेवा मंडल के अध्यक्ष व प्रख्यात साहित्यकार 'यूपी रत्न' डॉ. गोपाल चतुर्वेदी (वृन्दावन) ने किया ।साथ ही अपने उदबोधन में कहा कि 'मंद-मंद मुस्काते भोले' कविता संग्रह की सभी कविताओं के केंद्र बिंदु भगवान शिव हैं ।जो उनकी भगवान शिव के प्रति परम भक्ति का प्रमाण है। ये संग्रह लेखक के जीवन का प्रतिबिंब है, जो कि उनकी आध्यात्मिक निष्ठा का परिचय देता है। इस संग्रह की रचनाएं सहज, सरल व रोचक शैली में नवीन भाव, बिंबो व संदेशों से ओत-प्रोत है। ये ऐसी पहली कविताओं की किताब है,

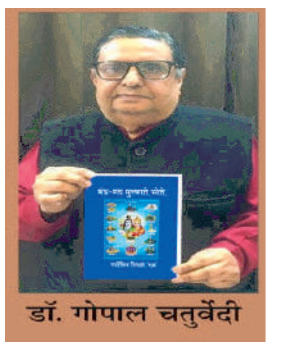

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

जिसमें 208 कविताएं भगवान शिव को समर्पित है। ये कविता संग्रह लोक कल्याणकारी है।

इस अवसर पर राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन के पूर्व कुलपति आचार्य मिथिला प्रसाद त्रिपाठी ने कहा कि कवि कार्तिकेय ने भगवान शंकर को हर स्वरूप में देखा और उसे शब्दों में अभिव्यक्त किया है। ये संग्रह जनमानस में आध्यात्मिक चेतना जागृत करने में सहायक है।

प्रख्यात बाल पत्रिका 'देवपुत्र' के संपादक गोपाल माहेश्वरी ने कहा कि शिव ही साहित्य का मूल प्राण तत्व है। शिव से ही साहित्य का सृजन होता है। 'सत्यम्-शिवम्-सुंदरम्' साहित्य का केंद्रीय भाव और उसकी आत्मा है। इसके बिना रची गई रचना साहित्य की श्रेणी में नहीं आती। इस संग्रह की हर रचना में शिव तत्व समाया हुआ है ।इस कविता संग्रह में 'सत्यम शिवम सुंदरम' के भाव को महसूस किया जा सकता है।

'मंद-मंद मुस्काते भोले' कविता संग्रह के लेखक कार्तिकेय त्रिपाठी 'राम' ने कहा कि उन्हें लेखन की प्रेरणा अपने पिता स्व सीताराम त्रिपाठी से मिली है। शंकरजी ही आदि-अनंत हैं, वे ही हमारे जीवन के पथ-प्रदर्शक है। जनमानस तक ये पावन संदेश पहुँचाने के उद्देश्य से ही हमने भोले को समर्पित इन 208 रचनाओं का सृजन किया है।

कृति संपादक मुकेश इन्दौरी ने कहा कि इस संग्रह की रचनाएं लोकमंगल की भावना से रची गई हैं। इस संग्रह की रचनाएं सूर, तुलसी के द्वारा रचे गए काव्य की तरह युगों-युगों तक शिव काव्यामृत से रसास्वादन करने योग्य है।

ऑनलाइन लोकार्पण समारोह में देश-विदेश के कई जाने-माने साहित्यकार व शिक्षाविद् उपस्थित रहे।

मनुष्य के सुखद जीवन के लिए मस्तिष्क में सत्यता, चेहरे पर प्रसन्नता तथा हृदय में पवित्रता जरूरी हैं।

पिंकी कुंडू

कष्ट और दुःख मनुष्य के जीवन में शिक्षा देने वाले दो सबसे श्रेष्ठ गुण होते हैं। किसी को बहस या बातों से जीतने के बजाय मौन रह कर ही पराजित किया जा सकता है। जैसे जैसे किसी व्यक्ति में समझदारी आने लगती है, वह दिखावा करना छोड़ता चला जाता है। जिस व्यक्ति का विश्वास ईश्वर पर हर परिस्थिति में बना रहता है, ईश्वर भी उस व्यक्ति का विश्वास किसी भी परिस्थिति में टूटने नहीं देता। समय के साथ-साथ स्वभाव में भी बदलाव करते रहना चाहिए तब जिंदगी आसानी से कट जाती है। कभी किसी से इतना भी मोह न करें कि उसकी समस्त बुराईयां छिप जाएं, और किसी से इतनी भी घृणा न करें कि उसकी कोई भी अच्छाई दिखाई न दें। ध्यान रहे कि जो लोग हमें पसंद नहीं आते अंततः वही लोग हमें बहुत गहरी/सही सीख देकर जाते हैं।

भक्ति कुसुम गौडीय मठ का 17वां त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव 30 नवम्बर से

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। राधा निवास क्षेत्र स्थित श्रीभक्ति कुसुम गौडीय मठ में श्रीधर गौडीय गुरुकुल सेवा ट्रस्ट के द्वारा श्रीश्रील भक्ति कुसुम श्रमण गोस्वामी महाराज का त्रिदिवसीय 39 वां तिरोभाव तिथि पूजा महोत्सव, वार्षिक महोत्सव एवं 167वां गीता जयंती महोत्सव 30 नवम्बर से 02 दिसंबर 2025 पर्यंत विभिन्न धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ आयोजित किया गया है। जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि श्रील श्रीधर महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित होने वाले इस महोत्सव का शुभारंभ 30 नवम्बर को प्रातः 07 बजे से संस्कृत के छात्रों द्वारा श्रीमद्भागवत पारायण के साथ होगा ।तदोपरांत 2 बजे से श्रीहरिनाम संकीर्तन के साथ श्रीधाम वृन्दावन की पंच कोसी परिक्रमा की जाएगी। 01 दिसम्बर को प्रातः 05 बजे से मंगला आरती, 06 से 08 तक भजन-कीर्तन, गुरु पूजन व प्रातः 10 से मध्यान्ह 12 बजे तक संतों-विद्वानों के प्रवचन होंगे। अपराह्न 3 बजे से गीता जयंती के उपलक्ष्य में विद्यार्थियों की नवमोध्याय गीता प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। साथ ही श्रीमद्भगवत गीता विषय पर संत-विद्वत सम्मेलन होगा। जिसके अंतर्गत प्रतियोगिता में विजय छात्रों को पुरस्कृत किया जाएगा। 02 दिसंबर को प्रातः 9 से मध्यान्ह 12 बजे तक धर्म सभा होगी ।तत्पश्चात संत-ब्रजवासी-वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा होगा ।जिसमें सभी भक्त-श्रद्धालु सादर आमंत्रित हैं।

श्रीमद्भागवत कथा श्रवण करने की सार्थकता तभी है, जब हम सभी इस ग्रन्थ को अपने जीवन में आत्मसात करें : संतश्री प्रेमधन लालनजी महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। कालीदह क्षेत्र स्थित राधा कृपा आश्रम में लाला सट्टनलाल अग्रवाल परिवार (मुम्बई) के द्वारा ठाकुरश्री ब्रजवल्लभ लाल महाराज एवं सद्गुरुश्री सन्त मां ब्रजदेवी जी के पावन सानिध्य में चल रहा सप्त दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ महोत्सव विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ संपन्न हुआ। जिसके अंतर्गत प्रातः काल संतश्री लालनजी महाराज के पावन सानिध्य में श्रीयमुना महारानी का वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पूजन-अर्चन कर उनका चुनरी मनोरथ किया गया ।साथ ही सन्त, विप्र, ब्रजवासी वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा हुआ ।जिसमें सैकड़ों व्यक्तियों को भोजन प्रसाद ग्रहण कराकर उन्हें ऊनी कम्बल, छतरी, शॉल एवं दक्षिणा आदि वितरित की गई।

सद्गुरुश्री सन्त मां ब्रजदेवी एवं राष्ट्रपति पुरुस्कार प्राप्त प्रख्यात रासाचार्य स्वामी फतेह कृष्ण शर्मा ने कहा कि श्रीधाम वृन्दावन लीला पुरुषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण और उनकी आल्हादिनी शक्ति स्वरूपा श्रीराधा रानी की क्रीड़ा स्थली है ।यहां की रज आज भी प्रभु भक्तों को उनकी अनुभूति कराती है ।इसीलिए हमें सदा ही ब्रज रज को अपने मस्तक पर धारण करना चाहिए।

सन्तश्री प्रेमधन लालनजी महाराज ने समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को अपने आशीर्वचन देते हुए कहा कि श्रीमद्भागवत कथा श्रवण करने की सार्थकता तभी है, जब हम सभी इस ग्रन्थ को अपने जीवन में आत्मसात कर लें ।इसीलिए सभी भक्त ये संकल्प लें ,कि इन सात दिनों में हमने श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा से जो भी श्रवण किया है, उसे अपने जीवन में धारण करेंगे ।साथ ही आजीवन उसके बताए मार्ग पर चल कर प्रभु का गुणगान करेंगे।

इस अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, पण्डित रवि शर्मा, स्वामी राधाकांत शर्मा (छोटे स्वामी), कृष्णांशु शर्मा, मुख्य यजमान अशोक कुमार अग्रवाल एवं डॉ. राधाकांत शर्मा आदि की उपस्थिति विशेष रही।

दान से पहले जान लें पुराने कपड़ों के दान के ये 5 नियम, वरना जीवन पर पड़ सकता है

अनन्या मिश्रा

कपड़ों का दान करना न सिर्फ जरूरतमंदों की मदद करता है, बल्कि आपके जीवन में पॉजिटिव एनर्जी और सुख-समृद्धि भी लाता है। हालांकि आज हम आपको बताने जा रहे हैं कि कपड़ों का दान करने से पहले किन नियमों का पालन करना जरूरी होता है। हिंदू धर्म में कपड़ों का दान करने पुण्य का काम माना जाता है। लेकिन कई बार हम कुछ ऐसी चीजों का दान दे देते हैं, जिनका कोई ज्योतिष रहस्य भी होता है। माना जाता है कि अगर आप दान में कपड़े देती हैं, तो इसके कुछ नियम हैं, जिनका पालन करना जरूरी माना जाता है। जब आप दान में किसी को अपने पहने हुए कपड़े देती हैं, तो इसके साथ आपका सकारात्मक और नकारात्मक ऊर्जा भी जुड़ी होती है। ऐसे में आपको कुछ बातों का ध्यान रखकर ही कपड़ों का दान करना चाहिए। जिससे जीवन में किसी भी तरह का बुरा प्रभाव न पड़े। कपड़ों का दान करना न सिर्फ जरूरतमंदों की मदद करता है, बल्कि आपके जीवन में पॉजिटिव एनर्जी और सुख-समृद्धि भी लाता है। हालांकि आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि कपड़ों का दान करने से पहले किन नियमों का पालन करना जरूरी होता है।

बिना धोए हुए कपड़े न करें दान

ज्योतिष के मुताबिक पुराने कपड़ों को सीधे तौर पर दान नहीं करना चाहिए। खासतौर पर गंदे कपड़ों का दान नहीं करना चाहिए। जब आप किसी को अपना इस्तेमाल किया हुआ कपड़ा दान में देती हैं, तो उसके साथ आपकी ऊर्जा जुड़ी होती है। इसलिए दान करने से पहले कपड़ों को अच्छे से धोकर सुखा लें। इसके बाद ही इन कपड़ों का दान करें।

अगर आप गंदे कपड़े दान में देती हैं, तो इसमे निगेटिव एनर्जी का वास होता है। इस कपड़े पर मौजूद निगेटिव एनर्जी दूसरों के साथ आपके जीवन को प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए पुराने कपड़े दान करने से पहले इनको अच्छे से धोना जरूरी है।

नमक के पानी और गंगाजल से शुद्धिकरण

कपड़ों को साधारण पानी से नहीं बल्कि इसको नमक के पानी से धोएं और बाद में गंगाजल छिड़कें। ऐसा करना शुभ माना जाता है। नमक किसी भी तरह की निगेटिव एनर्जी को दूर करने में सहायता करता है और गंगाजल से शुद्धिकरण के लिए इस्तेमाल किया जाता है। वहीं नमक के पानी से कपड़े धोकर गंगाजल डालती हैं, को कपड़े ऊर्जावान हो जाते हैं। इससे दान का प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है।

खंडेराव मंदिर का अद्भुत अग्नि मेला: 400 साल पुरानी परंपरा में आस्था की 9 कदम की परीक्षा

दिव्यांशी भदौरिया

देवरी के श्री खंडेराव मंदिर में 400 साल पुरानी अग्नि मेला परंपरा आज भी जारी है, जहां भक्त मन्नत पूरी होने पर दहकते अंगारों पर चलकर आस्था प्रकट करते हैं। यह अनोखी परंपरा राजा यशवंत राव के पुत्र के स्वप्न में मिले आर्शीवाद से शुरू हुई, और अब हर साल अगहन मास में सैकड़ों श्रद्धालु इसमें हिस्सा लेते हैं।

भारत में ऐसी कई धार्मिक दृष्टि से कई परंपराएं सादियों से चली आ रही हैं, जिनके बारे में बहुत कम ही लोग जानते हैं। देश में ऐसी कई जगहें जहां पर अनोखी परंपरा देखने को मिलती है। हर साल अगहन महीने की शुक्ल पक्ष की चंपा पष्ठी से पूर्णिमा पर सागर जिले से 65 किलोमीटर दूर देवरी नगर है। यहां पर स्थित प्राचीन श्री देव खंडेराव मंदिर में अग्नि मेला का आयोजन किया जाता है। इस मेले की खास बात यह है कि अपनी मनोकामना पूरी होने पर भक्त दहकते हुए अंगारों से भरे अग्निकुंड पर नंगे पैर चलकर अपनी आस्था और भक्ति प्रकट करते हैं। यहां पर सैकड़ों लोग अंगारे पर नंगे पैर चलते हैं। बता दें कि, इस साल एक साथ 300 श्रद्धालु अलग-अलग अग्नि कुंड से निकले और इसे देखने के लिए यहां पर हजारों संख्यां में भक्त जरुर पहुंचते हैं।

कैसे शुरू हुई यह 400 साल पुरानी परंपरा?

माना जाता है कि, बहुत समय पहले देवरी के राजा यशवंत राव का पुत्र गंभीर रूप से बीमार पड़ गया था। राजा ने हर संभव उपचार करवाया, लेकिन बच्चे की हालत में कोई सुधार नहीं आया। तभी एक रात उन्हें स्वप्न में श्री देव खंडेराव जी के दर्शन हुए। भगवान ने राजा को निर्देश दिया कि यदि वह मंदिर में जाकर हल्दी का हाथी चढ़ाएं, अपने पुत्र के स्वास्थ्य हेतु प्रार्थना करें और अग्नि कुंड से नंगे पैर होकर गुजरें, तो उनकी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी।

प्रार्थना पूरी होने पर अग्नि पर चलते हैं भक्त

फिर राजा यशवंत राव ने भगवान के सपने में दिए गए आदेश का पालन किया। उन्होंने मंदिर में आकर पूरी श्रद्धा से पूजा की और अग्निकुंड से नंगे पैर निकले। मान्यता है कि ऐसा करने के तुरंत बाद राजा का बेटा पूरी तरह स्वस्थ हो गया। तभी से यह परंपरा चल रही है। जो भी भक्त श्रद्धा भाव से श्री देव खंडेराव जी से सच्चे मन से कोई मन्नत मांगता हैं और उनकी इच्छा पूरी हो जाती है, तो वे अपने आस्था को व्यक्त करने के लिए इस मेले में धधकती अग्नि के आंगारों पर चलते हैं। इस दौरान भक्त पीले वस्त्र पहनकर और हाथों में हल्दी लेकर जयकारे लगाते हुए अग्निकुंड में 9 कदम चलते हैं। भक्तजन मानते हैं कि भगवान खंडेराव की कृपा से उन्हें अंगारों की गर्मी महसूस नहीं होती है।

कब लगता है अग्नि मेला?

खासतौर पर यह मेला दिसंबर के महीने पर लगता है। मेले की शुरुआत अगहन मास की चंपा षष्ठी के दिन से होती है और यह पूर्णिमा तक चलता है। बता दें कि, ठीक दोपहर 12 बजे, मंदिर के गर्भगृह में स्थित शिवलिंग पर सूर्य की पहली किरण पड़ने के बाद अग्निकुंड से निकलने की रस्म शुरु होती है। फिर भक्त अग्निकुंड की पूजा करते हैं और हल्दी छिड़कते हैं। इसके बाद नंगे पैर दहकते अंगारों के ऊपर चलकर अपनी मन्नत पूरी करते हैं।

पर्यावरण पाठशाला — स्मृति से सृजन की ओर, पेड़ लगाकर जीवन का उत्सव मनाएँ

डॉ. अंकुर शरण

प्रिय पाठको,
जिन अपनों ने हमें जीवन के अनगिनत सुंदर पल दिए, उनका जाना एक खालीपन छोड़ जाता है। शब्द उस शून्य को भर नहीं सकते, पर हम उनकी स्मृति को एक अर्थपूर्ण रूप ज़रूर दे सकते हैं। सबसे सुंदर श्रद्धांजलि वही होती है, जो जीवन को आगे बढ़ाए — और वह है एक वृक्ष।

किसी अच्छी खुली जगह पर, जहाँ वह बिना रुकावट पूरी ऊँचाई तक बढ़ सके, अपने प्रिय की याद में एक पौधा लगाना केवल एक पौधारोपण नहीं, बल्कि भविष्य में साँसें भरने वाली एक जीवित धरोहर बनाना है। वह वृक्ष आने वाले वर्षों में छाया देगा, पक्षियों को घर देगा, हवा शुद्ध करेगा और अनगिनत लोगों को राहत पहुँचाएगा — ठीक वैसे ही जैसे हमारे प्रियजनों ने हमें अपने जीवन में दिया।

आज समय है शोक को शक्ति में बदलने का, यादों को हरियाली में ढालने का और जीवन को संवारने का। आइए, रोने की जगह रोपें, और हर स्मृति दिवस को एक नए जीवन की शुरुआत बनाएं।

पर्यावरण पाठशाला आप सभी से आग्रह करती है —

अपने परिवार, मित्रों और समाज के साथ मिलकर "स्मृति वृक्ष" अभियान से जुड़ें।

अपने प्रिय की याद में एक पेड़ लगाइए, उसकी देखभाल का संकल्प लीजिए, और आने वाली पीढ़ियों को यह बताइए कि सच्ची श्रद्धांजलि वही है जो धरती को हरा रखे।

आइए, जीवन को पोषित करें —
क्योंकि स्मृतियाँ अब पत्तों में साँस लेंगी।

डॉ. अंकुर शरण
पर्यावरण पाठशाला
It's time to nurture life.

कानपुर में बस अग्निकांड : मौत के मुंह से निकलने के बाद घर की ओर लौटे भयभीत यात्री

सुनील बाजपेई

कानपुर। गत दिवस यहां हाईवे पर चलती बस में लगी भीषण आग के फल स्वरुप बड़ी मुश्किल से मौत के मुंह से निकल पाए यात्री अब अपने घर की ओर रवाना हो चुके हैं। इस बीच पुलिस ने भी सभी यात्रियों की सहायता करते हुए उन्हें उनके गंतव्य पर पहुंचने में सहायता भी की।

अवगतकरदे चले कि यहां कल शुक्रवार को नौबस्ता-रामादेवी नेशनल हाईवे पर एक चलती बस में अचानक आग लग गई थी, जिसके कुछ ही देर में आग बस में बुरी तरह से फैल गई थी, जिससे बस में सवार यात्रियों को बाहर निकलने में काफी कड़ी मशक्कत का सामना करना पड़ा था। कुछ यात्रियों ने खिड़कियों से कूदकर अपनी जान बचाई थी।

चलती बस में भीषण आग की यह सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने बस में फंसे बाकी लोगों को सुरक्षित निकलने में सफलता प्राप्त की थी। यद्यपि फायर ब्रिगेड के पहुंचने के पहले ही बस पूरी तरह से जलकर खाक हो चुकी थी।

यह घटना तब हुई जब शुक्रवार की सुबह 10:30 बजे के आसपास करीब 35 यात्रियों से भरी एक बस दिल्ली से बनारस की ओर जा रही थी। इस दौरान रामादेवी चौराहे के पास अचानक बस में आग लग गई, फिर कुछ ही देर में आग ने पूरी बस को अपनी चपेट में ले लिया था। बस में रखा सामान धू-धूकर के जलने लगी थी।

फिलहाल काफी यात्री घटना के बाद ही प्राइवेट वाहनों से अपने गंतव्य को चले गए थे और जो बचे थे। वह भी आज पुलिस के सहयोग से अपने घरों की ओर रवाना हो गए। इनमें से लगभग सभी यात्रियों के हाथ खाली रहे क्योंकि उनका सारा सामान इस बस में जलकर राख हो गया।

संत लौंगोवाल अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान में संविधान दिवस मनाया

लोंगोवाल,29 नवंबर (जगसीर सिंह)-

संत लौंगोवाल अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान लौंगोवाल में संविधान दिवस देशभक्ति के जोश के साथ मनाया गया। इस उपलक्ष्य में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस का उद्देश्य इंजीनियरिंग के छात्रों में संवैधानिक नैतिकता और राष्ट्रीय गौरव का संचार करना था। राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक डॉ. विनोद कुमार मीणा ने अल्प सूचना पर इस कार्यक्रम का आयोजन किया और अपने स्वागत भाषण में कहा कि जहाँ 26 जनवरी संविधान के लागू होने का दिन है, वहीं 26 नवंबर ₹हम, भारत के लोगों₹ द्वारा इसे अपनाने का सम्मान करने का दिन है।

समारोह की शुरुआत गणमान्य व्यक्तियों के नेतृत्व में एक औपचारिक प्रस्तावना वाचन और शपथ ग्रहण समारोह के साथ हुई, जिसके दौरान संकाय और छात्रों ने राष्ट्र की संप्रभुता और अखंडता को बनाए रखने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में प्रो. संजीव बंसल (प्रबंधन एवं मानविकी विभाग) का एक विशेषज्ञ व्याख्यान भी शामिल था, जिन्होंने संविधान सभा पर एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया और मौलिक अधिकारों के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने छात्रों से अपने अधिकारों का प्रयोग जिम्मेदारी के साथ करने का आग्रह किया।

अपने मुख्य भाषण में, प्रो. कमलेश प्रसाद, डीन, संकाय एवं कर्मचारी कल्याण, और डीन, छात्र कल्याण के प्रभारी, ने निदेशक प्रो. मणिकांत पासवान के नेतृत्व में संस्थान के विकास में अनुच्छेद 51ए में उल्लिखित मौलिक कर्तव्यों का पालन करने के महत्व पर बल दिया। प्राचीन भारतीय ज्ञान और संस्कृत श्लोकों का हवाला देते हुए, उन्होंने युवा टेक्नोक्रेट्स से प्रभावी समय प्रबंधन के माध्यम से सामाजिक उत्थान और राष्ट्र निर्माण के लिए अपने कौशल का उपयोग करने का आह्वान किया।

इस कार्यक्रम में प्रो. सुरिंदर सिंह, डीन, (अनुसंधान और परामर्श) और प्रो. कमलेश कुमारी, डीन, (योजना और विकास) की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ, जिससे उपस्थित लोगों में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता की नई भावना जागृत हुई।

श्री सालासर जी और श्री खाटू श्याम जी से ज्योतियां लाने के लिए भक्तों का जत्था रवाना हुआ

विशाल जागरण सनातन जागृति की लहर : प्रदीप मेनन

अगर सेवा समिति सालासर में धर्मशाला बनाती है, तो 5 लाख रुपये का फंड दिया जाएगा : विनरजीत गोल्डी

सुनाम उधम सिंह वाला, 29 नवंबर (जगसीर सिंह) - सुनाम से भक्तों का एक जत्था 6 दिसंबर को सुनाम की नई अनाज मंडी में स्थानीय श्री गीता भवन द्वारा आयोजित किए जाने वाले जागरण के लिए श्री सालासर और श्री खाटू श्याम जी से ज्योतियां लाने के लिए रवाना हुआ। इस समय आम आदमी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और कैबिनेट मंत्री अमन अरोड़ा, ऑल इंडिया ब्राह्मण फेडरेशन के चीफ पैट्रन श्री प्रदीप मेनन, शिरोमणि अकाली दल और हलका इंचार्ज विनरजीत सिंह गोल्डी, बीजेपी नेता श्री अमित कंसल और कई अन्य प्रमुख हस्तियां मौजूद थीं। इस मौके पर श्री अमन अरोड़ा ने कहा कि सेवा समिति की तरफ से बहुत अच्छी कोशिश की जा रही है और आज हम सभी भक्त इस इवेंट में हिस्सा ले रहे हैं, हमें बहुत खुशी है। इस समय शिरोमणि अकाली दल के हलका इंचार्ज स. विनरजीत सिंह गोल्डी ने कहा कि अगर समिति सालासर में धर्मशाला बनाती है तो उनकी तरफ से 5 लाख रुपये का फंड दिया जाएगा । इस मौके पर ब्राह्मण सभा के नेता प्रदीप मेनन ने कहा कि यह जागरण सनातन जागृति का एक मूवमेंट है। पिछले दो सालों में सुनाम में इस जागरण में संख्या में संगत इकट्ठा होती है और यह मूवमेंट लगातार बढ़ रहा है। इस समय श्री बाला जी खाटू शाम सेवा समिति के साहिल गर्ग बबलू, पुनीत गोयल, डॉ. शुभम ने कहा कि यह विशाल जागरण सभी शहरवासियों के सहयोग से किया जा रहा है।

स्मृतियों की सुगंध और गाँव का हृदय,हमारी संस्कृति रिश्तों की डोर,

डॉ.मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़
हरदा मध्य प्रदेश

उम्र की साँझ ढल रही है, और जीवन की दौड़ अब थमने लगी है। इस ठहराव में, दिल बार-बार एक ही ठिकाने की ओर मुड़ता है—वो ठिकाना, जहाँ हमारी आत्मा की नींव पड़ी थीः हमारा गाँव। यह केवल ईंट और मिट्टी का ढाँचा नहीं था, यह जीवन का संपूर्ण कैनवास था, जो आज भी अपनी गंध, अपनी ध्वनि और अपने रंग से हमारे हृदय को भाव-विह्वल कर देता है।

पीपल, नीम और वो ठंडी छाँव

गाँव का दृश्य शुरू होता है पीपल और नीम के विशाल वृक्षों से। पीपल, जिसके नीचे बैठकर दादाजी शाम को हुक्का गुड़गुड़ाते थे और गाँव के लोग चौपाल लगाते थे। उसकी ठंडी, पवित्र छाँव... वो केवल धूप से राहत नहीं थी, वो एक सुरक्षा कवच थी। और नीम, जिसकी कड़वाहट ने हमें रोगों से बचाया और जिसकी टहनियाँ हमारी दातुन बनीं। ये पेड़ महज़ वनस्पति नहीं थे, ये हमारे परिवार के सदस्य थे, हमारी संस्कृति के प्रतीक।

रिश्तों की डोर और बाबूजी

गाँव का जीवन रिश्तों की घनी पगडंडी थी। सबसे पहले याद आते हैं बाबूजी। उनका सख्त अनुशासन, लेकिन आँखों में भरा असीम स्नेह। उनकी पगड़ी और खेतों में उनके पसीने की गंध, जो हमें ईमानदारी और मेहनत का पाठ पढ़ाती थी। फिर दादी, जिनकी झुर्रीदार हथेलियों में दुनिया की सबसे बड़ी ममता थी। वो चूल्हे की धीमी आँच पर पकती कहानी सुनाती थीं, जहाँ राजा-रानी और परियों की बातें हमें सपनों की दुनिया में ले जाती थीं। और हमारे दोस्त! वे नदी की मछली की तरह चंचल थे। गिल्ली-डंडा, कंचे, और खो-खो का वो उन्मुक्त खेल। आज की वर्चुअल दोस्ती के दौर में, उस मिट्टी पर एक साथ बैठने और दुःख-सुख बाँटने वाले दोस्तों की जगह कोई नहीं ले सकता।

अमराई, नदियाँ और संस्कृति का रंग

गाँव की पहचान थी उसकी प्रकृति। नदियाँ, जो जीवनदायिनी थीं। उन नदियों के किनारे घंटों बैठना, पत्थर उछालना, या गर्मी की छुट्टियों में तैरना—वो सब आज भी रोमांच से भर देता है। नदी केवल जलधारा नहीं थी, वह हमारी आत्मा का दर्पण थी।

और हाँ, वो अमराई (आम का बगीचा)! गर्मियों में आम की कच्ची खटास और पके आमों की मिठास! अमराई में छिपा-छिपी खेलना और टूटी हुई डालियों से आम चुराकर खाने का जो मज़ा था, वो आज बड़े-से-बड़े मॉल में भी नहीं मिलता। गाँव की संस्कृति उसके रगों में थी। तीज-त्योहारों का इंतज़ार साल भर रहता था। होली पर फाग गाना, दिवाली पर मिट्टी के दिए जलाना, और सावन में झूला डालना। ये सिर्फ़ रस्में नहीं थीं, ये एक सामुदायिक जीवन का उत्सव था, जहाँ पूरा गाँव एक परिवार बन जाता था।

गुरुजी और जीवन का ज्ञान

कैसे भूल सकते हैं अपने गुरुजनों को? स्कूल का वह साधारण कमरा, जहाँ गुरुजी छड़ी के भय से नहीं, बल्कि अपने ज्ञान और सम्मान से राज करते थे। उन्होंने किताबी ज्ञान के साथ-साथ जीवन का व्यवहारिक ज्ञान भी दिया। उन्होंने सिखाया कि मेहनत का फल मीठा होता है, और अनुशासन ही जीवन की कुंजी है।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

मेरी और मेरा गांव,

1. वो मेरा बचपन और खेत

वो बचपन की यादें, वो खेतों की मिट्टी,
जहाँ पैरों तले मेरे थी मेरी प्यारी धरती।
वो मेंढ़ों पे चलना, वो बेफ़िक्रि हँसना,
हरियाली से लिपटा था, जीवन की हर रिश्ता।
वो दूर तक फैले, सरसों के पीले खेत,
जैसे धरती ने ओढ़ी हो सोने की चादर।
उछालना कूदना भागना पतंगें उड़ाना,
ना फिक्र थी कल की, ना दुनिया दारी की।
पिताजी का हल चलाना खेतों में,
और पीछे-पीछे मेरा दौड़कर जाना।
वो बैलगाड़ी की घर्र-घर्र, धीमी आवाज़,
लगता है जैसे कोई मीठा पुराना गाना।
वो पेड़ों की छाँव में बैठकर खाना,
वो माँ के हाथ की ठंडी, रोटी और अचार।
पानी पीने को दौड़ना, कुएँ के पास,
था सबसे अच्छा हर दिन एक त्यौहार।
वो बर्रे और तितली, वो मेंढकों का शोर,
वो खेत के किनारे आम जामुन का पेड़।
वो गीली दूब पर गिरना, फिर उठकर चलना,
बस यही था अपना, सबसे अमूल्य पल।
अब शहरों में 'पार्क' हैं, 'फुटबॉल' का मैदान,
मगर उस खुली हवा की, खुशबू कहाँ है?
वो मेरा भोला बचपन, वो खेतों की बातें,
अब बस तस्वीरों में, और यादों में ही ज़िदा है।

2. भूली-बिसरी यादें

वो बरगद की जटाएँ अब भी बुलाती हैं,
जहाँ बचपन ने अपनी महफ़िल सजाई थी।
वो कच्चे घर, वो पुरानी टूटी मेड़,
इन शहरों की चकाचौंध में, क्यों याद आई हैं?
वो मिट्टी के खिलौने, वो काग़ज़ की नाव,
बारिशों में बहते थे गली के हर मोड़ पर।
अब 'ऑनलाइन' खेल हैं, हाथों में गैजेट,
वो सादगी के दिन किस तिजोरी में खोए हैं?
वो दादी का चरखा, वो कहानी वाली रातें,
चाँद की रोशनी में जब नींद आती थी।
अब 'सीरीज़' और 'शोज़' में उलझी हैं आँखें,
वो लोरी का जादू कहाँ ढूँढ पाएंगे?
वो खेत की पगडंडी, वो पशुओं की आहट,
सवेरे उठकर जब गलियों से गुज़रती थी।
अब गाड़ियों का धुआँ, और भागमभाग है,
वो सुबह की ताजगी किस हवा में मिलेगी?
वो होली का हुड़दंग, वो त्योहारों पर मिलना,
जब पूरा गाँव एक छत के नीचे आता था।
अब 'पार्टी हॉल' हैं, सब हैं अपने में मशगूल,
वो रिश्तों का गर्माहट कहाँ महसूस होगी?
ये आँखें बंद करूँ तो अब भी दिखता है,
वो भूला हुआ गाँव, वो अपनापन भरा प्रेम।
वो समय की गठरी जो पीछे छोड़ आए,
बस उन्हीं यादों के सहारे अब जीए जाते हैं।

विकसित भारत:सुरक्षा आयाम- 60वां अखिल भारतीय पुलिस महानिदेशक/महानिरीक्षक सम्मेलन 29-30 नवंबर 2025

भारत वैश्विक शक्ति बनने की अपनी आकांक्षा को सुरक्षा दृष्टि से भी पूरी मज़बूती के साथ आगे बढ़ानें में सक्षम

60वें सम्मेलन में वामपंथी उग्रवाद आतंकवाद -निरोध, आपदा प्रबंधन,महिला सुरक्षा साइबर अपराध और फोरेंसिक विज्ञान एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग पर चर्चा मिल का पत्थर साबित होगी- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर भारत की आंतरिक सुरक्षा संरचना को अधिक मजबूत, अधिक तकनीक -आधारित और अधिक भविष्य- संवेदी बनाने की दिशा में 60वां अखिल भारतीय पुलिस महानिदेशक एवं महानिरीक्षक सम्मेलन एक ऐतिहासिक पड़ाव के रूप में उभर कर सामने आया है। यह सम्मेलन 28 से 30 नवंबर 2025 तक नया रायपुर स्थित भारतीय प्रबंधन संस्थान में आयोजित हो रहा है। इसमें देश के गृह मंत्री पहले ही शामिल हो चुके हैं, जबकि प्रधानमंत्री 29 और 30 नवंबर को अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगे। इतने उच्च-स्तरीय नेतृत्व की प्रत्यक्ष भागीदारी यह दर्शाती है कि भारत में सुरक्षा प्रशासन अब केवल कानून-व्यवस्था तक सीमित मुद्दा नहीं रहा,बल्कि विकसित भारत के व्यापक राष्ट्रीय दृष्टिकोण का अभिन्न और केंद्रीय घटक बन चुका है। विकसित भारतः सुरक्षा आयाम विषय-सार इस सम्मेलन की यही भावी और बहु-आयामी दिशा दर्शाता है।इसमें वामपंथी उग्रवाद आतंकवाद-निरोध,आपदाप्रबंधन महिला सुरक्षा, साइबर-अपराध और फोरेंसिक विज्ञान एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग जैसे विषयों पर गहन विचार-विमर्श हो रहा है। इन सभी क्षेत्रों में पिछले वर्षों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, और अब आवश्यकता है कि इन उपलब्धियों को एकीकृत कर एक ऐसे सुरक्षित भारत का निर्माण किया जाए, जो वैश्विक शक्ति बनने की अपनी आकांक्षा को सुरक्षा दृष्टि से भी पूरी मजबूती के साथ आगे बढ़ा सके।यह सम्मेलन मूलतःएक ऐसे संवादात्मक मंच के रूप में विकसित हुआ है जहां राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े उच्चतम स्तर के निर्णयकर्ता पुलिस प्रशासन की वास्तविक चुनौतियों पर खुलकर चर्चा करते हैं।भारत जैसे विशाल, विविधतापूर्ण और निरंतर परिवर्तनशील देश में सुरक्षा चुनौतियाँ स्थिर नहीं हैं; वे लगातार रूप बदलती हैं, क्षेत्र विशेष के हिसाब से अपना अलग रूप लेती हैं और समय-समय पर तकनीकी, सामाजिक और भू-राजनीतिक स्वरूपों में विकसित भी होती रहती हैं। ऐसे वातावरण में पुलिस बलों के बीच अनुभवों का साझा होना, विभिन्न राज्यों के मॉडल का तुलनात्मक अध्ययन, और केंद्र तथा राज्य सरकारों के स्तर पर एक एकीकृत राष्ट्रीय सुरक्षा दृष्टिकोण तैयार करना अत्यंत आवश्यक है। यह सम्मेलन वर्षों से इसी भूमिका को निभाता आया है,मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूँ कि 2025 का यह संस्करण अधिक महत्त्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि भारत अब 2030 तक विकसित राष्ट्र की श्रेणी में पहुँचने का लक्ष्य ले चुका है,और विकसित राष्ट्र बनने का अर्थ आर्थिक उन्नति भर नहीं, बल्कि उच्च स्तरीय घरेलू सुरक्षा संरचना भी है।

साथियों बात अगर हम इस वर्ष क़े सम्मेलन की करें तो यह वामपंथी उग्रवाद पर विशेष ध्यान केंद्रित कर रहा है। पिछले एक दशक में वामपंथी हिंसा में उल्लेखनीय कमी आई है, लेकिन पूरी तरह से इसका उन्मूलन अभी शेष है। सुरक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि वामपंथी उग्रवाद केवल पुलिस युद्ध नहीं है;यह सामाजिक विश्वास बहाली विकास की पहुंच,स्थानीय शासन के सुदृढ़ीकरण और सामुदायिक भागीदारी से भी जुड़ा हुआ मुद्दा है।यही कारण है कि इससम्मेलन में वामपंथी गतिविधियों के मूल कारणों की समीक्षा,प्रभावित क्षेत्रों में आधारभूत ढांचे के विकास, सुरक्षा बलों के बेहतर संसाधन,और स्थानीय प्रशासन के समन्वय पर गहरी चर्चा हो रही है। इसके साथ ही ड्रोन, उपग्रह निगरानी और एआई- आधारित पैटर्न विश्लेषण जैसे आधुनिक उपकरणों द्वारा उग्रवाद-निरोध को अधिक प्रभावी बनाने पर भी विचार किया जा रहा है।आतंकवाद निरोध एक ऐसा क्षेत्र है, जिसे केवल जमीनी संघर्ष के रूप में नहीं देखा जा सकता।आधुनिक आतंकवाद अंतरराष्ट्रीय फंडिंग नेटवर्क, साइबर रिक्रूटमेंट, एनक्रिप्टेड कम्युनिकेशन और ड्रोन-आधारित हमलों जैसे नए रूपों में उभर रहा है।भारत के सामने चुनौती यह है कि वह वैश्विक आतंकवाद के इन नए चेहरों से निपटने के लिए अपने सुरक्षा संसाधनों को तकनीकी और वैचारिक दोनों स्तरों पर आधुनिक बनाए। सम्मेलन में यह चर्चा हो रही है कि आतंकवाद विरोधी तंत्र को मजबूत करने के लिए सूचना- साझाकरण तंत्र (इंटेलिजेंस शेयरिंग) को और अधिक समन्वित,तेजी से क्रियाशील और प्रौद्योगिकी-सक्षम बनाया जाए। साथ ही,कट्टरपंथ से लड़ने के लिए सामाजिक -मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर भी विशेष जोर दिया जा रहा है।

साथियों बात अगर हम इसके समानांतर,आपदा प्रबंधन भी इस सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण विषय है इसको समझने की करें तो जिस प्रकार जलवायु परिवर्तन प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता बढ़ा रहा है, उससे पुलिस और सुरक्षा प्रशासन की भूमिका और चुनौती दोनों ही विस्तृत हुई हैं। बाढ़, भूकंप, तूफान, भूस्खलन और शहरी आग जैसी घटनाओं में पुलिस बल न केवल राहत और बचाव कार्यों में प्रथम उत्तरदाता के रूप में कार्य करता है,बल्कि संचार समर्थन, कानून-व्यवस्था बनाए रखने, तथा भीड़-प्रबंधन में भी उसका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस सम्मेलन में यह विचार किया जा रहा है कि पूरे देश में आपदा-प्रबंधन के लिए पुलिस बलों को किस प्रकार आधुनिक तकनीक, प्रशिक्षण और संसाधनों से लैस किया जाए, जिससे बड़ी त्रासदियों में त्वरित प्रतिक्रिया सुनिश्चित की जा सके। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक समन्वित योजना की आवश्यकता है, जिसमें केंद्रीय पुलिस बलों और राज्य पुलिस के बीच स्पष्ट भूमिकाएँ और तकनीकी सहायता संरचनाएँ निर्धारित हों।

साथियों बात अगर हम महिला सुरक्षा को वर्तमान स्थिति में समझने की करें तो, 21वीं सदी में किसी भी आधुनिक और विकसित राष्ट्र की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है।भारत में महिला सुरक्षा के लिए अनेक योजनाएँ और तंत्र पहले से संचालित हो रहे हैं, लेकिन इस सम्मेलन का उद्देश्य इन योजनाओं का मूल्यांकन करना और एक समन्वित राष्ट्रीय दृष्टिकोण तैयार करना है ताकि महिला सुरक्षा न केवल शहरी क्षेत्रों में, बल्कि ग्रामीण और दूरस्थ इलाकों में भी समान रूप से सुनिश्चित हो। इसमें पुलिस की संवेदनशीलता प्रशिक्षण, महिला हेल्पलाइन सेवाओं का विस्तार, त्वरित जांच व्यवस्था, फोरेंसिक सहायता का बढ़ा हुआ उपयोग, और ऑनलाइन अपराधों से सुरक्षा जैसे पहलुओं को प्राथमिकता दी जा रही है। महिलाओं के खिलाफ अपराधों की जांच अक्सर देरी का शिकार होती है, क्योंकि पारंपरिक जांच पद्धतियाँ अत्यधिक समय लेने वाली होती हैं;इसीलिए फोरेंसिक विज्ञान और एआई-आधारित उपकरणों का उपयोग भविष्य की पुलिसिंग में अनिवार्य भूमिका निभाएगा।

साथियों बात अगर हम फोरेंसिक विज्ञान और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग को

समझने की करें तो,यह इस सम्मेलन का सबसे नवोन्मेषी और आधुनिक पहलू है। विकसित देशों में फोरेंसिक- सक्षम पुलिसिंग अब अपराध नियंत्रण की मूलधारा बन चुकी है। भारत में भी 2023 के बाद से फोरेंसिक अनिवार्यता कानून लागू होने से बड़े अपराधों में वैज्ञानिक जांच प्रणाली को अनिवार्य किया गया है।2025 के इस सम्मेलन में यह चर्चा हो रही है कि फोरेंसिक लैब्स को वैश्विक मानकों पर कैसे विकसित किया जाए, डीएनए प्रोफाइलिंग, डिजिटल फोरेंसिक, साइबर- ट्रैकिंग और एआई-आधारित फेसियल रिकॉग्निशन जैसे क्षेत्रों में नए मानक कैसे स्थापित किए जाएं। एआई न केवल अपराध की जांच में मदद करेगा बल्कि अपराध की भविष्यवाणी, ट्रैफिक प्रबंधन, भीड़ नियंत्रण और आतंकवादी गतिविधियों के डेटा पैटर्न के विश्लेषण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इससे पुलिस की कार्यकुशलता बढ़ेगी, जांच तेजी से पूरी होगी और न्याय व्यवस्था अधिक विश्वसनीय बनेगी।इस सम्मेलन का एक व्यापक उद्देश्य यह भी है कि पुलिस बलों के बीच परिचालन अवसंरचनात्मक और कल्याणकारी चुनौतियों पर सामूहिक चर्चा हो। पुलिस व्यवस्था आज जिस तरह के दबावों में कार्य करती है, वह किसी भी लोकतांत्रिक देश की सुरक्षा-व्यवस्था की केंद्रीय धुरी है। लंबे कार्य घंटे, संसाधनों की कमी, तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव, आवास एवं परिवार कल्याण से जुड़ी समस्याएँ, और आधुनिक उपकरणों की पर्याप्त उपलब्धता न होना,ये सभी मुद्दे पुलिसिंग की गुणवत्ता पर प्रभाव डालते हैं। सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य एक ऐसा वातावरण बनाना है जहां पुलिस बलों को अत्याधुनिक उपकरण, बेहतर प्रशिक्षण, मानसिक स्वास्थ्य समर्थन, और पेशेवर उन्नयन के अवसर प्राप्त हों।सम्मेलन में राष्ट्रीय स्तर पर एक दूरदर्शी सुरक्षा रोडमैप तैयार करने पर भी विचार किया जा रहा है। विकसित भारत की अवधारणा केवल आर्थिक समृद्धि से नहीं,बल्कि एक सुरक्षित समाज,सुव्यवस्थित कानून-व्यवस्था,सुचारु प्रशासन, और नागरिकों के अधिकारों की संपूर्ण सुरक्षा से ही संभव है। एक सुरक्षित भारत ही आर्थिक निवेश आकर्षित कर सकता है, वैश्विक व्यापार के लिए अनुकूल वातावरण बना सकता है और सामाजिक सद्भाव को मजबूत कर सकता है। इस दृष्टि से यह सम्मेलन भविष्य के भारत की सुरक्षा संरचना को परिभाषित करने वाला एक निर्णायक अवसर है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे कि 60वां अखिल भारतीय पुलिस महानिदेशक/महानिरीक्षक सम्मेलन भारत की आंतरिक सुरक्षा यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह सम्मेलन न केवल वर्तमान चुनौतियों की समीक्षा कर रहा है, बल्कि सुरक्षा प्रशासन के लिए एक नए युग की शुरुआत का संकेत दे रहा है, एक ऐसा युग जिसमें तकनीक, वैज्ञानिक जांच,मानव-केंद्रित पुलिसिंग,सामाजिक संवेदनशीलता,राष्ट्रीय सहयोग और वैश्विक सुरक्षा मानकों का सम्मिलन होगा। यह सम्मेलन एक सुरक्षित, सक्षम और विकसित भारत की दिशा में भारत की सुरक्षा नीति को एक समन्वित, वैज्ञानिक और दूरदर्शी रूप देने की दिशा में निर्णायक भूमिका निभा रहा है।

अयोध्या कांड : हिन्दू राष्ट्र की ओर बढ़ने की हड़बड़ी में संघी कुनबा

(आलेख : बादल सरोज)

लोकसभा चुनाव के पहले अभूतपूर्व तामझाम के साथ अयोध्या में जिस राम मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा हो चुकी थी, अचानक 22 महीने बाद उसके ध्वजारोहण के नाम पर हुआ आयोजन सिर्फ एक रस्मी कार्यक्रम नहीं है, धार्मिक आयोजन तो बिलकुल भी नहीं है। मूर्तियों और मंदिरों में विश्वास करने वाली धार्मिक परम्पराओं में प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही सब कुछ पूरा हुआ मान लिया जाता है। उद्घाटन के नाम पर गर्भगृहों में फीते नहीं कटते। मूर्तियों के अनावरण नहीं होते। इतने लम्बे अंतराल के बाद झंडे नहीं फहराए जाते। इसके बाद भी बाकी जो भी होता है, वह संबंधित धर्म के प्रमुख आचार्यों द्वारा निर्धारित अनुष्ठानों से होता है -- राजा-महाराजाओं के हाथों या राजनेताओं के कर कमलों से नहीं होता। मगर यह बात जब प्राण प्रतिष्ठा के समय नहीं मानी गयी थी, तो कथित ध्वजारोहण के समय तो सवाल भी नहीं उठता।

कुल मिलाकर यह कि 2025 की 25 नवम्बर को अयोध्या में जो हुआ, वह जो दिखा या दिखाया गया, उससे ज्यादा जो कहा और बताया गया, उसमें निहित और समाहित संदेश में पढ़ना और समझना होगा। इस दिन अयोध्या में दिए गए भाषणों की पंक्तियों के बीच छुपे शब्द जो भाव व्यक्त करते हैं, वे लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष, संघीय गणराज्य भारत के लिए -- जैसा कि इस दिन दिए भाषण में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है -- सही में 'टर्निंग पॉइंट' हैं।

इस मंदिर निर्माण के कथित रूप से पूर्ण होने के लिए 10 फीट चौड़े और 20 फीट लम्बे भगवा ध्वज को फहराए जाने के पीछे के धर्मेतर मंतव्य को दिखावे के लिए भी नहीं छुपाया गया। उसके राजनीतिक उद्देश्य को खुद प्रधानमंत्री मोदी ने साफ़-साफ़ शब्दों में स्पष्ट करते हुए कहा कि, ''यह धर्म ध्वज सिर्फ एक झंडा नहीं है । यह भारतीय सभ्यता के पुनरुत्थान का प्रतीक है। इसका केसरिया रंग, सूर्यवंश का चिन्ह, पवित्र 'ॐ', और कोविदार वृक्ष मिलकर, राम राज्य की भव्यता को दर्शाते हैं। यह ध्वज एक प्रतिज्ञा, एक उपलब्धि और संघर्ष से सृजन तक की यात्रा का प्रतीक है, सदियों की तपस्या का साकार रूप है ।'' बची-खुची कसर समारोह के तीसरे वक्ता मुख्यमंत्री योगी ने पूरी कर दी और दावा किया कि ''मंदिर के शिखर पर फहराता केसरिया ध्वज केवल एक पताका नहीं, बल्कि धर्म, मर्यादा, सत्य-न्याय और राष्ट्रधर्म का भी प्रतीक है।''

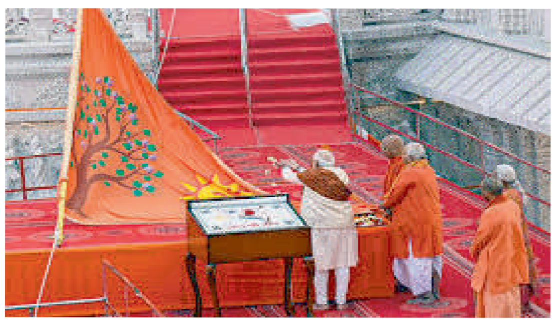

कहने की आवश्यकता नहीं कि मोदी जिस पुनरुत्थान की बात कर रहे हैं, वह कुछ हजार वर्ष में बनी और समृद्ध हुई समावेशी भारतीय सभ्यता का नहीं, बल्कि जिस संगठन का वे प्रतिनिधित्व करते है, उसकी धारणा का दोहराया जाना है। जिस भारत के वे प्रधानमंत्री है, उस देश के एक राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आने का विलोम है, जिस संविधान के तहत वे इस पद पर बैठे हैं, उस संविधान का निषेध है। यह विकसित भारत की नहीं, उस उस हिन्दू राष्ट्र की संकल्पना है, जिसे इस देश की जनता हमेशा से ठुकराती रही है। उसी हिन्दू राष्ट्र की मंशा, 25 नवम्बर को इस रूप और सार दोनों में अभिव्यक्त हो रही थी।

धार्मिक विविधताओं की भरी-पूरी विरासत वाले, शैव, शाक्त, वैष्णव धर्मों सहित बौद्ध, जैन, सिख की पुरानी और मजबूत परम्पराओं और इस्लाम, ईसाई, पारसी आदि की न जाने कब से मौजूदगी वाले देश में, धर्म की सिर्फ एक धारा को राष्ट्र धर्म बताना और भगवा ध्वज को भारतीय सभ्यता के पुनरुत्थान का पर्याय बताते हुए व्यवहार में उसे राष्ट्र ध्वज से भी ऊंचे स्थान पर बैठाना वाकई एक टर्निंग पॉइंट है -- एक खतरनाक टर्निंग पॉइंट। यह काम जिस संगठन आरएसएस के प्रमुख की विशेष उपस्थिति में किया जा रहा था, वह शुरू से यही मानता और कहता रहा है। यह राष्ट्रीय ध्वज को भगवा से प्रस्थापित करने की प्रक्रिया का टर्निंग पॉइंट है।

याद दिलाने की जरूरत है कि तिरंगा झंडा भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में शहादतों के बीच कुर्बानियों के प्रतीक के रूप में उभर कर, राष्ट्रीय ध्वज के रूप में सामने आया था। आजादी के महासंग्राम में भाग लेने से बचने वाले, इंग्लैंड की महारानी को माफीनामे की चिट्ठियां लिखने और पूरे समय अंग्रेजी राज की हिमायत करने वाले, इस कुनबे के इस तिरंगे झंडे के बारे में कितने उच्च विचार हैं, इस बारे में पहले भी लिखा जा चुका है, मगर ताजे सन्दर्भ में उसे दोहराने में भी हर्ज नहीं।

इन्होंने उस समय लिखा-पढ़ी में कहा था कि, ''जो लोग किस्मत के दांव से सत्ता में आ गए हैं, वे हमारे हाथ में तिरंगा दे सकते हैं, लेकिन इसको हिंदुओं द्वारा कभी अपनाया नहीं जाएगा और न ही इसका कभी हिंदुओं द्वारा सम्मान होगा।'' इनके तब के प्रमुख गोलवलकर ने तो यहां तक बोला था कि, ''तीन का अंक और शब्द ही अपने आप में एक बुरा अपशकुन है। इसलिए तीन रंगों वाले झंडे का निश्चित रूप से एक बहुत बुरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव होगा और यह देश के लिए हानिकारक साबित होगा।'' इसे विदेशी नक़ल तक बताया था और इसके हरे रंग को मुसलमानों का करार दिया था। बाईस महीने पहले बन चुके राम मन्दिर के उद्घाटन के बहाने भगवा का महिमा गान उसी पुराने आख्यान को विमर्श में लाने का यत्न है। एक राष्ट्र, एक धर्म, एक नस्ल, एक भाषा, एक संस्कृति की शुद्ध अभारतीय धारणा के लिए, राम के प्रति लोगों की आस्था और उनके धार्मिक विश्वास के दुरुपयोग का प्रयत्न है।

बात सिर्फ यहीं तक नहीं है। खुद प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषण में इसे और भी खतरनाक मुकाम तक पहुंचाने का साफ़-साफ़ संकेत दिया है। उन्होंने संविधान को भी निशाने पर लेते हुए बोला कि ''कहा जाता है कि हमारा संविधान विदेशी संविधानों से प्रेरित है।'' उन्होंने न तो यह बताया कि ऐसा कौन कहता है, ना उन्होंने ऐसा कहे जाने को गलत ही बताया। भारत को लोकतंत्र की जननी बताने, लोकतंत्र हमारे डीएनए में है, के गोल-मोल दावे के साथ बात अधूरी ही छोड़ दी। इस छोड़े गए हिस्से को संदर्भों के साथ पढ़ने के बाद ही उनकी असली मंशा पर पहुंचा जा सकता है।

दोहराने की जरूरत नहीं कि यह आरएसएस ही था, जिसे यह संविधान कभी नहीं भाया। इसने संविधान सभा के गठन का ही विरोध किया था और खुले आम यह मांग की थी कि स्वतन्त्रता के बाद के भारत को, भारत के हजारों साल पुराने संविधान -- मनुस्मृति -- के मुताबिक़ चलाया जाना चाहिए। ये संघ और उसके तबके प्रमुख गोलवलकर ही थे, जिन्होंने बार-बार भारत के संविधान को पश्चिमी देशों की नक़ल बताया था। मोदी अब लोकतंत्र की जननी होने का दावा कर रहे हैं, लेकिन उनके संघ ने सार्वत्रिक बालिग़ मताधिकार को मुण्ड-गणना कह कर धिक्कारा था। उनके बाद बने हर सरसंघचालक ने संविधान को बदलने की बात बार-बार दोहराई। इस संदर्भ के साथ 25 नवम्बर को प्रधानमंत्री मोदी के ''अगले 10 वर्षों में भारत को 'गुलामी की मानसिकता' से मुक्त करने'' के आह्वान का असली निहितार्थ समझा जा सकता है। यहां मैकाले की शिक्षा पद्धत्ति का हवाला देकर अपनी बात को प्रामाणिकता देने के पीछे भी उनका आशय क्या है, यह कुछ दिन पहले रामनाथ गोयनका की स्मृति में दिए व्याख्यान में बता चुके थे, जब उन्होंने उस महान पुरानी शिक्षा प्रणाली का बखान किया था, जिसमें महिलाओं और वर्णाश्रम की निचली पायदानों पर बैठे समुदायों की दशा क्या थी, यह सब जानते हैं।

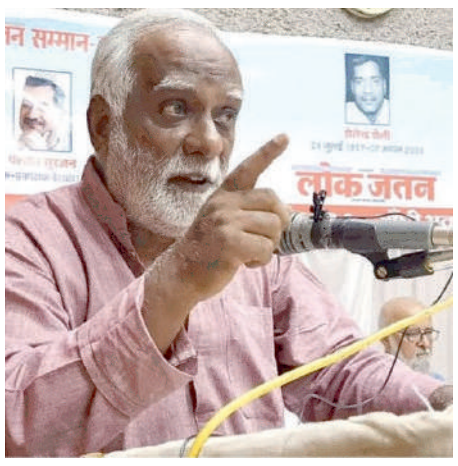

कुल मिला कर 25 नवम्बर का अयोध्या कांड, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100वें वर्ष में भारत को उसके एजेंडे के अनुरूप ढालने की दिशा में गढ़े जा रहे आख्यान का ही एक और रूप था, जो संविधान को बदले बिना ही बदल देने के अन्य तरीकों से भी अमल में लाया जा रहा है।

देश के 44 से अधिक श्रम कानूनों को 4 लेबर कोड्स में बदल देना इसी की एक मिसाल है। बिना विस्तार में जाए सिर्फ सार में कहें, तो ये ऐसे लेबर कोड हैं, जिनमें दिए आधे-अधूरे प्रावधान भी अमल में लाने का कोई तंत्र न देकर श्रमिकों को वास्तविक अर्थों में गुलाम बनाने का रास्ता साफ करते हैं। भारत का संविधान संगठित होने का अधिकार बुनियादी अधिकारों में शामिल करता है, मगर ये लेबर कोड्स उसको भी छीन लेते हैं।

दूसरी मिसाल मतदाता सूचियों के गहन पुनरीक्षण -- एसआइआर -- की है, जिसे स्वयं प्रधानमंत्री मोदी ने वोटर लिस्ट के ''शुद्धिकरण का पुण्य कार्य'' बताया है। उनके कुनबे में शुद्धिकरण का शब्द जिस अर्थ में इस्तेमाल किया जाता है, उस हिसाब से देखें, तो इरादा समझ में आ जाता है। एसआइआर के नाम पर जिन्हें मतदान के अधिकार से वंचित किया जा रहा है, उनमें बहुतायत में वे हैं, जो सामाजिक रूप से उन श्रेणियों में आते हैं, जिन्हें संघ समानता का हक़दार मानना तो दूर रहा, नागरिकता का अधिकार भी नहीं देना चाहता है। इनमें धार्मिक अल्पसंख्यक, दलित, आदिवासी, पिछड़े और गरीब ही हैं, जिनके नाम 'शुद्ध' की गयी सूची से बाहर रह जायेंगे। किसी ने सही कहा है कि एसआइआर चुनाव आयोग द्वारा किया जा रहा रक्तहीन नरसंहार है।

इसी कड़ी में देश के सर्वोच्च न्यायालय का एक ईसाई सैनिक अधिकारी की बर्खास्तगी को 'सही और जायज' ठहराने का चौंकाने वाला फैसला आता है। इस ईसाई धार्मिक पृष्ठभूमि से आने वाले अधिकारी ने मन्दिर के गर्भगृह में होने वाले एक धार्मिक अनुष्ठान में शामिल होने से यह कहकर इंकार कर दिया था कि यह उसकी धार्मिक मान्यता की संगति में नहीं है।

कायदे से तो सर्वोच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीशों को पूछना चाहिए था कि किसी मंदिर में पूजा-पाठ को सेना के काम-काज का अनिवार्य हिस्सा बनाने का आग्रह क्यों किया जा रहा है? मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारे में जाकर पूजा, इबादत, प्रार्थना या अरदास करना सेना का जरूरी काम नहीं है। उसके अधिकारी निजी तौर पर जहां चाहें, वहां जाएं। यह भी कि किस धर्म को मानना है, नहीं मानना है, यह तय करना व्यक्ति का बुनियादी अधिकार है। मगर बजाय ऐसा करने के सर्वोच्च न्यायालय के नए मुख्य न्यायाधीश की खंडपीठ ने इसे 'सैनिक अनुशासन' से जोडक़र संबंधित सैन्य अधिकारी की बर्खास्तगी को ही उचित ठहरा दिया।

यह चिंताजनक परिपाटी को जन्म देने वाला न्यायालयी निर्णय है -- जिसका कितना दुरुपयोग किया जाएगा, यह समझा जा सकता है। संयोग से यह निर्णय उन मुख्य न्यायाधीश ने सुनाया है, जो बताते हैं कि वे हरियाणा के हिसार के स्कूल में पढ़े हैं। उसी हरियाणा में, जहां कुछ महीनों पहले पुलिस के एक आला अधिकारी ने इसलिए आत्महत्या कर ली थी, क्योंकि दलित होने के चलते उसे उसी के द्वारा बनाये गए मंदिर में घुसने के चक्कर में लगातार, भयानक प्रताड़ना झेलनी पड़ी थी। उसे इंसाफ आज तक नहीं मिला।

इस गहरे होते कुहासे के बीच ऐसी ही एक खबर दादरी में निरपराध लिंच कर दिए गए अखलाक के हत्यारों पर लगे सारे आरोप वापस लिए जाने की आयी है। योगी सरकार ने बिना कोई कारण बताये इन हत्यारों को दोषमुक्त घोषित कर के सिर्फ इन अपराधियों को ही राहत नहीं दी है -- बिना हिन्दू राष्ट्र की घोषणा किये उस दिशा में बढ़ने और भविष्य में इस तरह की हिंसा को अभयदान देने का भी संकेत दिया है।

संघ की स्थापना के शताब्दी वर्ष में एक के बाद एक धड़ाधड़ घट रही इन घटनाओं से साफ़ हो जाता है कि कुनबा कितनी हड़बड़ी में है। इन सब पर कारपोरेट और उसके मीडिया की ख़ामोशी, अब उनकी सहमति से होते हुए संलग्नता तक पहुंच चुकी है। यह सचमुच में भारत के इतिहास के प्रतिकूल और एक देश के रूप में उसकी अवधारणा के खिलाफ है। जनता के बड़े हिस्से में इसकी संक्रामकता इस चिंता को और बढ़ा देती है। इस जहर को ज्यादा गहरे तक फैलने देने की मोहलत कई पीढ़ियों के लिए घातक हो सकती है।

संविधान निर्माता डॉ0 भीमराव आंबेडकर ने कहा था कि ''अगर इस देश में हिंदू राज एक वास्तविकता बन जाता है, तो यह निस्संदेह इस देश के लिए सबसे बड़ी आपदा होगी और एक खौफनाक मुसीबत होगी, क्योंकि हिंदू राष्ट्र का सपना आज़ादी, बराबरी और भाईचारे के खिलाफ है, और यह लोकतंत्र के बुनियादी सिद्धांतों से मेल नहीं खाता है -- हिंदू राज को किसी भी कीमत पर रोका जाना चाहिए।''

अच्छी बात है कि इस सबके बावजूद देश के मेहनतकश अपनी लड़ाई जारी रखे हुए हैं। इसी 26 नवम्बर को देश भर में हुई बड़ी-बड़ी लामबंदियां इसका उदाहरण हैं। समाज के अन्य जागरूक हिस्से भी खतरों को समझ रहे हैं। मगर सिर्फ इतना काफी नहीं है -- जिन्दगी को बेहतर बनाने की लड़ाई, समाज को बेहतर बनाने की लड़ाई से अलग रखकर नहीं जीती जा सकती। लोकतंत्र, संविधान, समानता और मनुष्यता की हिफाजत धर्मनिरपेक्षता, भाईचारे और बहनापे के अहसास को बचा के, हर तरह के शोषण के खिलाफ सजग रुख अपना कर ही की जा सकती है।

नवीन वलित पर्वत: दुनिया के सबसे ख़तरनाक भूभाग और नया भूकंप मानचित्र

भूकंप की दृष्टि से हमारा देश बहुत ही संवेदनशील क्षेत्र में आता है ।इस क्रम में, भारत ने हाल ही में अपना नया राष्ट्रीय भूकंप जोन मैप जारी किया है ।इसके तहत अब पूरे हिमालयी क्षेत्र (जम्मू-कश्मीर से अरुणाचल प्रदेश तक) को पहली बार सबसे उच्च जोखिम-जोन- जोन-VI में रखा गया है, क्योंकि भूवैज्ञानिक विश्लेषण और प्लेट टेक्टोनिक्स (जहाँ भारतीय प्लेट लगातार यूरेशियाई प्लेट से 5 सेंटीमीटर प्रतिवर्ष टकरा रही है) यह दिखाते हैं कि हिमालय में दबाव और भू-स्खलन की संभावना सबसे ज्यादा है ।सरल शब्दों में कहें तो हिमालय दुनिया का सबसे ऊँचा और सक्रिय नवीन वलित पर्वत या यूं कहें कि विश्व के सबसे सक्रिय टकराव क्षेत्रों (कोलिजन जोन्स) में से एक है, जो भारतीय और यूरेशियन प्लेटों के अभिसरण (₹5 सेमी/वर्ष) के कारण निर्मित हुआ है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि नवीन वलित पर्वत वे पर्वत होते हैं, जो टेक्टॉनिक प्लेटों के हाल के टकराव से धरती की परतों के मुड़कर (वलित होकर) ऊपर उठने से बनते हैं तथा जो भूगर्भीय दृष्टि से अपेक्षाकृत नए, ऊँचे व तीखे रूप में दिखाई देते हैं। गौरतलब है कि नवीन वलित पर्वत दुनिया के सबसे ख़तरनाक क्षेत्रों में माने जाते हैं, क्यों कि यहां दो या अधिक टेक्टॉनिक प्लेटें आपस में लगातार टकराने से यहाँ धरती की परतें हमेशा दबाव में रहती हैं और प्राकृतिक खतरों की संभावना बहुत अधिक रहती है। हाल फिलहाल, नये भूकंप मानचित्र के बारे में विशेषज्ञों का कहना है कि यह नया भूकंप मानचित्र सिर्फ एक तकनीकी दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह एक तरह से एक राष्ट्रीय चेतावनी है। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि साल 2025 के नए भूकंप डिज़ाइन कोड में सबसे बड़ा बदलाव यह है कि पूरा हिमालय क्षेत्र अब ज़ोन–VI में रखा गया है, यानी इसे सबसे खतरनाक भूकंप क्षेत्र माना गया है। गौरतलब है कि पुराने मानचित्रों में हिमालय को जोन IV और V में बांटा गया था, लेकिन वास्तविकता में पूरा हिमालयी बेल्ट समान रूप से गंभीर जोखिम वाला है। वास्तव में, नए मानचित्र में उल्लेख है कि भूकंपीय विक्षोभ अब हिमालयन फ्रंटल थ्रस्ट के दक्षिण तक पहुँच सकता है। मोहंड(उत्तराखंड) के पास से शुरू होने वाला यह क्षेत्र अब उच्च जोखिम श्रेणी में है। इसका मतलब है कि गंगा के मैदानी इलाके के कई हिस्से अब पहले की तुलना में अधिक खतरे में हैं। वास्तव में, पहली बार पूरे हिमालय को एक ही उच्च जोखिम वाले ज़ोन में शामिल किया गया है। इसका मतलब साफ है कि भविष्य में इमारतें, सड़कें और शहरी नियोजन या यूं कहें कि अस्पताल, विद्यालय, पुल, पाइपलाइन और अन्य महत्वपूर्ण संरचनाएँ तैयार करने के लिए पहले से कहीं ज्यादा सावधानी और मजबूत योजनाओं की जरूरत होगी ।टाइम्स ऑफ इंडिया की एक रिपोर्ट के मुताबिक, इंडिया अर्थक्वेक ज़ोनिंग मैप-2025 दिखाता है कि अब भारत का करीब 61% भूभाग मध्यम से लेकर बहुत ज्यादा भूकंप-प्रभावित श्रेणी में आता है। राहत की बात यह है कि इस बार मानचित्र पुराने आंकड़ों पर नहीं, बल्कि वर्तमान भू-विज्ञान, धरती की हलचलों और नई वैज्ञानिक स्टडी पर आधारित है। इसलिए इसे कई दशकों में सबसे बड़ा और सबसे आधुनिक सुधार माना जा रहा है। दरअसल, भारतीय मानक ब्यूरो ने नया भूकंप ज़ोनिंग मानचित्र पीएसएचए यानी प्रोबैबिलिस्टिक सीस्मिक हैज़र्ड असेसमेंट मॉडल (संभाव्य भूकंपीय खतरा आकलन) से बनाया है। इसमें जमीन की परतों की मोटाई, प्लेटों के टकराव, फॉल्ट लाइन की गतिविधि, भूकंपीय तरंगों की गति और संभावित अधिकतम भूकंप जैसे कई वैज्ञानिक डेटा का उपयोग किया गया है। इसलिए यह नया मानचित्र पुराने मानचित्रों की तुलना में ज्यादा भरोसेमंद और आधुनिक माना जाता है। यह बात ठीक है कि हिमालय बाहर से शांत दिखता है, लेकिन उसके अंदर लगातार ज़ोरदार भूगर्भीय दबाव बना हुआ है। वहां की फॉल्ट लाइनों यानी कि तीन बड़ी दरारों (फॉल्ट) क्रमशः मेन फ्रंटल थ्रस्ट, मेन बाउंड्री थ्रस्ट तथा मेन सेंट्रल थ्रस्ट, जहां पिछले दो सौ सालों में कोई बड़ा भूकंप नहीं आया है, में अब बड़े भूकंप लाने की ताकत है, जैसा कि वहां अब बहुत सारा दबाव जमा हो चुका है ।इसी कारण पूरे हिमालय क्षेत्र को सबसे अधिक भूकंप-जोखिम वाली श्रेणी में रखा गया है। दूसरे शब्दों में कहें तो हिमालय अब सबसे खतरनाक जोन VI में शामिल किया गया है। पाठकों को बताता चलूं कि ,हिमालय पृथ्वी की सबसे तेज टकराने वाली दो प्लेटों के बीच में है, और भारतीय प्लेट हर साल 5 सेंटीमीटर उत्तर की ओर धकेल रही है। इससे जमीन के अंदर बहुत दबाव बन रहा है ।जब यह दबाव अचानक निकलता है, तो बहुत बड़ा भूकंप आता है। इस बार मानचित्र में एक नया प्रावधान भी जोड़ा गया है, जिसके अनुसार अगर कोई शहर दो भूकंपीय ज़ोन की सीमा के पास आता है, तो उसे खुद उच्च श्रेणी वाले ज़ोन में माना जाएगा ।इससे कई ऐसे शहर, जो पहले कम जोखिम में समझे जाते थे, अब अधिक संवेदनशील क्षेत्रों की सूची में आ गए हैं। गौरतलब है कि नए भूकंप डिज़ाइन कोड 2025 के लागू होने के बाद सभी नई इमारतों को सख्त भूकंप-रोधी नियमों के तहत बनाना अनिवार्य होगा, ताकि अस्पताल, स्कूल, पुल और अहम ढाँचे बड़े भूकंप में भी काम करते रहें। इसमें भारी उपकरणों की सुरक्षित फिटिंग और भवनों की मजबूती पर विशेष जोर दिया गया है। अब भूकंप का जोखिम सिर्फ धरती कितनी तेज हिल सकती है, इससे ही नहीं तय होगा। इसके साथ यह भी देखा जाएगा कि किसी इलाके में कितनी आबादी रहती है, वहां की अर्थव्यवस्था कितनी महत्वपूर्ण है, इमारतें कितनी पास-पास और कितनी मजबूत हैं, और वह क्षेत्र कितना संवेदनशील है ।कुल मिलाकर, भूकंप आने पर वहां कितना नुकसान हो सकता है, इसकी पूरी तस्वीर देखकर खतरे का स्तर तय किया जाएगा। इससे हर शहर के लिए बनाया गया भूकंप-मानचित्र पहले से ज्यादा सटीक, व्यावहारिक और भरोसेमंद होगा। दक्षिण भारत में बदलाव इसलिए कम हैं क्योंकि यह प्रायद्वीपीय इलाका भूगर्भीय रूप से स्थिर माना जाता है और यहां बड़े भूकंप की संभावना अपेक्षाकृत कम होती है। दूसरे शब्दों में कहें तो अब उत्तराखंड, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, सिक्किम, अरुणाचल और पूर्वोत्तर के सारे पहाड़ी इलाके सबसे ज्यादा खतरे में हैं। दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर), गुजरात (कच्छ), बिहार-नेपाल बॉर्डर भी ऊंचे खतरे में हैं, तथा दक्षिण भारत का कुछ हिस्सा ही कम खतरे में बचा है ।इस आलेख में ऊपर चर्चा कर चुका हूं कि भारत के नए भूकंपीय मानचित्र के अनुसार हिमालय क्षेत्र को अब सबसे खतरनाक जोन-6 में रखा गया है, जबकि पहले यह चौथे और पाँचवें जोन में आता था। इसका मतलब है कि यहां बड़े भूकंप का खतरा पहले से ज्यादा माना जा रहा है। भारतीय प्लेट लगातार उत्तर की ओर बढ़कर यूरेशियन प्लेट से टकरा रही है, जिससे हिमालय की ऊँचाई बढ़ती है और धरती के भीतर दबाव जमा होता है और यही दबाव जब टूटता है, तो भूकंप आता है। नए आकलन के आधार पर अब भारत का लगभग 61% हिस्सा मध्यम से गंभीर भूकंप-जोखिम वाले क्षेत्रों में शामिल हो गया है। पहले जोखिम का आकलन पुराने भूकंपों और सामान्य भूवैज्ञानिक जानकारी पर आधारित था, जबकि नई ज़ोनिंग में भूमिगत भ्रंश लाइनों, संभावित अधिकतम भूकंप और जमीन की वास्तविक स्थिति का वैज्ञानिक रूप से मूल्यांकन किया गया है, इसलिए इसे हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। शायद यही कारण है कि अब इंजीनियरों, नगर-योजकों और सरकार को सलाह दी गई है कि वे पुराने (2016) मानचित्र की जगह नए (2025) मानचित्र के अनुसार ही निर्माण करें। अस्पताल, स्कूल, पुल, पाइपलाइन और अन्य महत्वपूर्ण ढाँचे इस तरह से बनाए जाएँ कि बड़े भूकंप के बाद भी काम करते रहें, क्योंकि आबादी का लगभग 75% हिस्सा संवेदनशील क्षेत्रों में रहता है, इसलिए शहरों की योजना, भवन निर्माण और बसावट के तरीके बदलना अब बहुत जरूरी हो गया है, ताकि भविष्य में जान-माल की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। अंत में यही कहूंगा कि भूकंप प्रकृति की ऐसी शक्ति है जिस पर हमारा नियंत्रण नहीं, लेकिन वैज्ञानिक प्रगति ने जमीन की वास्तविक स्थिति को समझने और खतरे का बेहतर अनुमान लगाने की क्षमता जरूर बढ़ा दी है। भूकंप कब आएगा, यह बताना आज भी संभव नहीं, पर सावधानी और तैयारी से बड़े नुकसान को काफी हद तक रोका जा सकता है। इसलिए वैज्ञानिक आकलन पर भरोसा रखते हुए मजबूत निर्माण, जागरूकता और एहतियाती कदम ही हमारी सबसे बड़ी सुरक्षा हैं। प्रकृति को समझकर, उसके साथ तालमेल रखते हुए ही मनुष्य सुरक्षित और संतुलित विकास की राह पर आगे बढ़ सकता है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।

हम सब दोषी हैं: क्योंकि हमने डर को शिक्षा समझ लिया

एक बच्चे ने क्लास में एक छोटी-सी रील बना ली—दो सेकंड की हँसी, एक पल का बचपना। उसे क्या पता था कि वही पल उसकी पूरी ज़िंदगी को तीसरी मंजिल की रेलिंग तक धकेल देगा। प्रिंसिपल के कमरे में खड़ा, कान पकड़कर चालीस से ज्यादा बार "सॉरी मैम" दोहराता हुआ वह बच्चा सिर्फ माफी नहीं मांग रहा था—वह अपनी मासूमियत बचाने की कोशिश कर रहा था। पर न माफी मिली, न समझ। मिला तो सिर्फ सस्पेंशन का डर, मेडल छीन लेने की धमकी और भविष्य को मटियामेट कर देने वाले शब्द। तेरह साल का दिल कितनी चोट झेल सकता है? जितनी हम बड़े समझ लेते हैं, उससे कहीं कम। और फिर वह दौड़ा। सीढ़ियाँ चढ़ीं। तीसरी मंजिल की तरफ गया। और कूद गया।

हम सबने यह खबर पढ़ी। कुछ देर तक दिल बैठा, फिर हम आगे स्क्रॉल कर गए। लेकिन सच्चाई ये है—वो बच्चा किसी दूसरे घर का नहीं था। वो हमारा बच्चा भी हो सकता था। हमारे मोहल्ले का, हमारे स्कूल का, हमारी अपनी दुनिया का हिस्सा। सब सोचते रह गए कि उसने ऐसा क्यों किया। पर किसी ने यह नहीं सोचा कि उस आखिरी मिनट में वह कितना अकेला था—कमरे में बैठा, चारदीवारी के बीच, अपने ही अपराधबोध से घिरा हुआ और डर के पहाड़ तले दबा हुआ। बाहर प्रिंसिपल, टीचर, पिता—सब गुस्से में। और अंदर एक छोटा-सा बच्चा, जिसे लगा कि उसने गलती तो की है, पर अब उसकी सजा शायद मौत से कम हो ही नहीं सकती।

हम बचपन से सुनते आए हैं—गलती करोगे तो डाँट पड़ेगी, सजा मिलेगी। मगर कब समय ने अपनी चाल बदल दी कि "सजा" का मतलब एक बच्चे को इतना तोड़ देना हो गया कि वो अपनी जान लेने पर उतारू हो जाए? कब शिक्षा के मंदिर इतने कठोर हो गए कि मेडल छीनने की धमकी धीरे-धीरे ज़िंदगी छीनने की ओर धकेलने लगी? शायद वो प्रिंसिपल आज भी सोचती होंगी कि उन्होंने "अनुशासन" कायम किया—पर अगर अनुशासन का अर्थ है किसी बच्चे का आत्मविश्वास कुचलकर उसे यह यक़ीन दिला देना कि वह दुनिया के लिए बोझ है, तो उसे अनुशासन नहीं, सीधी-सीधी हिंसा कहते हैं। हमारे स्कूलों में आज भी "मुरगा बनो", "कान पकड़ो", "दीवार के पास खड़े रहो" जैसी पुरानी सज़ाएँ धूल नहीं बनीं—वे आज भी बच्चों की गरिमा का सौदा कर रही हैं। हम इन्हें बड़े आराम से "डिसिप्लिन" कह देते हैं, जबकि ये दरअसल नवपीढ़ी के लिए शर्मिंदगी का कारोबार है। एक बच्चे को सार्वजनिक रूप से अपमानित करना, उसके आत्मसम्मान को रौंदना—ये कोई शिक्षा नहीं। —ये शिक्षा की प्रक्रिया नहीं, उसकी हत्या की शुरुआत है। बस हथियार बदल जाते हैं—कभी डंडा, कभी शब्द, कभी धमकी। पर नतीजा हमेशा वही होता है—एक बच्चे का भीतर से बिखर जाना।

उस दिन रतलाम के उस स्कूल में जो हुआ, वह सिर्फ एक प्रिंसिपल की जिद नहीं थी। वह हमारे पूरे शिक्षा तंत्र की सामूहिक विफलता थी। हम बच्चों को इंसान बनने की बात सिखाते हैं, लेकिन उन्हें परखते ऐसे हैं जैसे मशीनें हों। उनसे कहते हैं—99% लाओ, मेडल लाओ, रैंक लाओ वरना तुम्हारी कोई कीमत नहीं। और अगर ज़रा-सी गलती हो जाए, तो मेडल भी छीन लेंगे, नाम भी काट देंगे और भविष्य का दरवाज़ा भी बंद कर देंगे। हमने अपने ही बच्चों को ऐसा यक़ीन दिला दिया है कि उनकी पहचान उनके अंकों में बंधी है, उनकी इज्ज़त उनकी "परफेक्ट" इमेज की दासी है। जैसे ही वह इमेज टूटती है, बच्चा खुद को कचरा समझने समझने लगता है।

ज़रा सोचिए, तेरह साल की उम्र में बच्चा दुनिया से क्या सीखता है? दोस्ती, खेल, हँसी, शरारत ।ज़िंदगी की हल्की-फुल्की धूप-छाँव। मौत समझने की उसकी उम्र ही नहीं होती। पर हमने उसे मौत भी सिखा दी ।हमने उसे समझा दिया कि मेडल चला गया तो ज़िंदगी खत्म; सस्पेंड हुए तो भविष्य बर्बाद; गलती की तो इंसान नहीं, अपराधी हो गया। लेकिन हमने उसे यह कभी नहीं सिखाया कि गलती करना इंसान होने का प्रमाण है। माफी मांगना कमजोरी नहीं, साहस है। दूसरा मौका कोई इनाम नहीं—हर इंसान का अधिकार है। आज सवाल यह नहीं कि उस स्कूल पर ताला लगे या नहीं। सवाल यह है कि हम अपने भीतर बैठे उस कठोर प्रिंसिपल को कब निकालेंगे—वो जो हर गलती पर डर दिखाता है, हर शरारत पर अपमान देता है, और हर बच्चे को "सीख" नहीं बल्कि सज़ा देने के लिए तत्पर रहता है। हमें समझना होगा कि डर कभी किसी इंसान को नहीं बदलता—डर सिर्फ तोड़ता है, चुप कर देता है, मिटा देता है। बच्चे को डांटना गलत नहीं, उसे समझाना ज़रूरी है—लेकिन उससे पहले उसे ये भरोसा देना ज़रूरी है कि "मैं तुम्हारे साथ हूँ, चाहे तुम कितनी ही बड़ी गलती क्यों न कर लो।" उसका आत्मसम्मान उसकी सबसे कीमती पूँजी है। उसे चोट पहुँचा दी, तो बच्चे का नहीं—पूरी पीढ़ी का भविष्य घायल हो जाता है।

रतलाम वाला बच्चा तो बच गया—हड्डियाँ टूटीं, पर साँसें बचीं। पर कितने बच्चे ऐसे थे जो चुपचाप चले गए, जिनकी खबर तक नहीं बनी, जिनके नाम तक किसी अख़बार की हेडलाइन नहीं बने। हम तब भी यही कहते रहे— "अरे, इतनी-सी बात पर?" क्योंकि वो बात हमें छोटी लगती थी। उन्हें नहीं। उनके लिए वही "छोटी बात" उनकी पूरी दुनिया थी—टूटी हुई, डर से घिरी, उम्मीद से खाली। और अगर हम आज भी चुप रहे, तो कल फिर कोई बच्चा किसी तीसरी मंजिल की ओर भागेगा—किसी और शहर में, किसी और स्कूल में। और हम फिर दो मिनट दुखी होंगे, फिर स्क्रॉल कर देंगे।

इसलिए बस इतना कर लो— जब अगली बार कोई बच्चा गलती करे, उसे गले लगा लेना। धीरे से कहना—"कोई बात नहीं मैं हूँ न।" यकीन मानिए, यही एक वाक्य उसे किनारे से वापस खींच सकता है। हमारा सिस्टम, हमारा अहंकार, "अनुशासन" के नाम पर किया गया हर अत्याचार—सब धरा रह जाएगा। लेकिन अगर हम आज नहीं बदलेंगे, तो इतिहास यही लिखेगा—हम बचपन नहीं बचा सके। और हाँ, इस बार कसूरवार हम ही थे।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

स्क्रीन टाइम का फैलता जाल, बच्चे गहरे संकट में

अमरपाल सिंह वर्मा

राजस्थान के धौलपुर जिले के कुरेंद्रा गांव में 13 साल के विष्णु ने पिता की मामूली डांट के बाद आत्महत्या कर ली। वजह सिर्फ इतनी थी कि वह मोबाइल गेम खेल रहा था और पिता ने टोक दिया। गुस्से में वह अपने कमरे में चला गया और इहलीला समाप्त कर ली। इस घटना ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि भारत के घरों में मोबाइल केवल एक उपकरण नहीं रहा है बल्कि यह रिश्तों के बीच खड़ी एक खाई बनता जा रहा है।

धौलपुर की यह घटना अपनी तरह की अकेला मामला नहीं है। हाल ही में मध्यप्रदेश के झांसी में एक महिला ने अपने आठवीं में पढ़ने वाले बेटे की मोबाइल गेम की लत से परेशान होकर आत्महत्या कर ली। मोबाइल में उलझा बच्चा पढ़ाई नहीं करता था, जिससे उसकी मां डिप्रेशन में थी। उसने पति को भी कहा मगर उन्होंने अनसुना कर दिया। नतीजा, महिला की खुदकुशी के रूप में सामने आया। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में नौवीं कक्षा की एक लडक़ी ने मोबाइल चलाने से रोके जाने पर नदी में कूदकर जान दे दी। थाणे में मोबाइल छीनने पर 16 वर्षीय लडक़े ने सुसाइड कर ली। यूपी के आजमगढ़ के एक गांव में 14 साल का किशोर मात्र इस वजह से फंदे पर झूल गया कि उसे गेम खेलने के लिए फोन नहीं मिला। पिछले साल जयपुर में एक महिला ने बेटी का मोबाइल छिपा दिया। इस बात पर मां-बेटी का झगड़ा हो गया। इसी दौरान मां ने रॉड उठा कर दे मारी, जिससे बेटी की जान चली गई।

मोबाइल फोन की वजह से ऐसे मामले अब हर महीने, हर जिले और हर शहर से सामने आ रहे हैं। स्मार्टफोन अब एक उपकरण मात्र नहीं रहा बल्कि वह बच्चों के दिमाग का मालिक बन गया है और और बच्चों के दिमाग को बदल रहा है। इसकी वजह से बच्चों में शारीरिक समस्याएं भी बढ़ रही हैं।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान रायपुर के एक अध्ययन के मुताबिक भारत में पांच साल से कम उम्र के बच्चे औसतन 2.22 घंटे रोज स्क्रीन पर बिताते हैं। ये समय विश्व स्वास्थ्य संगठन और इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स के सुझाए गए समय से दोगुना है। यह भी चिंताजनक है कि दो साल से कम उम्र के बच्चे भी स्क्रीन पर रोज 1.23 घंटे बिता रहे हैं जबकि इस उम्र के बच्चों के लिए डॉक्टर पूरी तरह नो स्क्रीन के पक्ष में हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि पांच साल से कम उम्र के बच्चों में रोज 1-1.5 घंटे से ज्यादा स्क्रीन टाइम उनके दिमाग के विकास को धीमा कर देता है। इससे भाषा सीखने की गति कम होती है, ध्यान और समझने की क्षमता घटती है, सामाजिक कौशल कमजोर पड़ते हैं और मोटापा और नींद आने की दिक्कतें बढ़ती हैं।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के सहयोग से दिल्ली के दो प्राइवेट स्कूलों के छात्रों पर दो वर्ष तक किए गए अध्ययन की ताजा रिपोर्ट के अनुसार बच्चे और किशोर झुककर घंटों मोबाइल या टैबलेट चला रहे हैं। क्लास रूम में भी छह से सात घंटे बैठने और शारीरिक व्यायाम न के बराबर होने से पॉस्चर और मांसपेशियों और हड्डियों की समस्याएं आ रही हैं।

मोबाइल जनित समस्याएं किस कदर बढ़ रही है, इसे लखनऊ में उत्तरप्रदेश महिला आयोग की जन सुनवाई के उदाहरण से समझा जा सकता है। इस सुनवाई में अब किशोर वय बेटियों की मोबाइल लत से परेशान माएं मदद के लिए पहुंच रही हैं। आयोग की हर सुनवाई में 3-4 मामले ऐसे आते हैं जिनमें महिलाओं का कहना है कि उनकी किशोरवय बेटियां फोन का अत्यधिक इस्तेमाल करती हैं और रोकने पर उनसे झगड़ा, बदसलूकी या हिंसक व्यवहार करती हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार स्मार्टफोन के कारण केवल पढ़ाई नहीं बिगड़ रही है। व्यवहार में आक्रामकता, एकांकीपन, देर रात जागना, ऑनलाइन चैटिंग और वर्चुअल दुनिया में जीना अब 'सामान्य' बनता जा रहा है।

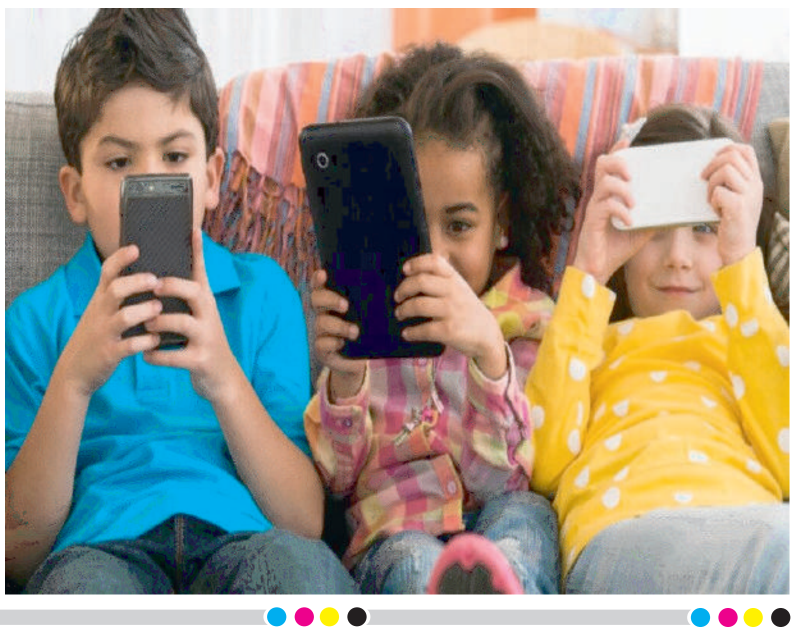

खेलों में भारतीय बेटियों का खुशनुमा दौर: जब बेटियाँ बनीं देश का गौरव

● विजय गर्ग

हाल के वर्षों में भारतीय खेलों के परिदृश्य में एक क्रांतिकारी बदलाव आया है, और इस बदलाव की मुख्य नायक हैं भारत की बेटियाँ। आज, हरमनप्रीत कौर और शेफाली वर्मा से लेकर पीवी सिंधु, मीराबाई चानू, और लवलीना बोरगोहेन तक, महिला एथलीटों ने न केवल अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत का परचम लहराया है, बल्कि लाखों युवा लड़कियों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनी हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि भारतीय खेल एक ₹खुशनुमा दौर₹ से गुजर रहे हैं, जिसकी चमक महिला खिलाड़ियों की अभूतपूर्व सफलता से और भी बढ़ गई है।

उपलब्धियों का नया अध्याय

भारतीय बेटियों ने लगभग हर खेल में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है:

क्रिकेट: भारतीय महिला क्रिकेट टीम की हालिया सफलता, जिसमें वर्ल्ड कप जैसे बड़े खिताब शामिल हैं (जैसे कि 2025 में वनडे और टी-20 वर्ल्ड कप जीतना), महिला क्रिकेट को नई ऊंचाइयों पर ले गई है। इन जीतों ने देश में महिला क्रिकेट के प्रति एक नया जुनून पैदा किया है।

ओलंपिक और वैश्विक मंच: कर्णम मल्लेश्वरी के सिडनी 2000 ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने के साथ शुरू हुआ सफर अब एक मजबूत धारा बन चुका है। पीवी सिंधु (बैडमिंटन), मैरी कॉम (बॉक्सिंग), साक्षी मलिक (कुश्ती), और मीराबाई चानू (भारोत्तोलन) ने लगातार ओलंपिक और विश्व चैंपियनशिप में पदक जीतकर यह साबित किया है कि भारतीय महिलाएँ विश्व स्तर की प्रतिस्पर्धा के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

अन्य खेल: कबड्डी, हॉकी, शूटिंग और एथलेटिक्स जैसे खेलों में भी महिला टीमों और व्यक्तिगत खिलाड़ियों (जैसे रानी रामपाल की कप्तानी में हॉकी टीम या हिमा दास) का प्रदर्शन सराहनीय रहा है।

चुनौतियों से मिली ताकत

यह खुशनुमा दौर यूँ ही नहीं आया। इन महिला खिलाड़ियों में से अधिकांश ने गरीबी, सामाजिक रूढ़ियों और लैंगिक भेदभाव जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना किया है। छोटे शहरों और ग्रामीण परिवेश से निकलकर, जहाँ खेल को अक्सर लड़कियों के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता था, वहाँ से शीर्ष पर पहुँचना उनके अटूट हौसले, इच्छाशक्ति और कठोर परिश्रम का परिणाम है।

प्रेरणादायक कहानियाँ: मैरी कॉम का मुक्केबाजी के लिए संघर्ष, हिमा दास का धान के खेतों से निकलकर ट्रैक पर धूम मचाना, और कई अन्य खिलाड़ियों की कहानियाँ दर्शाती हैं कि सुविधाएं सफलता की गारंटी नहीं होतीं; इच्छाशक्ति, मेहनत और हौसला ही चैंपियन बनाते हैं।

सरकारी सहयोग और प्रोत्साहन

इस खुशनुमा दौर में सरकारी और खेल संघों का सहयोग भी एक महत्वपूर्ण कारक रहा है:

'खेलो इंडिया' जैसी पहलों ने जमीनी स्तर पर प्रतिभाओं को पहचानने और उन्हें प्रशिक्षित करने में मदद की है।

हॉकी इंडिया जैसी संस्थाएं अब खिलाड़ियों को बेहतर उपकरण और सुविधाएं प्रदान कर रही हैं, जिससे प्रशिक्षण का स्तर सुधरा है।

पुरस्कार राशि और सम्मान में वृद्धि ने महिला खिलाड़ियों को खेलों में करियर बनाने के लिए प्रेरित किया है।

नए युग की शुरुआत

वह समय अब बीत चुका है जब खेलों को लड़कियों के लिए ₹दूसरी प्राथमिकता₹ माना जाता था। आज वे खेलों में करियर चुनने से पहले झिझकती नहीं, बल्कि दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ती हैं। यह बदलाव अभिभावकों की सोच, सरकार की नीतियों और खिलाड़ियों की दृढ़ इच्छाशक्ति—तीनों के संयुक्त प्रयासों का परिणाम है।

2. विश्व पटल पर सुनहरी सफलताएँ

भारतीय बेटियों ने लगभग हर खेल में अपनी छाप छोड़ी है—

बॉक्सिंग में निकहत ज़रीन और लवलीना बोरगोहेन, बैडमिंटन में पी.वी. सिंधु और साइना नेहवाल, वेटलिफ्टिंग में मीराबाई चानू,

कुश्ती में विनेश फोगाट और साक्षी मलिक,

एथलेटिक्स में हिमा दास और ज्योति याराजी,

हॉकी और क्रिकेट टीमों में युवा खिलाड़ी,

इन सभी ने पदकों और प्रदर्शन के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि प्रतिभा लिंग पर निर्भर नहीं होती।

3. चुनौतियों से जंग जीतती बेटियाँ

ये उपलब्धियाँ सरल नहीं थीं। सामाजिक दबाव, संसाधनों की कमी, पारिवारिक आर्थिक चुनौतियाँ और खेल सुविधाओं तक पहुँच—इन सबके बावजूद बेटियों ने अपने सपनों को जीवित रखा। फिटनेस, कठोर अभ्यास और मानसिक सहनशक्ति के बल पर उन्होंने वे सीमाएँ तोड़ीं, जिन्हें कभी उनके लिए असंभव माना जाता था।

4. मैदान पर बदली मानसिकता

आज बेटियाँ सिर्फ खेल नहीं रही हैं, बल्कि खेल की भाषा बदल रही हैं। वे आत्मविश्वास, अनुशासन और पेशेवर दृष्टिकोण का नया मानक स्थापित कर रही हैं। मैदान में उनका आक्रामक और निर्भीक खेल यह संदेश देता है कि भारतीय महिलाओं को अब पीछे धकेलना आसान नहीं।

5. नीति, प्रोत्साहन और नई पहलें

सरकारी योजनाएँ जैसे—

खेलो इंडिया,

टार्गेट ओलंपिक पोडियम स्कीम),

बेटी बचाओ—बेटी पढ़ाओ का व्यापक सामाजिक प्रभाव,

इनसे बेटियों को बेहतर प्रशिक्षण, पोषण और अंतरराष्ट्रीय खुलासा मिला है। निजी स्पॉन्सरशिप और लीग आधारित खेलों ने भी उनके लिए नए रास्ते खोले हैं।

6. रोल मॉडल बनती खिलाड़ी

आज भारतीय बेटियाँ न केवल पदक जीत रही हैं, बल्कि अगले पीढ़ी की प्रेरणा बन चुकी हैं। छोटे शहरों और ग्रामीण पृष्ठभूमि से आई लड़कियाँ जब विश्व चैंपियन बनती हैं, तो यह संदेश हर घर तक पहुँचता है—"सपने देखने का अधिकार सबको है।"

7. भविष्य का सुनहरा क्षितिज

भारत के लिए यह खुशनुमा दौर सिर्फ शुरुआत है। बेहतर सुविधाएँ, वैज्ञानिक प्रशिक्षण, मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान और जमीनी स्तर पर प्रतिभा खोजने की मजबूत प्रणाली भारत को आने वाले वर्षों में महिला खेलों की एक महाशक्ति बना सकती है।

भविष्य की राह

भारतीय बेटियों की सफलता समाज में महिला सशक्तिकरण के एक बड़े आंदोलन का प्रतीक है। जब एक बेटी खेल के मैदान पर तिरंगा लहराती है, तो वह पूरे देश को, खासकर अन्य लड़कियों को, यह संदेश देती है कि सपने देखना और उन्हें पूरा करना संभव है।

यह दौर केवल पदकों की संख्या तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिकता में बदलाव का दौर है। माता-पिता अब अपनी बेटियों को खेलों में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। भारतीय बेटियों ने साबित कर दिया है कि अगर उन्हें समान अवसर और सहयोग मिले, तो वे किसी भी क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ बन सकती हैं।

यह खुशनुमा दौर भारत के लिए केवल एक शुरुआत है, और उम्मीद है कि आने वाले समय में हमारी बेटियाँ खेल के हर क्षेत्र में अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित करती रहेंगी और देश का गौरव बढ़ाती रहेंगी।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

संपादकीय

चिंतन-मनन

पड़ोस की संस्कृति

डॉ विजय गर्ग

हमने अक्सर सुना है, 'यह तो पड़ोसी धर्म है' या 'पड़ोसी से सगा दूसरा कोई भी लेकिन जैसे-जैसे जमाना बदला, समय ने करवट ली, नई सोच के साथ नही',

जीवन के नए आयाम भी बनने लगे। आज यह स्थिति उत्पन्न हो गई है कि कई बार हमें यह भी पता नहीं होता है कि हमारे पड़ोस में कौन रह रहा है। जो पड़ोस हमारे सुख-दुख और जीवन की खुशियों का साथी हुआ करता था, वहां से हम कन्नी काट कर निकलना बेहतर समझते हैं। मोबाइल और इंटरनेट के इस युग में हमारी मोहल्ला संस्कृति लगभग नष्ट हो गई है। नहीं तो पहले के दौर में काम से निवृत्त होकर आसपास की सभी महिलाएं एक-दूसरे के सुख-दुख में साझेदारी निभाती थीं। सर्दी की धूप हो या रात के वक्त अलाव जलाकर हाथ सेंकना, ये सभी कार्य लोग साथ - साथ ही करते थे। एक भावुक - सा बंधन बंधता था, हमारा हमारे पड़ोसियों के साथ।

होली की रंगत हो या दीवाली के पटाखे, आस-पड़ोस के बच्चे टोली बनाकर त्योहार का आनंद उठाते थे। कभी घर पर कोई बीमार होता तो पड़ोसी डाक्टर के पास ले जाते, लेकिन आज की संस्कृति एकलवादी होती जा रही है। हमें अपने घर के रिश्तों में भी घुटन महसूस होने लगती है, तो पड़ोसियों की बात क्या की जाए ! आज का दौर सांस्कृतिक उथल- उथल की ओर लेता जा रहा है और इसके लिए हम ही जिम्मेदार हैं। फ्लैट संस्कृति का विकास इस एकलवाद को और बढ़ावा दे रहा है। सब अपने-आप में ही बहुत खुश दिखने का प्रयास करते हैं।

आज शादियां होती हैं, तो दो दिन में निपटा दी जाती हैं। पिछले दौर में यही उत्साह पंद्रह-बीस दिन तक बना रहता था, क्योंकि भाग लेने वाले लोग ज्यादा होते थे और वे ज्यादातर पड़ोसी ही होते थे। आज ऐसा समय आ गया है रिश्तेदार तक काम को हाथ नहीं लगाते .

हैं। मगर पड़ोस - प्रेम की उस निश्चल दौर में बारात कब खाना खाकर उठ जाती थी, लड़की के पिता को पता भी नहीं चलता था। सारा काम आस-पड़ोस के लोग निपटा दिया करते थे।

शाम की चौपालों में गुजरती गर्मी की रातें, हर बात में पड़ोसी का शामिल होना, यही हमारी संस्कृति का भाग रहा है। हालांकि गांव-कस्बों में अभी भी यह थोड़ा-बहुत देखने को मिल जाता है, लेकिन शहरीकरण के दबे कदम वहां की आबोहवा को भी एकाकी बना रहे हैं। यही बात देश की परिधि के परे भी लागू होती है, यानी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमारे पड़ोसियों के बारे में। हमारा भारत हमेशा से ही पड़ोसी राष्ट्रों से मधुर संबंध चाहता रहा है। हमारे देश ने हमेशा अपना पड़ोसी धर्म निभाया है। ये हमारी परंपरा का हिस्सा है

कि हम 'वसुधैव कुटुंबकम' का भाव संपूर्ण विश्व के लिए रखते हैं। प्रायद्वीपीय भारत की भौगोलिक स्थिति भी ऐसी ही है कि हमारे पड़ोस से हमारे सांस्कृतिक गुण काफी हद तक मेल खाते हैं। लेकिन अब अंतरराष्ट्रीय मानको में निजी स्वार्थ का बोलबाला हो रहा है। ऐसे में यह भावना हताहत हो रही है। मगर हमारे राष्ट्र ने अपने भाईचारे की नीति को अभी भी खत्म नहीं किया है।

कहने का तात्पर्य यह है कि चाहे हमारे निजी जीवन में हो या राष्ट्रीय जीवन में, हमें हमारे पड़ोसियों से हमेशा सुमधुर संबंधों को कायम रखना चाहिए। ये संबंध हमें न केवल भावनात्मक मजबूती प्रदान करते हैं, बल्कि हमारे जीवन को आसान बनाते हैं। हमारी स्वयं की सुरक्षा के लिए भी यह बहुत आवश्यक है कि हम अपने पड़ोसियों से संबंधों को अनुकूल बनाकर रखें। सबके अलग-अलग ढंग होने के बावजूद भी हमारे पड़ोस के सांस्कृतिक तत्त्वों को हम आत्मसात करते हैं। एक-दूसरे की संस्कृति का हिस्सा बनना कितने सौभाग्य की बात है। यह बात वही जानता है जिसने ऐसा जीवन जिया है। गुजरे जमाने में तो यह भी पता नहीं चलता था कि बच्चे कहां खेल रहे हैं, क्या खा रहे हैं और कैसे पल रहे हैं। वे एक बड़े परिवार रूपी पड़ोस का अभिन्न हुए हिस्सा हुआ करते थे और उनका विकास बड़े ही उन्नत रूप में होता था। वे शरीर से हृष्ट- पुष्ट और भावनात्मक रूप से मजबूत हुआ करते थे और तनाव का छोटा सिरा भी उन्हें छू नहीं सकता

था। मगर आज अवसाद भयावह रूप

ले रहा है। एकाकीपन एक अवसाद ही है और इससे बचने की जरूरत है। व्यक्तिगत रूप से हमें अपना समय चाहिए, तो उसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन हमें एक-दूसरे का खयाल रखने में कोई कोर कसर नहीं छोड़नी चाहिए। जब-जब हमने अपने आप को व्यक्ति के रूप से अपने अंदर समेटा है, वह कहीं से भी हमारे काम नहीं आया 1 खुले हृदय और खुले व्यवहार से पड़ोस को जानने की जरूरत है। हमें एक- दूसरे का मुसीबत में साथ देना चाहिए। एक का दुख दूसरे को महसूस हो और सुख दूसरे व्यक्ति को भी सुख की नरम छाया प्रदान करे। यही हमारा देश है और भारत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भाईचारे की इसी बुनियाद को वर्षों से संजोए हुए है।

हम एक-दूसरे के काम आएं और बिना किसी लाग लपेट और और भ्रम के एक- दूसरे को शक्तिशाली बनाएं, यह बहुत जरूरी है। पड़ोस रूपी इस आत्मिक शक्ति को फिर से एकत्रित करने की जरूरत है, ताकि हम एक-दूसरे को मुसीबतों से बचा सकें। प्रेम और करुणा के मानवीय भावों का संचरण कर सकें, भारत को व्यक्तिगत संस्कृति और एकांतवास से बचा सकें, ताकि फिर हमारे मोहल्लों में पड़ोस का कोलाहल हो, बच्चों की हलचल हो और जिंदगी, जिंदगी जैसी लगे।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

चमकते शहरों में उपेक्षित बेघर लोग

डॉ विजय गर्ग

कड़ाके की ठंड में फुटपाथों पर बिखरी पुरानी रजाइयां, प्लास्टिक की फटी हुई चादरें और कभी-कभार धुंधली आग की लौ शहर की जगमगाती रोशनी से कटी हुई दुनिया जैसी लगती हैं। कहीं से आई कोई छोटी-सी खबर चुपचाप दब जाती है कि कड़ाके की ठंड ने फिर कुछ जिंदगियां लील लीं। ये जिंदगियां उन गुमनाम चेहरों की हैं, जो पुल के नीचे चे सिकुड़ कर लेटी रहती हैं, रेलवे स्टेशन के कोने में दुबकी रहती हैं या किसी पार्क की टूटी बेंच पर आखिरी सांस लेती हैं, लेकिन ये मौतें केवल मौसमी हादसे नहीं हैं। ये हमारी व्यवस्था की तल्ख सच्चाई हैं, समाज की संवेदनहीनता का क्रूर आईना हैं।

कुछ समय पहले एक आंकड़ा 'सेंटर फार होलिस्टिक डेवलपमेंट' ने जुटाया था कि नवंबर 2024 से जनवरी 2025 के बीच महज 56 दिनों में दिल्ली में 474 बेघर लोगों की ठंड मौत हो गई।। यह आंकड़ा जिला स्तर के डेटा, अस्पताल के दस्तावेज और सर्वे पर आधारित था। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने इस पर स्वतः संज्ञान लेते हुए दिल्ली प्रशासन से विस्तृत रपट मांगी। मगर वास्तविक संख्या इससे कहीं ज्यादा हो सकती है। फुटपाथ पर पड़ी लाशों को अक्सर अज्ञात शव मान कर दफना दिया जाता है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि 80 फीसद ऐसी मौतें बिना किसी पहचान के गुम हो जाती हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के अनुसार, 2019 से 2023 तक

3 तक पूरे देश में शीतलहर से 3,639 मौतें हुई, जिनमें बेघर और गरीब तबका सबसे ज्यादा शिकार रहा। वर्ष 2024 में ही पूरे भारत 13,238 मौतें हुई, जो 2022 #1 हुई मौतों से 18 18 फीसद ज्यादा हैं। यानी शीतलहर अब पहले से अधिक घातक हो घातक हो रही है।

में यह संकट दिल्ली तक सीमित नहीं है। कानपुर में जनवरी 2023 के दौरान एक हफ्ते में ही 98 लोगों की मौत हो गई थी। वर्ष 2024 में उत्तर प्रदेश में ही 1,200 से ज्यादा दा लोगों की मौत हुई। 'नेशनल फोरम फार होमलेस हाउसिंग राइट्स' 'की रपट में यह जानकारी दी गई। लखनऊ, आगरा, पटना और जयपुर जैसे शहरों में भी यही कहानी दोहराई गई। एनएचआरसी ने अक्तूबर 2025 में 19 19 राज्यों और चार केंद्र शासित प्रदेशों को चेतावनी जारी की, जिसमें बेघरों, नवजातों, , बुजुर्गों और कमजोर वर्गों को ठंड से बचाने के लिए कदम उठाने को कहा गया, लेकिन ये चेतावनियां कागजों गईं।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, देश के शहरी क्षेत्रों में नौ लाख 38,348 लोग बेघर थे। मगर आज यह संख्या डेढ़ करोड़ पार कर चुकी है। दिल्ली में ही करीब तीन से चार लाख बेघर लोग हैं, जो मुख्य रूप से प्रवासी मजदूर, रिक्शा चालक, सब्जी विक्रेता, घरेलू कामगार और बुजुर्ग हैं। अगस्त 2024 में कराई गई गिनती में 1,56,369 लोग रात ग्यारह बजे सुबह 5.30 तक सड़कों पर सोते पाए गए। ये वे लोग हैं जो दिनभर शहर को चला रहे होते हैं। वे सुबह चार बजे से रिक्शा चलाते हैं, बाजारों में फल बेचते हैं, घरों में झाड़ू लगाते हैं, लेकिन शाम ढलते ही इनके लिए कोई जगह नहीं बचती। एक रपट के मुताबिक, महामारी के बाद प्रवासी मजदूरों की संख्या में 30 फीसद की बढ़ोतरी हुई, जिनमें से आधे से ज्यादा शहरी झुग्गियों या खुले आकाश तले रहने के लिए मजबूर हैं। आर्थिक मंदी, नौकरियों की

कमी और ग्रामीण पलायन ने इन्हें सड़कों पर धकेल दिया।

ये लोग हमारे बीच के ही हैं। एक समय वे किसानों के बेटे थे, मजदूर थे, छोटे व्यापारी थे। मगर सूखा पड़ने से और बाढ़, कर्ज तथा महंगाई ने उन्हें शहरों की ओर धकेल दिया। शहरीकरण की होड़ में गांव खाली हो रहे हैं।

शहर बड़े हो रहे हैं, लेकिन गरीबों के लिए जगह सिकुड़ रही है। दिल्ली मास्टर प्लान 2041 के तहत शहर को स्मार्ट बनाने का सपना है, लेकिन इसमें बेघरोंका कोई जिक्र नहीं। उल्टे, झुग्गी-झोपड़ियां तोड़ी जा रही हैं। कुछ समय पहले यमुना किनारे सैकड़ों झुग्गियों पर बुलडोजर चला दिया गया। लोग मलबे पर सोने लगे। बच्चे ठिठुरे, महिलाएं रोईं, लेकिन विकास का पहिया रुका नहीं। एक सर्वे के अनुसार, दिल्ली में 40 फीसद बेघर लोग झुग्गी तोड़ने के बाद सड़कों आ गए। मौसम विभाग चेतावनी देता है, एनएचआरसी निर्देश देता है, संगठन आवाज उठाते हैं, लेकिन प्रशासन सोता रहता है।

हैं। असल में बेघरों को इन घरा

सरकार की योजनाएं इस संकट को दूर करने का दावा करती हैं, लेकिन जमीन पर वे खोखली साबित हो रही हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमएवाई) का नारा था सबको घर वर्ष 2015 में शुरू हुई यह योजना 2022 तक सभी को पक्का घर देने का वादा लेकर आई, लेकिन 2025 आ गया और इस योजना का विस्तार कर पीएमएवाई अर्बन 2.0 लाया गया। दूसरी ओर बेघरों की संख्या घटने के बजाय बढ़ रही है। सरकार दावा करती है कि 20 मिनट में 150 घर बन रहे लेकिन ये आंकड़े कागजों के में बेघरों को इन घरों तक पहुंच ही नहीं मिलती। सितंबर 2025 में मंत्रालय ने राज्यों के साथ समीक्षा की, लेकिन समय पर केंद्रीय सहायता जारी न होने से प्रगति ठप है। यह योजना गरीबों को सशक्त बनाने का दावा करती है, लेकिन वास्तव में भवन निर्माता कंपनियों की जेब भर रही है। रैन बसेरे इस समस्या का तात्कालिक हल माने जाते हैं, लेकिन इनकी हालत देख कर बेहद निराशा होती है। 'दिल्ली अर्बन शेल्टर इम्प्रूवमेंट बोर्ड' के अनुसार, शहर में 325 रैन बसेरे हैं, जिनकी कुल क्षमता 16,338 लोगों की है। लेकिन 'विंटर एक्शन प्लान 2024-25' के तहत 197 स्थायी बसेरों में से मात्र 82 कार्यरत हैं, क्षमता सिर्फ 7,092 की है। बाकी 'पोर्टा केबिन' और तंबुओं में चल रहे हैं। दिल्ली सरकार ने 250 नए अस्थायी बसेरे खोलने का वादा किया। लाहौरी गेट या सराय काले खां जैसी जगहों पर भीड़ इतनी कि लोग फर्श पर सोते हैं। महिलाओं के लिए 17 बसेरे। हैं, लेकिन असुरक्षित एक

रपट ट के अनुसार, यहां चोरी, नशाखोरी और हिंसा आम है। मास्टर प्लान के मुताबिक 330-350 स्थायी रैन बसेरे होने चाहिए थे, लेकिन अभी 80 ही हैं। यह कमी केवल उदासीनता नहीं, बल्कि पारदर्शिता के अभाव को दिखाती है। हमारा समाज, जो 'वसुधैव कुटुंबकम' की बात करता है, सड़क पर ठिठुरते व्यक्ति को देख कर नजरें फेर लेता है। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की रपट कहती है कि बेघरों को भिखारी या नशेड़ी समझा जाता है। कोई सर्वे नहीं होता कि कितने लोग खुले रहे हैं। प्रशासन अनुमान पर चलता है। कानपुर की 98 मौतें टाली जा सकती थीं, अगर समय रहते बेघरों का पता लगा लिया जाता। वैश्विक नजरिए से देखें, तो न्यूयार्क या लंदन में रैन बसेरों में चिकित्सा और बुनियादी सुविधाएँ देना अनिवार्य है। मगर भारत में ? महज एक एक कंबल और चाय।

समाधान संभव है, अगर इच्छाशक्ति हो। सबसे पहले, हर शहर र में एक व्यापक सर्वेक्षण किया जाना चाहिए, ताकि बेघर लोगों की सटीक संख्या, उनकी जरूरतों का पता लगाया जा सके। इसके बाद रैन बसेरों का विस्तार करना चाहिए। रात में गश्त की जाए, ताकि ठिठुरते लोगों को बचा कर सुरक्षित स्थानों पर ले जाया जा सके। कंबल, गर्म कपड़े और सूप वितरण की व्यवस्था नियमित रूप से हो। प्रशासन को जवाबदेह बनाया जाए, हर जिले में एक नोडल अधिकारी नियुक्त हो। वहीं एनएचआरसी के निर्देशों को सख्ती से लागू करना होगा। कानूनी रूप से जीने का अधिकार मौलिक है और गरिमापूर्ण जीवन का अर्थ सिर पर छत और भोजन से भी जुड़ा है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट

एड्स: वह लड़ाई जो शरीर नहीं, समाज हार रहा है [एड्स की असली लड़ाई: शरीर से नहीं, कलंक से]

मानव सभ्यता के इतिहास में कुछ सत्य ऐसे हैं जिन्हें जितना समझना चाहें, वे उतनी ही गहराई में हमें नए प्रश्नों के सामने खड़ा कर देते हैं। यह दुनिया कभी सिर्फ बीमारियों से नहीं बिखरी—यह हमेशा गलतफहमियों, चुप्पियों और उस मौन भय से टूटी है जो हमारी सोच के अंधे कोनों में धीरे-धीरे पनपता रहता है। एचआईवी/एड्स भी ऐसा ही एक सत्य है—सिर्फ संक्रमण नहीं, बल्कि मनुष्य की सामाजिक संरचना, वैज्ञानिक खोज, नैतिक अवधारणाओं और हमारी सामूहिक जिम्मेदारियों की कठोर परीक्षा। विश्व एड्स दिवस इस परीक्षा का स्मरण नहीं, बल्कि उस मानव साहस की पुनर्पुष्टि है जो हर अंधकार में रोशनी तलाशने की जिद लिए खड़ा रहता है।

हम अक्सर एड्स को केवल एक बीमारी मान लेते हैं, जबकि वास्तव में यह तीन जटिल परतों में बंटी एक गहन चुनौती है—विज्ञान की चुनौती, समाज की चुनौती और चेतना की चुनौती। विज्ञान की चुनौती सबसे सीधी दिखती है: वायरस शरीर में कैसे प्रवेश करता है, प्रतिरक्षा प्रणाली को कैसे तोड़ता है, दवाएं कैसे काम करती हैं और उपचार लंबा क्यों चलता है। पर कम सुना गया वह वैज्ञानिक संघर्ष है जिसने वर्षों तक असफल प्रयोगों, कठोर परीक्षणों और मानवीय पीड़ा के बीच इस वायरस को समझने की कोशिश की। दुनिया भर की प्रयोगशालाओं में शोधकर्ता इसकी हर नई चाल से जूझते रहे—कभी यह जानने के लिए कि यह कोशिकाओं को भीतर से कैसे ढहाता है, तो कभी यह समझने के लिए कि यह अपना रूप बदलकर दवाओं को कैसे मात देता है। यह लड़ाई अभी भी अधूरी है; हम जितना इसे खत्म करने के करीब लगते हैं, यह अपनी ही परतों में उतना ही गहरे छिप जाता है।

दूसरी और सबसे कड़ी परत समाज की है। एड्स जितना शरीर को तोड़ता है, उससे कहीं अधिक मनुष्य की गरिमा को घायल करता है। यह उन बीमारियों में से एक रही है जिसमें मरीज को रोग से पहले ही आरोपी बना दिया गया। लोग संक्रमित शरीर से ज्यादा संक्रमित चरित्र खोज लेते हैं—मानो बीमारी कोई नैतिक फैसला हो। क्या यह विडंबना नहीं कि एक सूक्ष्म वायरस हमें बताता है कि असली खतरा संक्रमण नहीं, हमारी दृष्टि का पूर्वाग्रह है? दुनिया के कई हिस्सों में आज भी लोग टेस्ट कराने से डरते हैं, क्योंकि भय वायरस का नहीं, समाज के तिरस्कार का है। गाँवों में, कस्बों में, यहाँ तक कि बड़े शहरों के शिक्षित घरों में भी यह बीमारी चिकित्सा तथ्य से अधिक चरित्र का आरोप बनकर उभरी। अभी भी फुसफुसाहट उठती है—"उसे यह कैसे हो गया?"—पर विरले ही कोई पूछता है—"उसे अब हमारी जरूरत कितनी होगी?" यही असंतुलन सबसे कम समझा गया सच है: एड्स का इलाज बढ़ रहा है, पर उससे जुड़ी शर्म का नहीं।

तीसरी परत चेतना की है—वह भीतर की लड़ाई जिसे हर व्यक्ति को स्वयं लड़ना पड़ता है। यह संघर्ष केवल संक्रमित लोगों का नहीं, उन सभी का है जो जीवन और मानवता को समझते हैं। क्या हम जानते हैं कि आज विज्ञान इतनी आगे बढ़ चुका है कि एचआईवी पॉजिटिव व्यक्ति सामान्य जीवन, सामान्य आयु और सामान्य संबंधों के साथ पूरी तरह स्वस्थ रह सकता है? "अनडिटेक्टेबल = अनट्रांसमिटेबल", यह सिद्धांत वैश्विक विज्ञान की सबसे बड़ी जीतों में से एक है, पर क्या यह सच उतनी तेजी से फैला जितनी तेजी से भय और अफवाहें फैलीं? नहीं। भय लोगों को डॉक्टर के द्वार तक नहीं पहुंचने देता। भय टेस्ट कराने से रोकता है। भय दवा की नियमितता तोड़ता है। और यही भय वे दीवारें खड़ी करता है जिनके पीछे लोग चुपचाप टूटते हैं—जबकि वे बिल्कुल सामान्य जीवन जी सकते थे। वैज्ञानिकों ने वायरस को परास्त करने का मार्ग खोज लिया है, पर समाज अब भी डर के आगे झुक रहा है—और इस पराजय का कोई लेखा-जोखा दर्ज नहीं होता। विडंबना यह है कि एड्स से जुड़े सकारात्मक सत्य आज भी उतनी मजबूती से नहीं बोले जाते, जितने शोर से कभी डर बोला गया था।

आज भी अनगिनत लोगों को यह नहीं पता कि एआरटी (एंटी रेट्रोवाइरल थैरेपी) न केवल व्यक्ति को स्वस्थ रखती है, बल्कि उसे दूसरों के लिए पूरी तरह सुरक्षित भी बना देती है। कई लोग यह भी नहीं जानते कि सही देखभाल मिले तो एचआईवी पॉजिटिव गर्भवती महिला का बच्चा पूरी तरह स्वस्थ जन्म ले सकता है। और अनेक युवा यह समझे बिना बढ़ते हैं कि एड्स केवल असुरक्षित यौन संबंधों से नहीं, बल्कि असुरक्षित सुइयों, संक्रमित रक्त और अनजानी चिकित्सीय लापरवाहियों से भी फैल सकता है। यह सच जितना अनिवार्य है, उतना ही दुर्लभ चर्चा में मिलता है।

एड्स हमें एक और अनकहा सबक देता है—यह बीमारी केवल शरीर पर नहीं, समय पर भी कब्जा कर लेती है। यह भविष्य की योजनाएँ तोड़ती है, रिश्तों में खामोशी का अंतराल बना देती है, और जीवन की लय रोक देती है। पर इसके बावजूद, इससे जूझने वालों के भीतर एक अद्भुत साहस जन्म लेता है—वह साहस जो कहता है कि बीमारी मेरी पहचान तय नहीं करेगी। दुनिया भर में लाखों लोग एड्स के साथ जीवन नहीं काट रहे, जीवन जी रहे हैं—काम कर रहे हैं, प्रेम कर रहे हैं, सपनों को आकार दे रहे हैं—और यही उनका साहस मानवता की सच्ची विजय है।

एड्स का सबसे विचित्र सत्य यह है कि इसने मनुष्य के भीतर एक दुर्लभ समानता जगाई—यह बीमारी किसी जाति, धर्म, वर्ग, देश या पहचान को नहीं देखती। यह एक वैश्विक दर्पण है जिसमें पूरी दुनिया का चेहरा एक-सा दिखाई देता है—और उसी दर्पण में हम अपने आप से पूछते हैं: हम कितने मानवीय? कितने जागरूक? कितने संवेदनशील? बीमारी ने किसी को अकेला नहीं किया; उसे अकेला बनाने की भूमिका हमने निभाई। यही तथ्य शायद अधिकतर चर्चाओं से गायब रहा है।

विश्व एड्स दिवस (01 दिसम्बर) पर हमें याद रखना चाहिए कि यह लड़ाई केवल वायरस से नहीं, हमारी सोच से है। यह वह क्षण है जब हमें भीतर झाँकना होगा—क्या हम अब भी बीमारी से पहले व्यक्ति को देखते हैं? क्या हम सच में जानते हैं कि विज्ञान कितनी दूर आ चुका है? क्या हम नई पीढ़ी को डर नहीं, विवेक देना चाहते हैं? और क्या हम उन लाखों लोगों के साथ खड़े हैं जो हर दिन अदृश्य साहस से जीते हैं?

विश्व एड्स दिवस यही सिखाता है—कि लड़ाई वायरस से कम, और उस सोच से अधिक है जो मनुष्य को मनुष्य होने से रोकती है। यह वह दिन है जब हम स्वयं से वादा कर सकते हैं कि हम बीमारी नहीं, गलतफहमियों को मिटाएँगे; वायरस नहीं, कलंक को हराएँगे; डर नहीं, समझ को फैलाएँगे। अंततः यह संघर्ष विज्ञान से ज़्यादा मानवता का है, और यदि हम सच में मानवता का अर्थ समझते हैं, तो मानना होगा कि सम्मान, सहानुभूति और सत्य किसी भी दवा से अधिक प्रभावी हैं। वायरस अदृश्य है—पर यदि हम चाहें, हमारी संवेदनशीलता उससे कहीं अधिक शक्तिशाली बन सकती है। यह दिवस स्मरण नहीं, संकल्प का दिन है—उस दुनिया की ओर बढ़ने का, जहाँ बीमारी का भय नहीं, उपचार हो; और व्यक्ति का अपमान नहीं, सम्मान हो।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

"सेना की वर्दी में आस्था की संवैधानिक परिधि"

- डॉ सत्यवान सौरभ

भारतीय संविधान नागरिकों को धर्म का पालन, आचरण और प्रचार करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है, परंतु यह स्वतंत्रता पूर्णतः निरपेक्ष नहीं है। विशेषकर उन सेवाओं में, जहाँ सामूहिक अनुशासन, पदानुक्रम, आज्ञापालन और इकाई-एकजुटता ही अस्तित्व की शर्तें हैं, वहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता का दायरा स्वाभाविक रूप से सीमित हो जाता है। भारतीय सशस्त्रबल इसी श्रेणी में आते हैं, जहाँ राष्ट्रीय सुरक्षा, युद्धक क्षमता और सामूहिक मनोबल किसी भी व्यक्तिगत पसंद-नापसंद या धार्मिक व्याख्या से कहीं ऊपर रखे जाते हैं। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा एक सैन्य अधिकारी की बर्खास्तगी को उचित ठहराया जाना इस बात का प्रमाण है कि ''आवश्यक धार्मिक आचरण'' और ''व्यक्तिगत धार्मिक व्याख्या'' में स्पष्ट अंतर किया जाएगा, और वर्दी में रहते हुए यह अंतर और अधिक कठोर हो जाता है। यह निर्णय यह संकेत भी देता है कि सैन्य सेवा का मूल स्वर ''सैकुलर यूनिट-कल्चर'' पर आधारित है, जहाँ किसी भी धर्म की मान्यताएँ सम्मानित हैं, किंतु किसी एक धर्म की निजी व्याख्या रेजिमेंटल परंपराओं, आदेशों या सैन्य अनुशासन पर प्रभाव नहीं डाल सकती।

भारत जैसे बहुधर्मी समाज में सेना का चरित्र हमेशा से विशिष्ट रूप से धर्मनिरपेक्ष रहा है। एक ही पलटन में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध और अन्य धर्मों के सैनिक कंधे से कंधा जोड़कर लड़ते हैं। उनकी एकता का आधार ''धर्म'' नहीं, बल्कि ''रक्त संबंधी बंधुत्व'' और ''राष्ट्र के प्रति साझा निष्ठा'' है। यही कारण है कि भारतीय सेना की रेजिमेंटल परंपराओं में धार्मिक रंग तो दिखते हैं, पर उनका उद्देश्य किसी विशेष धर्म का प्रचार नहीं, बल्कि सैनिक भावना, युद्धक मनोबल और ऐतिहासिक गौरव की निरंतरता को बनाए रखना होता है। उदाहरणस्वरूप कई रेजिमेंट अपने पारंपरिक युद्ध-नाद या शुभ प्रतीकों का उपयोग करती हैं, जो उनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और युद्धों में प्रदर्शित वीरता की गवाही देते हैं।

किसी सैनिक के लिए धार्मिक आस्था उसका व्यक्तिगत अधिकार अवश्य है, पर जब वह वर्दी धारण करता है, तो वह व्यक्ति नहीं, राष्ट्र का प्रतिनिधि बन जाता है। सेना किसी सैनिक को किसी विशेष धार्मिक अनुष्ठान को त्यागने या नया अपनाने के लिए बाध्य नहीं करती, किंतु यह अपेक्षा अवश्य करती है कि भीतर की किसी निजी व्याख्या को सैनिक अपने कर्तव्यों, आदेशों या इकाई-परंपराओं से ऊपर न रखे। सर्वोच्च न्यायालय ने इसी संदर्भ में स्पष्ट किया कि क्या कोई धार्मिक ग्रंथ वास्तव में किसी विशेष क्रिया को प्रतिबंधित करता है या यह केवल व्यक्ति की निजी धारणा है—यह अंतर अत्यंत महत्वपूर्ण है। ''आवश्यक धार्मिक आचरण'' वही होता है जो धर्म के मूलभूत स्वरूप का अंग हो, जिसे त्याग देने पर धर्म का स्वरूप ही बदल जाए। इसके विपरीत यदि कोई आचरण केवल व्यक्तिगत व्याख्या पर आधारित है, तो उसे सेवा-आवश्यकताओं से ऊपर नहीं रखा जा सकता।

न्यायालय ने यह भी रेखांकित किया कि यदि किसी सैनिक को आदेश दिया जाए कि वह किसी आधिकारिक कार्यक्रम या परेड में भाग ले, और वह ''धार्मिक कारणों'' का हवाला देते हुए मना करे, तो उसकी इस असहमति के दो स्तरों की जाँच होगी—पहला यह कि क्या वह आचरण सचमुच धर्म-आवश्यक है? और दूसरा यह कि क्या उसका पालन रेजिमेंटल अनुशासन या सामूहिक मनोबल को प्रभावित करता है? यदि कोई सैनिक आदेश का पालन नहीं करता, तो वह केवल एक व्यक्तिगत निर्णय नहीं होता—वह पूरी संरचना के अनुशासन को चुनौती देने का कार्य बन जाता है। सेना में एक भी अस्वीकार उदाहरण चेन-ऑफ-कमांड को कमजोर करने का कारण बन सकता है, क्योंकि युद्धकालीन या संकट की परिस्थितियों में आदेशों का तुरंत पालन ही जीवन और मृत्यु का अंतर तय करता है।

सैन्य अनुशासन केवल बाहरी नियमों का पालन नहीं है; यह मनोवैज्ञानिक एकजुटता और मानसिक तैयारी की वह अवस्था है जिसमें प्रत्येक सैनिक स्वयं को इकाई का अभिन्न घटक मानता है। धार्मिक आधार पर स्वयं को अलग करना या रेजिमेंटल परंपराओं से दूरी बनाना उस भावना को कमजोर कर सकता है। इसलिए न्यायालय और सैन्य नेतृत्व दोनों इस बात पर सहमत हैं कि ''व्यक्तिगत विश्वास'' और ''व्यक्तिगत व्याख्या'' का सम्मान तो किया जा सकता है, पर ''व्यक्तिगत धार्मिक औचित्य'' देकर सैन्य आदेशों का उल्लंघन न तो स्वीकार्य है, न ही वह किसी भी प्रकार ''धर्म के अधिकार'' के अंतर्गत आता है।

यह भी महत्वपूर्ण है कि सेना किसी सैनिक को दूसरे धर्म के अनुष्ठानों में ''भाग लेने'' के लिए बाध्य नहीं करती, बल्कि केवल ''उपस्थिति'' या ''प्रोटोकॉल'' पूरा करने की अपेक्षा करती है। उदाहरणस्वरूप—यदि किसी कार्यक्रम में किसी देवी-देवता की प्रतिमा लाई जाती है या आशीर्वाद की औपचारिक प्रार्थना होती है, तो सैनिक को ''उपस्थित'' रहना होता है, ''पूजा'' करना अनिवार्य नहीं होता। यह अंतर अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि सेना किसी की अंतःकरण-स्वतंत्रता का अतिक्रमण नहीं करती। सैनिक चाहे तो मन ही मन अलग विश्वास रख सकता है, पर वह सार्वजनिक रूप से असहमति दिखाकर अनुशासन को चुनौती नहीं दे सकता।

सवाल यह है कि क्या सेना ''उचित समायोजन'' (Reasonable accommodation) कर सकती है? हाँ, पर इसकी सीमा वही है जहाँ तक वह सामूहिक हितों को प्रभावित न करे। कई बार सैनिकों को उनके धार्मिक त्यौहारों, पूजा-पद्धतियों या आहार-मान्यताओं के अनुसार उचित छूट दी जाती है। सेना में गुरुद्वारा, मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि के लिए स्थान भी निर्धारित होते हैं। पर यह ''धर्म-आधारित सुविधाएँ'' तभी तक संभव हैं जब तक वे ''सेवा के मूल कार्य'' या ''युद्धक आवश्यकताओं'' से संघर्ष न करें। यदि किसी व्यक्तिगत आस्था का पालन इकाई की गतिविधियों, युद्ध-तैयारी या आदेशों में अवरोध डालता है, तो उसका समायोजन संभव नहीं होता।

सैन्य अधिकारी के लिए दायित्व और भी अधिक कठोर हो जाते हैं। अधिकारी केवल आदेश का पालन करने वाला सैनिक नहीं होता—उसे दूसरों के लिए उदाहरण बनना होता है। यदि वह स्वयं आदेश मानने से इनकार करता है, और वह भी व्यक्तिगत धार्मिक कारणों का हवाला देकर, तो उसके अधीनस्थों का मनोबल प्रभावित होता है और अनुशासन के टूटने की संभावना बढ़ती है। इसलिए न्यायालय ने इसे ''सबसे गंभीर प्रकार की अनुशासनहीनता'' माना। न्यायालय ने यह भी कहा कि यदि कोई अधिकारी निजी धार्मिक व्याख्या को सेवा के ऊपर रखता है, तो वह स्पष्ट रूप से यह प्रदर्शित करता है कि वह वर्दी की माँगों के अनुरूप स्वयं को ढालने में असमर्थ है।

धर्म और सैन्य अनुशासन के संबंध में एक और महत्त्वपूर्ण प्रश्न है—क्या ''धार्मिक स्वतंत्रता'' सैनिक की पहचान है या उसकी प्राथमिक पहचान ''राष्ट्र-सेवक'' होना है? भारतीय सेना का चरित्र सदैव ''धर्म-निरपेक्ष पेशेवरिता'' पर आधारित रहा है। सैनिक का प्राथमिक धर्म ''कर्तव्य'' है—''धर्मनिष्ठा'' नहीं। इसका अर्थ यह नहीं है कि उसके व्यक्तिगत धार्मिक जीवन को दबा दिया जाए; बल्कि यह है कि वर्दी में रहते हुए उसका धर्म ''राष्ट्र-धर्म'' बन जाता है। व्यक्तिगत आस्था उसकी निजी सीमा में सुरक्षित रहती है, और सेना यह सुनिश्चित करती है कि कोई भी सैनिक अपने धर्म के कारण न तो उपेक्षित महसूस करे, न ही उसे विशिष्ट विशेषाधिकार मिले।

इस पूरे विषय का सार यह है कि ''व्यक्तिगत धार्मिक भावना'' और ''सैन्य अनुशासन'' के बीच संतुलन तो आवश्यक है, पर यह संतुलन सदैव सैन्य आवश्यकताओं के पक्ष में झुकता है। क्यों? क्योंकि सेना की विफलता किसी एक व्यक्ति को नहीं, बल्कि राष्ट्र को प्रभावित करती है। यदि युद्धभूमि पर कोई सैनिक कहे कि धार्मिक कारणों से वह आदेश का पालन नहीं कर सकता, तो उसके परिणाम घातक हो सकते हैं। इसीलिए सैन्य नेतृत्व और न्यायपालिका, दोनों इस सिद्धांत को दोहराते हैं कि—''वर्दी में रहते हुए व्यक्ति निजी नहीं रहता, वह राष्ट्र का संरक्षक बन जाता है।''

सेना में धार्मिक आचरण की स्वतंत्रता ''अनुमति-आधारित'' होती है, ''पूर्ण अधिकार'' नहीं। यह स्वतंत्रता सेवा-नियमों और संचालन-हितों के अधीन होती है। आवश्यक धार्मिक आचरण का सम्मान किया जा सकता है, पर यदि वही आचरण अनुशासन, आदेश-पालन या इकाई-एकजुटता को क्षति पहुँचाए, तो वह संरक्षित नहीं रहेगा। सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय इसी सिद्धांत को सुदृढ़ करता है—कि सैन्य जीवन में ''धर्म'' का स्थान है, पर ''धर्म-आधारित अवज्ञा'' का नहीं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतीय सेना अपने सैनिकों की व्यक्तिगत आस्था का सम्मान करती है, उनकी धार्मिक पहचान को संरक्षित भी करती है, और जहाँ तक संभव हो ''उचित समायोजन'' भी प्रदान करती है। परंतु वह किसी भी परिस्थिति में सेवा-नियमों, आदेशों, रेजिमेंटल परंपराओं और सामूहिक कर्तव्य को व्यक्तिगत धार्मिक तर्कों के कारण कमजोर नहीं होने देती। यही कारण है कि जब आस्था और सैन्य अनुशासन के बीच टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है, तो न्यायपालिका और सैन्य नेतृत्व दोनों का रुख स्पष्ट होता है—''राष्ट्रीय सुरक्षा और सैन्य अनुशासन को सर्वोच्च प्राथमिकता प्राप्त है; व्यक्तिगत धार्मिक आचरण उन्हीं सीमाओं के भीतर मान्य है जहाँ तक वह सैन्य सेवा की अनिवार्यताओं से टकराव न पैदा करे।''

कुर्सी होगी सुलभ...!

मल्लिकार्जुन ने नेताओं को दिल्ली
किया तलब,
अब मुख्यमंत्री की कुर्सी किसी को
होगी सुलभ।
कर्नाटक में सत्ता परिवर्तन को लेकर
उठी लहर,
अटकलों ने सियासी उथल-पुथल पे
ढाया कहर।

डीके-सिद्धा समर्थक कर रहें शक्ति-
प्रदर्शन शुरू,
राहुल बाबा बहुत सयाने है इन सब के
वो है गुरु।
अब सोनिया-प्रियंका सोचते रहते हैं
मैं क्या करूं,
फूटे किस पर ठीकरा मैं हाथ कहां-
कहां पर धरु।

₹पावर-शेयरिंग फार्मूले₹ ने बढ़ाई
सबकी मुसीबत,
यूं नेताओं को सामंजस्य बैठाने में
होगी दिक्कत।
पद की रेस में परमेश्वरा ने भी ठोक
दिया है दावा,
एक-दूसरे पर शब्दबाण चलाकर हो
रहा छलावा।

संजय एम तराणेकर

साइलेंट ब्रेन ड्रेन: बिना शोर के उड़ती चमक

भारत के छोटे शहरों की सुबहें बहुत कुछ कहती हैं—बस इतनी धीमी, इतनी भीतर उतरती आवाज़ में कि कोई उन्हें सचमुच सुनने की फुर्सत नहीं पाता। वही परिचित सड़कों पर दूधवाले की साइकिल की चरमराहट, अख़बार की दुकान पर बंडलों के फटने की टप-टप, और चाय की दुकानों पर बैठे लोग, जिनकी निगाहें खबरें ऐसे पढ़ती हैं जैसे वे किसी दूर की, उनसे असंबंधित दुनिया की दास्तान हों। ऊपर से सब कुछ सामान्य लगता है, पर इसी सामान्यता की तह में हर साल एक ऐसी अदृश्य हलचल घटती है, जो शहर की धड़कन से बिना शोर के थोड़ा-सा जीवन खिसका ले जाती है। वह पल तब आता है जब किसी घर में अचानक यह वाक्य हवा में फैलता है—बेटा विदेश जा रहा है, स्कॉलरशिप मिली है, बड़ी नौकरी मिली है, रिसर्च का मौका मिला है। यह ख़बर शहर को एक क्षणिक गर्व का एहसास देती है, लेकिन उसके भीतर कहीं गूंजती एक कड़वी सच्चाई को दबा देती है कि शहर अपनी ही सबसे चमकीली प्रतिभा को फिर रोक न सका, फिर एक उजला दिमाग चुपचाप उसकी पकड़ से फिसल गया।

प्रतिभा का यहाँ जन्म होना भी पुराना है और पलायन भी; नया सिर्फ़ यह है कि अब इसे रोकने की इच्छा तक नहीं बची। हर घर, हर मोहल्ला, हर गली को पता है कि उनका टॉपर, उनका मेधावी, उनका सबसे जिज्ञासु बच्चा एक दिन किसी न किसी विमान में बैठकर इस मिट्टी से बहुत दूर चला जाएगा। और यह जाने की प्रक्रिया इतनी शांत है कि इसे देखने वाले कभी महसूस ही नहीं करते कि वे किसी बड़े नुकसान का हिस्सा बन रहे हैं। इसका कोई जुलूस नहीं निकलता, कोई पोस्टर नहीं छपता, कोई सड़कें नहीं गिरतीं—बस एक घर में कुछ ट्रॉली बैग खुले होते हैं, कुछ कागज़ों पर मुहर लगती है, और किसी माता-पिता की आँखों में खुशी और चिंता एक साथ तैरते हैं। बस इतना ही। इसी चुप्पी को दुनिया कहती है—साइलेंट ब्रेन ड्रेन।

छोटे शहरों की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि वे अपने बच्चों को सपने तो देते हैं, लेकिन उन सपनों को पूरा करने के साधन नहीं। टैलेंट यहाँ पैदा होता है, पर अवसर कहीं और मिलते हैं। ज्ञान यहाँ अंकुरित होता है, पर उसकी जड़ें पोषण कहीं और पाती हैं। स्कूलों में अधूरी लैब्स हैं, कॉलेजों में पुरानी मशीनें हैं, पुस्तकालयों में ऐसे किताबों के ढेर हैं जिनसे समय की धूल झाड़ी नहीं गई। और इन्हीं जगहों पर बैठकर बच्चे इंटरनेट पर दुनिया की प्रगति देखते हैं—उन्नत शोध, अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी, नवाचार के अनगिनत अवसर। वे समझ जाते हैं कि अगर उन्हें अपनी क्षमता का उपयोग करना है, अपना कौशल निखारना है, तो उन्हें इस शहर से आगे बढ़ना ही होगा। वे जानते हैं कि मेहनत वही करेंगे, पर उसका फल कहीं और मिलेगा—वहीं मिलेगा जहाँ व्यवस्था तेज़ है, जहाँ मार्गदर्शक उपलब्ध हैं, जहाँ सपनों को सिर्फ कल्पना नहीं बल्कि क्रियान्वयन का स्थान मिलता है।

मोहल्ले के लोगों को यह बात कभी नहीं खटकती कि बच्चे यहीं क्यों नहीं रुकते। उनके लिए विदेश जाना ही सफलता की परिभाषा बन चुका है। टॉपर ने अंग्रेज़ी में निपुणता हासिल की? विदेश जाएगा। उसने शोध में रूचि दिखाई? विदेश जाएगा। उसने विज्ञान में अभूतपूर्व प्रदर्शन किया? विदेश जाएगा। यानी—जिसे हम "मान्यता" कहते हैं, वह कहीं और है; जिसे हम "श्रेष्ठता" कहते हैं, उसका पुरस्कार कहीं और है; और जिसका हम "भविष्य" कहते हैं, वह भी कहीं और है। छोटे शहरों की यह स्वीकृति ही इस पलायन का वास्तविक ईंधन है।

पर असली दुख यह नहीं कि वे बच्चे जाते हैं—यह दुख इसकी गहराई में है कि वे लौटकर आना भी नहीं चाहते। वे उस दुनिया में पहुँच जाते हैं जहाँ कौशल को पहचान मिलती है, जोखिम को सम्मान, और सवाल पूछने वालों को जगह। वहाँ उन्हें अपने विकास का सही परिवेश मिलता है—जहाँ विचारों की गति धीमी व्यवस्था की दीवारों से नहीं टकराती। और जब वर्षों बाद उन्हें अपने शहर की याद आती भी है, तो वह सिर्फ भावनात्मक रहती है; व्यावसायिक नहीं। वे देखते हैं कि उनका शहर अब भी वही है—वही धीमी फाइलें, वही भ्रष्ट तंत्र, वही अवसरों की किल्लत। ऐसे में वे लौटकर यहाँ क्या करेंगे? यही सवाल उन्हें रोके रखता है।

"ब्रेन ड्रेन का मतलब सिर्फ बच्चों का जाना नहीं है—यह छोटे शहरों का ठहर जाना है। शहर रुक जाते हैं, और बच्चे उड़ जाते हैं। शहर पुरानी सोच में जकड़े रहते हैं, बच्चे नए विचारों के साथ निकल जाते हैं। जब शहर अवसर नहीं बना पाते, बच्चे उन्हें खोजने बाहर जाते हैं। यह सिलसिला हर साल, हर घर, हर पीढ़ी में वैसे ही दोहराया जाता है, जैसे यह किसी अपरिहार्य नियम का हिस्सा हो।"

हमारे सामने जो "ब्रेन ड्रेन" दिखता है, वह कोई नैतिक अपराध नहीं, बल्कि एक भौतिक नियम है। यह पलायन विद्रोह से नहीं, विकल्पों की भयंकर कमी से पैदा होता है। प्रतिभा देशभक्त नहीं होती—वह सिर्फ़ जीवित रहना और बढ़ना चाहती है। उसे सीमाएँ नहीं, स्पेस चाहिए; उसे सेंसर नहीं, स्वतंत्र हवा चाहिए; उसे कागजी औपचारिकताएँ नहीं, तेज़ इंटरनेट और खुला मंच चाहिए। जब ये सब एक जगह मिलता है, तो प्रतिभा उधर खिंची चली जाती है—बिना नफ़रत के, बिना गुस्से के, बस इसलिए कि वहाँ साँस लेना आसान है।

पानी ऊँचाई से नीचे नहीं बहता; वह सबसे कम प्रतिरोध वाले रास्ते चुनता है। प्रतिभा भी ठीक वैसी ही है। वह देश नहीं देखती, वह रुकावटें देखती है। जहाँ दीवारें कम हैं, दरवाज़े खुले हैं, वहाँ वह पहुँच जाती है—चुपचाप, स्वाभाविक रूप से। इसलिए यह शर्म की बात नहीं कि लोग जा रहे हैं; शर्म की बात यह है कि हमने उनके लिए रहने की कोई मजबूत वजह नहीं छोड़ी। जब तक हम प्रतिभा को मोहब्बत से नहीं, बल्कि ज़रूरी ऑक्सीजन की तरह उपलब्ध कराएँगे, तब तक यह बहाव नहीं रुकेगा। क्योंकि प्रतिभा कोई पवित्र कर्तव्य नहीं निभाती— वह सिर्फ़ जीती है, जहाँ जीना सबसे आसान हो।

"साइलेंट ब्रेन ड्रेन रोका जा सकता है—शोर या नारों से नहीं, बल्कि सटीक सुधार और मजबूत संरचना से; वादों से नहीं, बल्कि असली अवसरों से। छोटे शहरों को चाहिए असली विकास, आधुनिक संसाधन, नवाचार-केंद्रित नीतियाँ और प्रेरक माहौल। जब शहर आगे बढ़ेंगे, तभी प्रतिभाएँ ठहरेंगी। और जब प्रतिभाएँ ठहरेंगी, तभी भारत का संतुलन बदलेगा—न कि उन सपनों से, जो हवाई जहाज़ों में उड़ते ही इस मिट्टी का हिस्सा होना छोड़ देते हैं। तब तक, छोटे शहरों की सुबहें वैसी ही रहेंगी—साधारण, शांत, लेकिन भीतर से हर साल थोड़ी और खाली।"

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

एमएलसी शिक्षक की उम्मीदवारी एवं चुनाव प्रणाली को मिले न्याय:जगदीश विग

शम्स आगाज

दिल्ली: संविधान दिवस के अवसर पर शिक्षक कल्याण फाउंडेशन द्वारा संविधान, सामाजिक न्याय एवं शिक्षकों के कानूनी अधिकारों विषय पर एक व्यापक परिचर्चा का आयोजन शिक्षक सदन, सूरजमल विहार, दिल्ली में किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में शिक्षक, अधिवक्ता, शिक्षाविद, चार्टर्ड अकाउंटेंट्स एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया (ICAI) के सदस्य एवं शिक्षाविद डॉ. अनुज गोयल ने की। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि "शिक्षक राष्ट्र निर्माण के केंद्र में हैं और भविष्य की दिशा तय करने में उनकी भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।"

परिचर्चा के प्रारंभिक सत्र में उपस्थित शिक्षकों ने अपने विचार रखे और विशेषज्ञों से संवैधानिक अधिकारों, सेवा नियमों एवं प्रशासनिक चुनौतियों से जुड़े अनेक प्रश्न पूछे। इस संवादात्मक वातावरण ने कार्यक्रम को ज्ञानवर्धक एवं सार्थक बनाया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री गोपाल सरन पाठक ने संविधान के प्रमुख मौलिक अधिकारों—अनुच्छेद 19, अनुच्छेद 12–35, अनुच्छेद 21A (निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार) पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि "शिक्षा राष्ट्र की अमूल्य संपत्ति है, और शिक्षकों का संवैधानिक रूप से जागरूक होना आवश्यक है।

श्रोताओं के कानूनी प्रश्नों का उत्तर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री मांगीलाल कजोरिया ने स्पष्ट व्याख्यों से दिया। एवं कैट जबलपुर में लंबित मुकेश कुमार बागड़ी बनाम यूनियन ऑफ इंडिया एवं अन्य की पैरवी करते हुए सभी केन्द्रीय विद्यालय संगठन के शिक्षकों को ACP एवं MACP दिलाने का आश्वासन दिलाया।

विशिष्ट अतिथि श्री ध्रुव शंकर मिश्रा ने शिक्षा में पारदर्शिता व न्याय की आवश्यकता पर बल दिया।

जीएसटीए महासचिव श्री अजय वीर यादव ने भी शिक्षक समुदाय की चुनौतियों पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

शिक्षक कल्याण फाउंडेशन के संयोजक श्री जगदीश विग ने उत्तर प्रदेश चुनाव आयोग से आग्रह किया कि आगामी एमएलसी (शिक्षक) चुनाव में शिक्षकों की ही उम्मीदवारी सुनिश्चित हो, उम्मीदवार किसी भी राजनीतिक दल से संबंधित ना हो ताकि विधान परिषद में शिक्षक प्रतिनिधित्व की सार्थकता न्यायसंगत बने, ताकि शिक्षकों का वास्तविक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके और उनकी आवाज़ निःस्वार्थ रूप से विधान परिषद तक पहुँच सके।

विग ने कहा कि कई वर्ष से देखा जा रहा है कुछ सरकारी शिक्षा संस्थानों की कमान प्रतिनियुक्ति पर नौकरशाहों को दी जा रही है जिसके परिणाम प्रभावशाली नहीं हो पा रहे हैं, विग ने प्रधानमन्त्री से अग्राह किया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफल क्रियान्वयन के लिए शिक्षण संस्थानों का नेतृत्व शिक्षाविदो को सौपना न्यायसंगत होगा I

परिचर्चा उपरांत लगभग 150 शिक्षकों, बुद्धिजीवियों एवं सामाजिक कार्यकताओ को मुख्य अतिथि द्वारा सामाजिक न्याय सम्मान (SOCIAL JUSTIC AWARD) प्रदान किया गया

अतिथियों का स्वागत डॉ. अमित चौधरी, नरेश अरोड़ा, सुखदेव शर्मा, महेश चौधरी, इंद्रजीत कौर, कुंतला भोई, एवं अमजद खान द्वारा किया गया।

कार्यक्रम को गरिमा प्रदान करने हेतु कई वरिष्ठ शिक्षकों की उपस्थिति रही, जिनमें प्रमुख रूप से—

श्री भगवान राणा, श्री सत्यनारायण गौर, श्री वीरेंद्र, श्री तनवीर अहमद, श्री विनय कुमार, श्री आलोक जैन, श्रीमती सोमा करॉर आदि शामिल थे।

कार्यक्रम के अंत में केंद्रीय विद्यालय शिक्षक संघ के महासचिव श्री विनीत रावत ने सभी अतिथियों, उपस्थित शिक्षकों, चार्टर्ड अकाउंटेंट्स, समाजसेवियों एवं मंचासीन विद्वानों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि उपस्थित सभी विशेषज्ञों द्वारा दिया गया समय, ज्ञान और मार्गदर्शन शिक्षक समुदाय के लिए अत्यंत उपयोगी व प्रेरणादायक है।

शिक्षक कल्याण फाउंडेशन का यह आयोजन शिक्षकों को संविधान, न्यायिक अधिकारों और सामाजिक जवाबदेही के प्रति जागरूक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

झारखंड में शर्मसार हो गयी मानवता , जमशेदपुर के एक झोपड़ी से नवजात शव बरामद

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

सरायकेला , जमशेदपुर के परसुडीह थाना क्षेत्र स्थित ग्वाला पट्टी दुर्गाबाड़ी में शनिवार शाम उस समय सनसनी फैल गई, जब एक बंद पड़े पुराने झोपड़ीनुमा घर से नवजात शिशु का शव बरामद हुआ। घटना तब सामने आई जब कुछ बच्चे खेलते-खेलते उस जर्जर घर के अंदर पहुंचे और वहां पड़े नवजात को देखकर घबरा गए। बच्चों के शोर मचाते ही आसपास के लोग मौके पर एकत्र होने लगे और देखते ही देखते बड़ी भीड़ जमा हो गई।

स्थानीय लोगों ने तुरंत इसकी सूचना पुलिस को दी। सूचना पाते ही परसुडीह थाना पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और घर के अंदर छानबीन शुरू की। पुलिस ने नवजात के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है, ताकि मृत्यु के कारणों का पता लगाया जा सके।

यूएसए और चीन के बाद भारत एशिया की तीसरी प्रमुख सैन्य शक्ति बना

कमलेश पांडेय

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में भारत अब यूएसए और चीन के बाद एशिया की तीसरी प्रमुख सैन्य शक्ति बन चुका है। यह पाकिस्तान और बंगलादेश के लिए किसी सदमे की तरह है। वहीं उनके आका देश अमेरिका और चीन के लिए भी एक झटके की तरह है क्योंकि आने वाले वर्षों में इन्हें भी बारी-बारी पूर्वक पीछे छोड़ेगा। यह बात मैं नहीं बल्कि एशियन पॉवर इंडेक्स 2025 के8 एक वार्षिक सूची बोल रही है जो एशिया में देशों की समग्र शक्ति को मापती है।

गौरतलब है कि इसमें आर्थिक, सैन्य, कूटनीतिक प्रभाव आदि आठ कैटेगिरी में देशों के संसाधन और प्रभाव का मूल्यांकन किया जाता है। इस सूची में भारत 40.0 अंक के साथ तीसरे स्थान पर है और इसे ₹मेजर पावर₹ यानी प्रमुख शक्ति घोषित किया गया है। भारत ने जापान को पीछे छोड़ते हुए यह पायदान हासिल किया है, जबकि टॉप पर संयुक्त राज्य अमेरिका और दूसरे नंबर पर चीन हैं।

एपीआई के अनुसार, भारत की आर्थिक क्षमता, फ्यूचर रिसोर्सेज और राजनयिक प्रभाव में खासा सुधार हुआ है। भारत की सैन्य क्षमता में भी निरंतर सुधार के चलते उसकी क्षेत्रीय और ग्लोबल भूमिका मजबूत हुई है। वहीं, पाकिस्तान इस सूची में 16वें स्थान पर है और टॉप 10 में नहीं है। एशियाई पावर इंडेक्स लोवी इंस्टीट्यूट द्वारा जारी किया जाता है, जो एशिया-प्रशांत क्षेत्र के 27 देशों को देखता है और उनकी शक्ति संरचना का आकलन करता है। यह इंडेक्स सिर्फ सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं है बल्कि कुल प्रभाव क्षमता को मापता है, जिसमें अर्थव्यवस्था, कूटनीति, रक्षा नेटवर्क, संस्कृति आदि शामिल हैं।

लोवी इंस्टीट्यूट एशिया पावर इंडेक्स 2025 को मापने के लिए आठ मुख्य मापदंडों का उपयोग किया जाता है: सैन्य क्षमता, आर्थिक क्षमता, रक्षा नेटवर्क, कूटनीतिक प्रभाव, सांस्कृतिक प्रभाव, पुनःस्थापन क्षमता (रेजिलिएंस), भविष्य के संसाधन और अंतरराष्ट्रीय संबंध। कुल मिलाकर इसमें 30 उप-माप और 131 संकेतक शामिल हैं, जो किसी देश की व्यापक प्रभाव क्षमता का आंकलन करते हैं। यह इंडेक्स केवल सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह देशों की असली ताकत को उनके क्षेत्रीय और वैश्विक प्रभाव, पड़ोसी देशों के साथ उनके रिश्ते, तकनीकी और व्यापारिक शक्तियों, और उनके भविष्य के विकास की संभावनाओं के हिसाब से मापता है।

इस इंडेक्स के अंतर्गत हर देश को 100 अंकों के पैमाने पर स्कोर दिया जाता है, जो यह दर्शाता है कि वे एशिया में कितना प्रभावशाली हैं। लोवी इंस्टीट्यूट इस सूचकांक को एशिया-प्रशांत क्षेत्र के 27 देशों पर लागू करता है और यह वार्षिक रिपोर्ट के रूप में प्रकाशित होता है। इस इंडेक्स के परिणाम से देशों के भू-राजनीतिक और आर्थिक स्थिति में बदलाव और उनकी क्षेत्रीय भूमिका का पता चलता है।

एशियन पॉवर इंडेक्स (एपीआई) के आठ माप निम्नलिखित हैं: पहला, सैन्य क्षमता– इसमें देश की सैन्य ताकत, हथियार, सैन्य कर्मियों और रक्षा बजट को मापा जाता है। दूसरा, आर्थिक क्षमता– देश की आर्थिक स्थिति, जीडीपी, मुद्रा रिजर्व, और अन्य आर्थिक संसाधनों का आकलन। तीसरा, रक्षा नेटवर्क– क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय सैन्य गठबंधनों और सहयोग को मापा जाता है। चतुर्थ, कूटनीतिक प्रभाव– अन्य देशों के साथ राजनयिक संबंध, द्विपक्षीय समझौते और वैश्विक मंच पर देश की भूमिका ।पंचम, सांस्कृतिक प्रभाव– देश की संस्कृति, भाषा, मीडिया प्रसारण और अन्य सांस्कृतिक माध्यमों के प्रभाव को दिखाता है। षष्टम, पुनःस्थापन क्षमता– प्राकृतिक आपदाओं, आर्थिक संकटों आदि का सामना करने की देश की सामर्थ्य। सप्तम, भविष्य के संसाधन– शैक्षणिक गुणवत्ता, अनुसंधान-प्रौद्योगिकी विकास और युवा आबादी की संभावना। अष्टम, अंतरराष्ट्रीय संबंध– देश की विदेश नीति, व्यापार साझेदार और वैश्विक संगठनों में उसकी भागीदारी।

वस्तुतः ये आठ माप 30 उप-मापों और 131 संकेतकों के जरिए विस्तृत रूप से मूल्यांकन किए जाते हैं, जिससे किसी देश की समग्र शक्ति का आंकलन होता है।

एसआईआर: भय मुक्त माहौल दे चुनाव आयोग

धीतेन्द्र कुमार शर्मा

देश के राजस्थान समेत 12 राज्यों में चल रहे मतदाता सूचियों (तकरीबन 51 करोड़ मतदाताओं) के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) पर विवाद मौन होने का नाम ही नहीं ले रहे। विपक्षी दल पहले ही इसे विरोधी मतदाताओं के नाम काटने की साजिश का अभियान बता रहे थे। अब एसआईआर में लगे कुछ कार्मिकों की मौतों से जानलेवा दबाव जैसी धारणाएं बलवती हो रही हैं। मीडिया रिपोर्ताज के मुताबिक बीते 22 दिनों में देश के इन बारह राज्यों में दो दर्जन से ज्यादा बूथ लेवल ऑफिसर्स(बीएलओ) की मौत हो गई है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का तो राजनीतिक दावा है कि अकेले उनके राज्य में 34 से अधिक मौत हो चुकी है। विपक्षी दलों का कहना है कि एसआईआर में दबाव और तनाव में ये जानें जा रही हैं। जबकि चुनाव आयोग ने पिछले दिनों की प्रेस कॉन्फ्रेंस में तब तक हुई ऐसी 15 मौतों को एसआईआर से जोडने से इनकार किया था। आयोग के मुताबिक इन मौतों के पीछे बीमारी और अन्य घरेलू परिस्थितियां कारण रही हैं।

विपक्ष एसआईआर को लेकर शुरू से हमलावर रहा है। लिहाजा उसके दावों को राजनीतिक स्टंट कहा जा सकता है लेकिन मौतें हो रही हैं और ये लोग एसआईआर कार्यक्रम में लगे हुए हैं, क्या इस तथ्य को झुठलाया जा सकता है? तब फौरा वक्तव्य देने और विपक्ष की ओर से मुद्दा न बने, सिर्फ इसलिए इससे पल्ला झाड़ लेना क्या उचित आचरण है? क्या सरकार और चुनाव आयोग की जिम्मेदारी नहीं बनती कि तत्काल अपनी मशीनरी को अन्दरूनी तौर पर चैक करे। पता लगाएं कि किस तरह का बर्ताव जिला निर्वाचन और इससे ऊपर के अधिकारी इन निचले कार्मिकों के साथ कर रहे हैं, खासकर समय सीमा के बारे में? कहीं दि-ब-दिन की प्रगति रिपोर्ट में तो जमीनी अधिकारियों और कार्मिकों का वक्त जाया नहीं हो रहा? और, फिर उन्हें इसकी भरपाई करना मुश्किल हो रहा हो? तकनीकी सहायक और अनिवार्य ढांचागत सुविधाएं भी पर्याप्त हैं या नहीं?

यह सही है और छिपा नहीं कि चुनावी दफ्तरों और सेक्टर कार्यालयों में इन दिनों सुबह सात-साढ़े बजे से रात 9-9.30 बजे तक गहमागहमी है। जाहिर है, इनमें वृहद स्तर पर काम चल रहा है। लगातार फील्ड में और सुबह जल्दी से देर रात तक कितने दिनों काम संभव है क्या यह सोचा गया? और, इन परिस्थितियों में कार्मिकों के परिवार कैसे जीवनयापन कर रहे? किसे घर में कौनसी आपात स्थिति आई और वो परिवार को समय नहीं दे पाया? क्या इन सब हालात में उपजे तनाव में एसआईआर की भूमिका नहीं? आयोग को खुले दिल से, बिना किसी पूर्वाग्रह के, हालात की समीक्षा और जांच करनी होगी। खासकर हार्टअटैक और आत्महत्याओं के प्रकरणों की।

राज्य निर्वाचन अधिकारियों और जिला निर्वाचन अधिकारियों को सख्त हिदायत देनी होगी कि निचले कार्मिकों को बिना उनकी परिस्थिति जाने नौकरी खोने का भय नहीं दिखाएं। एक आम शिकायत त्वरित काम के लिए कार्मिकों से अभद्रता से पेश आने की भी आ रही है। ₹नहीं होता तो घर बैठो₹ जैसे जुमले आम हो चले। ₹चार्जशीट₹ और ₹अनुशासनिक कार्रवाई₹ की धमकियां भी आम हैं। ऐसे में कार्मिकों का तनाव में स्वाभाविक है। आयोग इन सब पहलुओं पर गंभीरता से विचार करे। और जल्द ऐसे उपाय अपनाए जिससे भयाक्रांत माहौल दूर हो। बीएलओ और सुपरवाइजर स्तर पर खौफ पैदा करने के बजाय इन्हें फ्री हैंड दें। अगर तकनीकी दिक्कतें पेश आ रही हैं तो अवधि बढ़ाने जैसे विकल्प अपनाने में शर्मिन्दगी कैसी! आखिर यहां इस महाभियान में लगे लाखों कार्मिकों के जीवन का सवाल है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

अब सिम के बिना नहीं चलेगा वॉट्सऐप और टेलीग्राम, सरकार की नई गाइडलाइन लागू, साइबर ठगी रोकने केंद्र सरकार का बड़ा फैसला - अब अनिवार्य होगी 'SIM Binding' प्रक्रिया

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्र सरकार ने देश में बढ़ते साइबर अपराध और फर्जी खातों पर लगाम लगाने के लिए बड़ा कदम उठाया है। अब वॉट्सऐप, टेलीग्राम और अन्य मैसेजिंग ऐप्स को अनिवार्य सिम बाइंडिंग (Mandatory SIM Binding) लागू करनी होगी। साथ ही, वेब और डेस्कटॉप वर्जन का उपयोग करने वाले यूजर्स को हर 6 घंटे में स्वतः लॉग-आउट किया जाएगा।

क्या है नया नियम सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार अब प्रत्येक यूजर का मैसेजिंग अकाउंट उसके भौतिक सिम कार्ड (Physical SIM) से स्थायी रूप से जुड़ा रहेगा। यानी यदि कोई व्यक्ति आपके रजिस्टर्ड सिम के बिना किसी दूसरे डिवाइस से वॉट्सऐप या टेलीग्राम अकाउंट को एक्सेस करने की कोशिश करेगा, तो यह प्रक्रिया असंभव हो जाएगी।

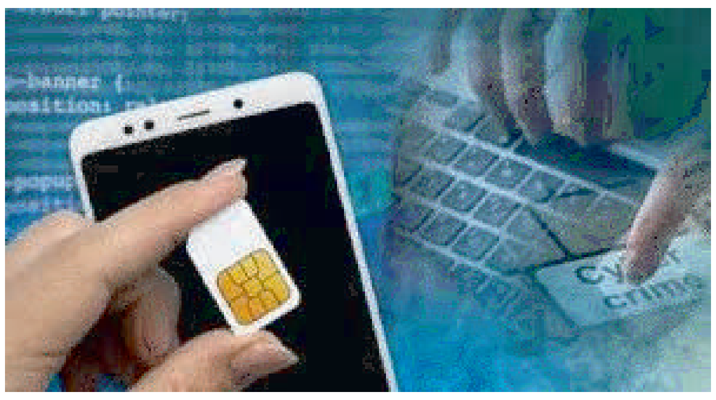

सिम बाइंडिंग क्यों जरूरी अब तक वॉट्सऐप और टेलीग्राम जैसे ऐप्स केवल एक ओटीपी वेरिफिकेशन के आधार पर चलते थे। इससे सिम कार्ड बदलने, क्लोनिंग या नंबर हैकिंग की स्थिति में अकाउंट के दुरुपयोग की संभावना बनी रहती थी।

नई व्यवस्था से यूजर की पहचान और प्रामाणिकता सुनिश्चित होगी, जिससे फर्जी अकाउंट, साइबर ठगी और अनधिकृत गतिविधियों पर रोक लगाई जा सकेगी।

वेब और डेस्कटॉप यूजर्स पर असर नई गाइडलाइन के अनुसार, अब कोई भी यूजर छह घंटे से अधिक समय तक लगातार वेब या डेस्कटॉप वर्जन पर लॉग-इन नहीं रह सकेगा। हर छह घंटे बाद यूजर को स्वचालित रूप से लॉग-आउट कर दिया जाएगा।

दोबारा लॉग-इन करने के लिए यूजर को क्यूआर कोड स्कैन करना होगा या पासवर्ड डालना पड़ेगा।

इस कदम का उद्देश्य किसी अनधिकृत कंप्यूटर या नेटवर्क पर लंबे समय तक अकाउंट के सक्रिय रहने को रोकना है, जिससे डेटा चोरी या हैकिंग की घटनाएं घटेंगी।

वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों के अनुसार, यह कदम देश के डिजिटल सुरक्षा ढांचे को मजबूत करने और नागरिकों को साइबर अपराधों से बचाने के लिए उठाया गया है। सिम बाइंडिंग जैसी तकनीक फर्जी पहचान और ऑनलाइन ठगी के मामलों को कम करने में मदद करेगी।

आम यूजर्स पर असर नया सिम या मोबाइल बदलने पर वेरिफिकेशन प्रक्रिया और सख्त होगी। एक ही अकाउंट को कई डिवाइस पर चलाना कठिन होगा। सुरक्षा बढ़ेगी, लेकिन यूजर्स को बार-बार लॉग-इन करना पड़ सकता है।

"सरकार का यह फैसला डिजिटल भारत को सुरक्षित और पारदर्शी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। अब वॉट्सऐप या टेलीग्राम जैसे प्लेटफॉर्म फॉर्म पर खाता चलाने के लिए सक्रिय सिम लिंकिंग जरूरी होगी।"

अडानी कोल ब्लॉक प्रभावितों पर फर्जी मुकदमे दर्ज करना बंद करें सरकार, अखिलेश शाह पर की गई जिला बदर कार्रवाई के विरोध में प्रतिनिधिमंडल जाएगा सिंगरौली

परिवहन विशेष न्यूज

भोपाल। सिंगरौली जिले के घिरोली ब्लॉक में अडानी को कोल ब्लॉक आबंटित किए जाने का विरोध कर रहे, बासी बरदह गांव के अखिलेश शाह को पुलिस द्वारा हिरासत में लेकर मारपीट करने तथा लंघाडोल थाना ले जाकर खाली कागज़ों पर जबरदस्ती हस्ताक्षर कराए जाने की संयुक्त किसान मोर्चा, मध्यप्रदेश ने कड़ी निंदा की है। इस अवैध गिरफ्तारी के समय जब अखिलेश शाह ने यह पूछा कि उनकी गिरफ्तारी कौन से केस में हैं?, तब उन्हें कहा गया कि न्यायालय में जब पेश करेंगे तब देख लेना। तुम्हारे खिलाफ जिला बदर की कार्यवाही की जा रही है।

संयुक्त किसान मोर्चा ने कहा है कि यह वह इलाका है, जहां पुलिस प्रशासन द्वारा पहले भी अडानी कोल ब्लॉक प्रभावितों पर फर्जी मुकदमे दर्ज किए गए हैं, ग्रामीणों को नजर बंद कर जबरदस्ती लाखों पेड़ काटे जा रहे हैं। विस्थापित किसान और उनके संगठन जब इसका विरोध करते हैं, लोकतांत्रिक तरीके से अपनी आपत्ति और असहमति दर्ज कराते है, तो उन्हें इस तरह से आतंकित किया जाता है। संयुक्त किसान मोर्चा ने मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री से आदिवासियों पर दमन बंद करने, फर्जी मुकदमे रद्द करने तथा अडानी कोल ब्लॉक आवंटन रद्द करने की मांग की है। किसान मोर्चा ने जानकारी दी है कि उसका एक प्रतिनिधिमंडल अविलंब बासी बैरदह गांव एवं इलाके में जाकर प्रभावित आदिवासियों से मुलाकात करेगा तथा सिंगरौली में पुलिस अधिकारियों से बात करेगा।

संयुक्त किसान मोर्चा द्वारा जारी

बाजार खुलने के पहले दिन अनाज का व्यापार बिल्कुल नहीं हुआ

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: पहले दिन ज़ीरो धान की खरीद। ओडिशा के इतिहास में एक अनोखा रिकॉर्ड। मंडी खुलने के पहले दिन धान की कोई खरीद या बिक्री नहीं हुई। पहले दिन से ही मंडी में कामकाज ठप रहा। पिछले सालों में पहले दिन लाखों बोरी धान खरीदा जाता था। लेकिन इस साल किसानों ने एक भी बोरी धान नहीं बेचा है।इस बीच, जिला प्रशासन और किसानों के बीच टकराव चल रहा है। संबलपुर के किसानों ने चेतावनी दी है कि अगर आज सुबह 11 बजे तक हालात नहीं सुधरे तो वे आर्थिक नाकेबंदी का सामना करेंगे। इस बीच, जिला प्रशासन के साथ लंबी मीटिंग के बाद भी मिलर एग्रीमेंट पर साइन नहीं कर रहा है। हैरानी की बात है कि इस सारी परेशानी के बीच धान की खरीद रुकी हुई है, और मंत्री का कहना है कि सब कुछ ठीक चल रहा है।

इस बीच, कल विधानसभा में सत्ताधारी और विपक्षी पार्टियों के बीच इस मुद्दे पर बहस हुई। लंबे इंतजार के बाद बरगढ़ और संबलपुर में बाजार खुल गए हैं। हालांकि, बरगढ़ जिले में अभी तक किसानों को उनके टोकन नहीं मिले हैं। इस बीच, संबलपुर में मिलर के साथ कोई समझौता नहीं हुआ है। ऐसे में किसान धान बेचने को लेकर असमंजस में हैं। इस बीच, विधानसभा में सत्ताधारी और विपक्षी पार्टियों के बीच बाजार के मुद्दे पर बहस हुई।

बीबी कौलां जी चैरिटेबल अस्पताल का 21वां वार्षिक समारोह

अमृतसर इंप्रूवमेंट ट्रस्ट के चेयरमैन करमजीत सिंह रिंटू ने कार्यक्रम में की विशेष उपस्थिति

अमृतसर, 29 नवंबर (साहिल बेरी)

बीबी कौलां जी चैरिटेबल अस्पताल की ओर से भाई गुरइकबाल सिंह जी और भाई हरविंदरपाल सिंह लिटिल जी द्वारा इस वर्ष 21वां वार्षिक समारोह और 350वीं शहीदी शताब्दी को समर्पित विशेष राग दरबार बड़े श्रद्धा और आध्यात्मिक उत्साह के साथ मनाया गया। यह चार दिनों तक चलने वाले कार्यक्रमों की तीसरी कड़ी थी, जो आज राग दरबार के रूप में आयोजित की गई।

इस अवसर पर भाई हरविंदरपाल सिंह लिटिल ने बताया कि राग दरबार की विशेषता केवल बड़ी संख्या में संगत की मौजूदगी ही नहीं, बल्कि प्रसिद्ध रागियों की विशेष भागीदारी भी रही। इस मौके पर अमृतसर इंप्रूवमेंट ट्रस्ट के चेयरमैन श्री करमजीत सिंह रिंटू भी विशेष रूप से पहुंचे और संगत का उत्साह बढ़ाया।

आज के दरबार की शुरुआत हजूरी रागी भाई जगरूप सिंह जी (श्री दरबार साहिब, अमृतसर) के मधुर रागों से हुई, जिन्होंने संगत को निहाल किया। इसके बाद भाई गुरमीत सिंह शांत—जिन्हें दिल्ली कमेटी द्वारा "श्रोमणि रागी" सम्मान प्राप्त है—ने भी कीर्तन द्वारा आध्यात्मिक वातावरण को और अधिक पवित्र बना दिया। प्रसिद्ध रागियों समेत भारी संख्या में संगत ने दरबार में हाजिरी भरी।

भाई हरविंदरपाल सिंह लिटिल ने संगतों और रागियों का विशेष धन्यवाद करते हुए बताया कि कल चौथा और अंतिम कार्यक्रम गुरुद्वारा गुरु के महल में शाम 4 बजे से रात 12 बजे तक सजाया जाएगा। उन्होंने आसपास के शहरों, कस्बों और गांवों की संगत से अपील की कि वे बड़ी संख्या में पहुंचकर गुरु घर की खुशियां प्राप्त करें।

समारोह में श्रोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और श्री दरबार साहिब के मैनेजर साहिबान का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। मौके पर गुरप्रीत सिंह चाहत, दलबीर सिंह, सतविंदर पाल सिंह, टहलिंदर सिंह, कवलजीत सिंह भाटिया, सुरिंदरपाल सिंह, हरिंदर सिंह, भूपिंदर सिंह, गुरपाल सिंह, रणजीत सिंह गोल्डी सहित बड़ी संख्या में संगत उपस्थित रही।

प्रदीप माझी ने दीवार कूद कर गंभीर रूप से बीमार छात्र को बचाया: उसे बिना इलाज के 9 दिनों तक हॉस्टल में बंद रखा गया था

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: पिछले 20 तारीख को, नबरंगपुर जिले के कोसागुमुडा ब्लॉक के कोकाडी में सेमला आश्रम विद्यालय हॉस्टल के किचन में प्रेशर कुकर फट गया, जिससे सातवीं क्लास के स्टूडेंट धनेश्वर भात्रा के चेहरे पर चोटें आईं। स्कूल और हॉस्टल अथॉरिटीज़ ने उसे हॉस्पिटल ले जाए बिना 9 दिनों तक हॉस्टल में बंद रखा।हालांकि, शुक्रवार को किसी सोर्स से जानकारी मिलने के बाद नबरंगपुर के पूर्व MP और BJD के सीनियर जनरल सेक्रेटरी प्रदीप माझी हॉस्टल की दीवार फांदकर उसे बचाने पहुंचे। वे रात 10 बजे डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के रेजिडेंशियल ऑफिस भी आए और स्टूडेंट को डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट को सौंप दिया। प्रदीप ने पूछा कि जब हॉस्टल का मैनेजमेंट पब्लिक एजुकेशन डिपार्टमेंट, स्कूल और वेलफेयर डिपार्टमेंट करते हैं, तो किसी अधिकारी को इस बारे में कैसे पता नहीं चला। प्रदीप ने सीधे उनसे कहा कि डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट भी बराबर के जिम्मेदार हैं। प्रदीप ने कहा कि स्टूडेंट को 9 दिनों तक बिना इलाज के रखा गया और जान से मारने की कोशिश की गई। उन्होंने कहा कि अगर धनेश्वर को कोई नुकसान हुआ तो जिले में आंदोलन होगा। उन्होंने यह भी कहा कि वे इसके लिए घटनास्थल पर मौजूद डिस्ट्रिक्ट वेलफेयर ऑफिसर पलाका रवींद्र को जिम्मेदार ठहराएंगे और अगर धनेश्वर को कोई नुकसान हुआ तो वे गोली चलाएंगे। हालांकि, वेलफेयर ऑफिसर ने कहा कि प्रिंसिपल को अभी तक इस घटना की जानकारी नहीं है। इस बारे में डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट महेश्वर स्वैन ने कहा कि घटना की सूचना मिलने के बाद DEO और डिस्ट्रिक्ट वेलफेयर ऑफिसर को बुलाया गया है। घटना की जांच की जाएगी। स्टूडेंट किन हालात में किचन में गया और हेडमास्टर ने उसे क्यों नहीं बताया, इस पर एक्शन लिया जाएगा। एडिशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट बिस्वजीत बर्मन ने स्टूडेंट को इलाज के लिए डिस्ट्रिक्ट हेडक्वार्टर हॉस्पिटल में भर्ती कराया है। मौके पर DEO छत्रपति साहू, साइंस इंस्पेक्टर चित्तरंजन पटनायक, पुलिस SI साबिर अहमद, ASI तुलसीराम पुजारी, शिवशंकर स्वैन, BJD नगर प्रेसिडेंट प्रमोद रथ, सूर्यकांत लेंका, संजय नायक, कुना पाढ़ी, सनुज त्रिपाठी, राम महापात्रा, सुभ्रांशु त्रिपाठी खास तौर पर मौजूद थे।

झारखंड के नौ सिनियर डीएसपी के सर पर होगा आईपीएस का ताज

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड पुलिस सेवा के नौ सीनियर डीएसपी को आईपीएस रैंक में प्रोन्नति मिली है. गृह कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा जल्द की अधिकारियों के प्रोन्नति से संबंधित आदेश जारी कर दिया जायेगा. जानकारी के मुताबिक, जिन सीनियर डीएसपी को आईपीएस रैंक में प्रोन्नति मिली है, उसमें श्रीराम समद, रोशन गुड़िया, अविनाश कुमार, राजेश कुमार, मजरूल होदा, दीपक कुमार-एक को आईपीएस में प्रोन्नति दी गयी है. वहीं जेपीएससी दो बैच के राधाकृष्ण किशोर, मुकेश महतो और शुवेंदु को कंडिशनल प्रोन्नति मिली है. उल्लेखनीय है कि झारखंड पुलिस में एसपी रैंक के अधिकारियों की संख्या में जल्द ही बढ़ोतरी होने वाली है. वर्तमान में 2012 से लेकर 2021 बैच तक एसपी रैंक के आईपीएस अधिकारियों की वर्तमान संख्या 71 है, जिनमें से 10 अधिकारी केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर हैं. झारखंड पुलिस सेवा के नौ डीएसपी को आईपीएस रैंक में प्रोन्नति मिलने के बाद झारखंड पुलिस में एसपी रैंक के आईपीएस अधिकारियों की संख्या बढ़कर 80 हो जाएगी. हालांकि, जनवरी 2026 में 2012 बैच के चार आईपीएस अधिकारी डीआईजी रैंक में प्रोन्नत हो जाएंगे. इसके फलस्वरूप, वर्ष 2026 से झारखंड में एसपी रैंक के आईपीएस अधिकारियों की संख्या 76 रहेगी. झारखंड पुलिस सेवा में जल्द ही एक बड़ा संगठनात्मक और पदोन्नति संबंधी फेरबदल होने वाला है. राज्य में न केवल एसपी रैंक के आईपीएस अधिकारियों की संख्या में वृद्धि होगी, बल्कि विभिन्न स्तरों पर कुल 16 आईपीएस अधिकारियों को पदोन्नति दी जाएगी, जिसमें एडीजी, आईजी, डीआईजी और एसपी से सेलेक्शन ग्रेड तक की पदोन्नतियां दी जयेगी.

एनसीसी अमृतसर ग्रुप के कैडेटों द्वारा गांवों में जागरूकता फैलाने के लिए वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम आयोजित

अमृतसर, 29 नवंबर (साहिल बेरी)

9 पंजाब बटालियन एनसीसी, अमृतसर ग्रुप एनसीसी के तहत बॉर्डर गांव नौशहरा डल्ला, जिला तरनतारन (जो अंतरराष्ट्रीय सीमा से मात्र 1.5 किमी दूरी पर स्थित है) में वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। तरनतारन के डिप्टी कमिश्नर के सहयोग से किए गए इस प्रयास का मुख्य उद्देश्य गांवों को सशक्त बनाना, स्वास्थ्य जागरूकता फैलाना और स्थानीय निवासियों में राष्ट्रीय मूल्यों को मजबूत करना था। इस कार्यक्रम में एनसीसी कैडेटों, मेडिकल विशेषज्ञों, गांव प्रतिनिधियों और ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर इसे सामुदायिक उत्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बनाया।

कार्यक्रम की शुरुआत एंटी-ड्रग जागरूकता रैली से हुई, जिसकी अगुवाई एनसीसी कैडेटों ने की और नशा विरोधी संदेश को प्रभावशाली ढंग से प्रसारित किया। इसके बाद सीएचसी कसेल के डॉ. अजय पाल द्वारा "युद्ध नशे के खिलाफ" विषय पर जागरूकतापूर्ण व्याख्यान दिया गया। उन्होंने युवाओं और ग्रामीणों को नशे की बुराई के विरुद्ध एकजुट होकर खड़े होने के लिए प्रेरित किया। मेडिकल इमरजेंसी के दौरान फर्स्ट एड पर एक व्यावहारिक और ज्ञानवर्धक सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें ग्रामीणों और छात्रों को जीवन रक्षक कौशलों की महत्वपूर्ण जानकारी दी गई।

मेडिकल आउटरिच के तहत डॉ. अजय पाल और डॉ. शरणजीत सिंह (सीएचसी कसेल) ने विस्तृत स्वास्थ्य जांच की तथा डॉ. जसप्रीत कौर द्वारा दंत जांच की गई। सभी लाभार्थियों को मुफ्त दवाइयां प्रदान की गईं, जिससे ग्रामीणों के लिए स्वास्थ्य सुविधाएं और भी सुलभ बनीं।

इस अवसर को और विशेष बनाते हुए एनसीसी कैडेटों ने एनसीसी दिवस के उपलक्ष्य में प्रेरणादायक भाषण दिए। इन भाषणों में एनसीसी के राष्ट्र-निर्माण में योगदान और युवाओं को समाज सेवा में सक्रिय भूमिका निभाने के संदेश पर जोर दिया गया। कार्यक्रम का समापन रिफ्रेशमेंट वितरण और समूह फोटो सत्र के साथ हुआ, जिसने एकता और उत्साह का सुंदर वातावरण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में सरकारी गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, छब्बाल के सभी स्टाफ, सीटीओ और 40 कैडेट, 03 डॉक्टर, 01 फार्मेसी अधिकारी, 02 सहायक (सीएचसी कसेल), सरपंच श्री जगजीत सिंह, 79 ग्रामीण तथा 52 विद्यार्थियों ने भाग लिया। उनकी सक्रिय भागीदारी इस बात का प्रमाण है कि समुदाय इस प्रकार के जागरूकता और विकास कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहता है।

इस वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम के माध्यम से सभी प्रतिभागियों ने जिम्मेदार नागरिकता को बढ़ावा देने, जन स्वास्थ्य को मजबूत करने और गांवों को नई ऊर्जा देने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की। नौशहरा डल्ला के ग्रामीणों द्वारा दी गई सकारात्मक प्रतिक्रिया सामूहिक सहयोग की मजबूत भावना और नशा-मुक्त, स्वस्थ एवं प्रगतिशील राष्ट्र निर्माण की दिशा में उठाए जा रहे कदमों का स्पष्ट उदाहरण है।

टाटानगर स्टेशन से सत्रह किलों अवैध मादक पदार्थ बरामद

ओडिशा से बिहार का डाल्टनगंज जा रहा था साढ़े आठ लाख रू0 का गांजा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

जमशेदपुर। चक्रधरपुर रेल मंडल अंतर्गत आरपीएफ उड़नदस्ता दल चक्रधरपुर मंडल और जीआरपी टाटानगर की संयुक्त कार्रवाई में रविवार को टाटानगर रेलवे स्टेशन से एक बड़े गांजा तस्कर को गिरफ्तार किया गया. टीम ने आरोपी के पास से 17 किलो अवैध गांजा बरामद किया है. गिरफ्तार युवक की पहचान उदय कुमार उर्फ मंटू, निवासी हरिहरगंज, पलामू (झारखंड) के रूप में हुई है.जानकारी के अनुसार, पुलिस को गोपनीय सूचना मिली थी कि उड़ीसा के जरपाड़ा रेलवे स्टेशन से अवैध गांजे की एक बड़ी खेप टाटानगर पहुंचने वाली है. इस सूचना के आधार पर आरपीएफ उड़नदस्ता दल और जीआरपी टाटानगर की टीम ने संयुक्त रूप से स्टेशन परिसर में विशेष निगरानी अभियान चलाया. इसी दौरान संदिग्ध व्यक्ति को पकड़कर पूछताछ की गई. तलाशी में उसके बैग से 17 किलो गांजा बरामद हुआ. पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वह यह गांजा उड़ीसा से लेकर आया था और यहां से बस के रास्ते डाल्टनगंज पहुंचाने वाला था. पुलिस के अनुसार, यह कार्रवाई पुलिस उपाधीक्षक (मुख्यालय), रेल जमशेदपुर के नेतृत्व में की गई. टीम में आरपीएफ और जीआरपी के कई अधिकारी और जवान शामिल थे. फिलहाल आरोपी से पूछताछ जारी है और पुलिस यह पता लगाने की कोशिश में है कि इस खेप को डाल्टनगंज में किसे सप्लाई किया जाना था तथा इसके पीछे और कौन-कौन से लोग शामिल हैं. पुलिस ने कहा कि अवैध मादक पदार्थों के खिलाफ अभियान आगे भी जारी रहेगा.

6 नए शहरों में चलेंगी EV बसें

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: आने वाले दिनों में 6 नए शहरों में EV बसें चलाई जाएंगी। इसकी जानकारी गृह और शहरी विकास मंत्री कृष्ण चंद्र महापात्र ने दी है। अभी राज्य में 670 बसें चल रही हैं, जिनमें से 220 EV बसें होंगी। अभी 113 रूट पर 1399 km बसें चल रही हैं। भविष्य में जहां भी ज़रूरत होगी, उन शहरों में बसें चलाई जाएंगी।ऑनलाइन टिकटों पर डिस्काउंट के कारण टिकट कलेक्शन की रकम में 35% की बढ़ोतरी हुई है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023